सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 51, नई दिल्ली । गुरवार, 01 मई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 : दिल्ली वालों को मई में राशन मिलेगा या नहीं? सामने आई बड़ी वजह

06 बीमारियों के आगे हारती दवाइयां

08 अक्षय तृतीया पर नये रथ का निर्माण शुभारंभ

सुनहरा अवसर सम्मान प्राप्त करने के लिए गूगल फार्म भरे और पाए भारत के पहले परिवहन क्षेत्र के समाचार पत्र "परिवहन विशेष" से सम्मान

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfuZ3djD-SaHn5EjDHDvY23xfor75p0gT60_8pwdDxeuFEiqA/viewform

Eligibility for Honour

If you are currently working or have previously worked in public interest in the fields such as Transport, Road Safety, Pollution Control, Women's Safety or other related domains, you are eligible to apply for recognition at the second award ceremony organized by PARIVAHAN VISHESH,a Hindi Daily Newspaper... Kindly Introduce yourself, your work style, area of expertise, and explain why you are eligible to receive this honour.

transportvisheshcontent@gmail.com Switch account

The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form

* Indicates required question

Email *

Your email

Official Category *

(Please select the most appropriate category for you nomination)

- Name
- Institution
- Trust
- Other:

Full Name / Institution Name

(As you would like it to appear on the honour)

Your answer

Honours Categories *

- Transportation
- Women's Safety
- Road safety
- Pollution control
- Poet
- Poetess
- Writer/Author
- Electric Vehicle Manufacturer
- Safety Controlled Equipment Manufacturer
- Authorised Vehicle Scrap Dealer
- Militancy Security Awareness
- Journalist
- Anchor
- Social Worker
- Best Education Reformer
- Astrologer/Numerologist/Vastu/Reiki Expert
- Yoga Expert
- Ayurveda Expert
- Technology Reformer
- Management Reformer
- Other:
- Local Stage Carrier Operator
- Best Tourist Car Operator
- Best Logistics Service Provider
- Best Welfare Association for Drivers
- Best Welfare Association for Transporters
- Best Welfare Association for Cargo Transportation
- N. A. (If you are applying under another category)
- Other:

Identity Card (Aadhaar No. Or Registration Number) *

(For verification purposes only)

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

Specific Transport Honours Categories

- Best School Transportation Provider
- Best Employee Transportation Provider
- Best Tourist Operator
- Best Intercity/Delhi Service Operator
- Transport Policy Expert
- Best Public-Private Partnership (PPP) Model

Evidence of Eligibility *

(Evidence to prove the criteria you are applying)

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

Suggestions :- *

- Please Double Check your entries
- Upload all required files
- Submit before the deadline (5th May 2025)

- Upload all required files
- Submit before the deadline (5th May 2025)

Submit

Never submit passwords through Google Forms.

सड़क परिवहन एवम्राजमार्ग मंत्रालय द्वारा एआईटीपी के तहत चलने वाले वाहनों के प्रति सूचना जारी कर एनआईसी को परिवहन पोर्टल पर सीमा कर एकत्र करने की लिए सीमा चेक पोस्ट मॉड्यूल को अक्षम करके एआईटीपी प्रणाली को मजबूत करने के सम्बन्ध में दिए निर्देश

संजय बाटला

नं.आरटी-11036/45/2025-एमवीएल, भारत सरकार, दिनांक 25 अप्रैल, 2025

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (एमवीएल अनुभाग) परिवहन भवन, 1, संसद मार्ग, नई दिल्ली - 110001.

श्री जॉयदीप शोम,

उप महानिदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एनआईसी, एनआईसी बिल्डिंग, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003

विषयः एआईटीपी के तहत चलने वाले वाहनों से परिवहन पोर्टल पर सीमा कर एकत्र करने के लिए सीमा चेक पोस्ट मॉड्यूल को अक्षम करके एआईटीपी प्रणाली को मजबूत करना - के संबंध में।

महोदय,

मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि मंत्रालय ने पूरे भारत में पर्यटक वाहनों की निर्बाध आवाजाही को सुगम बनाने के लिए मोटर वाहन (पर्यटक परिवहन संचालकों के लिए अखिल भारतीय परमिट) नियम, 1993 के स्थान पर 10 मार्च, 2021 को जीएसआर 166 (ई) के माध्यम से अखिल भारतीय पर्यटक वाहन (प्राधिकरण या परमिट) नियम, 2021 को अधिसूचित किया है। इसके बाद, मंत्रालय ने 18 अप्रैल 2023 को जीएसआर 302 (ई) के माध्यम से अखिल भारतीय पर्यटक वाहन (प्राधिकरण या परमिट) नियम, 2023 को अधिसूचित किया, जिसने अखिल भारतीय पर्यटक वाहन (प्राधिकरण या परमिट) नियम, 2021 को प्रतिस्थापित कर दिया।

1. एआईटीपी नियम, 2023 के तहत पर्यटक वाहनों को दिया जाने वाला परमिट एक अनुबंध गाड़ी परमिट है।

2. अखिल भारतीय पर्यटक वाहन (परमिट) नियम, 2023 के नियम 5 की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है, जिसमें प्रावधान है कि इन नियमों के तहत अखिल भारतीय पर्यटक परमिट के लिए आवेदन के साथ एकत्रित शुल्क राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बीच वितरित किया जाएगा। इस प्रकार एकत्रित शुल्क एक कैलेंडर माह पूरा होने पर राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बीच वितरित किया जा रहा है।

3. हालाँकि, मंत्रालय को विभिन्न अभ्यावेदन प्राप्त हुए हैं कि कुछ राज्य/संघ राज्य क्षेत्र अभी भी अखिल भारतीय पर्यटक वाहन (परमिट) नियम, 2023 के तहत चलने वाले पर्यटक वाहनों से यात्री कर/सीमा कर/चेक पोस्ट कर आदि के रूप में कर लगा रहे हैं।

4. मंत्रालय में इस मामले की जांच की गई है और यह निर्णय लिया गया है कि एआईटीपी शुल्क के तहत चलने वाले वाहनों से सीमा कर वसूलने के लिए सीमा चेक पोस्ट मॉड्यूल को निष्क्रिय कर दिया जाए।

5. इसे सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जा रहा है।

आपका विश्वासी,

(अंकित दुगर)

निदेशक (एमवीएल)

दूरभाष. नं.- 011-23718575

ईमेल- ankit.dugar1986@gov.in

No.RT-11036/45/2025-MVL
Government of India
Ministry of Road Transport & Highways
(MVL Section)
Transport Bhawan, 1, Parliament Street, New Delhi - 110001

Dated the 25th April, 2025

To,

Shri Joydeep Shome,
Dy. Director General & HoG, NIC,
NIC Building, CGO Complex, Lodhi Road,
New Delhi-110003

Subject: Strengthening of AITP System by disabling border check post module for collecting border tax on Parivahan Portal from Vehicles plying under AITP - reg.

Sir,

I am directed to say that Ministry notified All India Tourist Vehicles (Authorisation or Permit) Rules, 2021 vide GSR 166 (E) dated the 10th March, 2021, in supersession of the Motor Vehicles (All India Permit for Tourist Transport Operators) Rules, 1993, to facilitate seamless movement of Tourist Vehicles throughout the territory of India. Subsequently, Ministry notified All India Tourist Vehicles (Permit) Rules, 2023 vide GSR 302(E) dated 18th April 2023 which superseded the All India Tourist Vehicles (Authorisation or Permit) Rules, 2021. The permit granted to tourist vehicles under AITP Rules, 2023, is a contract carriage permit.

2. Attention is invited to Rule 5 of the All India Tourist Vehicles (Permit) Rules, 2023 which provides that the fee collected with the application for the All India Tourist Permit under these rules shall be distributed among the States and Union territories. The fee so collected is being disbursed among the States and Union territories on completion of a calendar month.

3. However, Ministry is in receipt of various representations that some States/UTs are still levying taxes in the form of passenger tax/border tax/check post tax etc., from the tourist vehicles plying under All India Tourist Vehicles (Permit) Rules, 2023.

4. The matter has been examined in the Ministry and it has been decided that the border check post module be disabled for collecting border tax from vehicles plying under the strength of AITP Fee.

5. This issues with the approval of Competent Authority.

Yours faithfully,

25/4/25

(Ankit Dugar)
Director (MVL)
Tel.No.- 011-23718575
E-mail- ankit.dugar1986@gov.in

दिल्ली जाने वाली बीएस-4 गाड़ियों को बीएस-6 में रहे बदल

परिवहन विशेष न्यूज

सोनीपत। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बीएस-4 मानक के डीजल वाहन दौड़ाने पर पूर्ण पाबंदी लग चुकी है। हरियाणा से दिल्ली में किलोमीटर स्कीम के तहत बसों का प्रवेश नहीं हो रहा है। दिल्ली में किलोमीटर स्कीम के तहत बीएस-4 मानक की बसों का संचालन नहीं होने से हरियाणा रोडवेज प्रशासन को नुकसान हो रहा है। सरकार के आदेश पर बस मालिकों की ओर से बसों को बीएस-6 मानक में बदला जा रहा है। अब तक 10 बसों को बदला जा चुका है।

जिले में रोडवेज प्रशासन की तरफ से किलोमीटर स्कीम की 62 बसों का संचालन किया जाता है। यह बसें वर्तमान में बीएस-4 मानक की हैं। दिल्ली में प्रदूषण के चलते बीएस-4 मानक के डीजल वाहनों पर रोक लगी है। इसकी वजह से किलोमीटर स्कीम की यह बसें दिल्ली रूट पर नहीं जा पा रही हैं। सोनीपत से बीएस-4 की बसों का संचालन करीब पांच साल पहले शुरू हुआ था। तब से यह बसें लोकल और लंबे रूट पर चल रही हैं। दिल्ली में बीएस-4 मानक की वाहनों पर रोक लगने के बाद दिल्ली या दिल्ली के निकलकर आगरा, जयपुर, अजमेर रूट पर किलोमीटर स्कीम की बसों का संचालन बंद कर रखा है।

वर्ष 2020 में आई किमी स्कीम की बसें

वर्ष 2018 में किलोमीटर स्कीम के तहत बीएस-4 मानक की बसों को चलाने के आदेश आए थे। इन बसों के संचालन को लेकर रोडवेज के कर्मचारियों ने विरोध जताया था। उसके बावजूद वर्ष 2020 में किलोमीटर स्कीम के तहत बीएस-4 की 62 बसें आई थीं। तब से यह बसें लोकल और लंबे रूट पर चलाई जा रही हैं।

रोडवेज बसों का दिल्ली में किया जा रहा संचालन

किलोमीटर स्कीम के तहत बीएस-4 मानक की बसों का संचालन बंद होने के बाद यात्रियों की सुविधा के लिए बीएस-6 मानक की रोडवेज बसों को दिल्ली में चलाया जा रहा है, ताकि यात्रियों को किसी तरह की परेशानी न हो। रोडवेज बसों का संचालन सोनीपत से वाया दिल्ली होते हुए कटरा, आगरा, सुजानपुर, चंडीगढ़, जयपुर, अजमेर, आगरा रूट पर किया जा रहा है।

बस मालिकों की तरफ से किलोमीटर स्कीम के तहत चलने वाली बीएस-4 मानक की बसों को बीएस-6 में बदला जा रहा है। क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण कार्यालय से इन बसों की पासिंग होने के बाद दिल्ली व लंबे रूटों पर संचालित किया जाएगा।

-संजय कुमार, महाप्रबंधक, हरियाणा रोडवेज, सोनीपत

कौशल बढ़ाइए, मज़दूरी बढ़ाइए: श्रमिक दिवस पर विशेष

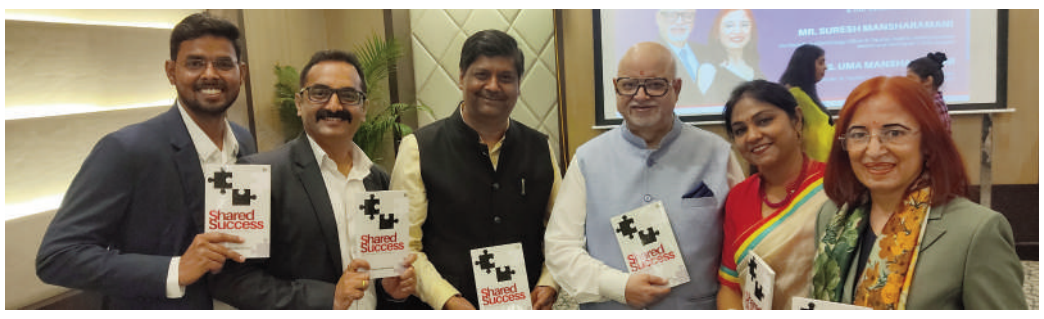

हर वर्ष 1 मई को हम श्रमिक दिवस के रूप में मनाते हैं — यह दिन श्रमिकों के परिश्रम, अधिकारों और उनके योगदान को सम्मानित करने का प्रतीक है। लेकिन सच्चा सम्मान तब मिलेगा, जब श्रमिकों को उनके कार्य के अनुरूप उचित मेहनताना प्राप्त हो। इसका सबसे प्रभावी उपाय है — कौशल विकास।

आज का युग प्रतिस्पर्धा और तकनीकी दक्षता का है। ऐसे में यदि श्रमिक पारंपरिक कार्यों के साथ-साथ आधुनिक उपकरणों और नई तकनीकों का ज्ञान प्राप्त करें, तो वे अधिक वेतन और बेहतर अवसरों के हकदार बन सकते हैं।

इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए PHE Education Trust ने Parivahan Vishesh और सामाजिक उद्यमी डॉ. अंकुर शरण के साथ मिलकर एक अनोखी पहल की शुरुआत की है। इस अभियान का उद्देश्य है — श्रमिकों और युवाओं को ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कार्यशालाओं के माध्यम से व्यावहारिक और तकनीकी प्रशिक्षण देना।

डॉ. अंकुर शरण, जिनका लम्बा अनुभव लॉजिस्टिक्स और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन में है, ने अपने अनुभवों के आधार पर श्रमिकों के लिए विशेष प्रशिक्षण मॉड्यूल तैयार किए हैं। इसमें Skill Based Learning , Hydraulic, Supply Chain, Logistics, वेयरहाउसिंग, कंप्यूटर बेसिक्स, AI Based Learning, Soft Skills और रोड सेफ्टी जैसे विषय शामिल हैं।

इस श्रमिक दिवस पर इस अभियान के माध्यम से संदेश दिया गया —

"सीखिए, बढ़िए और अपने श्रम को नई पहचान दीजिए।"

श्री सुरेश मंसरामानी एवं श्री पंकज श्रीवास्तव जैसे प्रख्यात उद्यमियों ने अपने जीवन के अमूल्य अनुभवों को कार्यकर्ताओं के साथ साझा किया, जिससे कार्यक्षमता में बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकें। ऐसे मंचों के माध्यम से यह समय है कि हम कौशल-आधारित शिक्षण के बेहतर अवसरों की खोज करें, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्यक्षेत्र में अधिक दक्षता और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सके।

कौशल विकास न केवल मज़दूरी बढ़ाता है, बल्कि आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की दिशा में भी पहला कदम है।

PHE Education Trust का यह प्रयास भारत के श्रमिकों को आत्मनिर्भर और सम्मानजनक जीवन की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

बाल विवाह: बचपन के सपनों पर सामाजिक पहरा

अमरपाल सिंह वर्मा

भारत में बाल विवाह आज भी एक बड़ी सामाजिक चुनौती बनी हुई है। यह सिर्फ एक परंपरा नहीं बल्कि लैंगिक असमानता, गरीबी, सामाजिक दबाव और असुरक्षा से जुड़ी एक गहरी समस्या भी है। विभिन्न स्तरों पर किए जा रहे प्रयासों के बावजूद देश में बाल विवाहों पर पूर्णतया अंकुश नहीं लग सका है। अक्षय तृतीया जैसे अबूझ सावे पर राजस्थान समेत देश के विभिन्न राज्यों में हजारों बच्चों को विवाह के बंधन में बांध दिया जाता है, इनमें दुधमुंहे बच्चे भी होते हैं।

संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (यूनिसेफ) के अनुसार भारत में हर साल लगभग 15 लाख लड़कियों की 18 वर्ष से कम उम्र में शादी हो जाती है। इससे भारत दुनिया में सबसे अधिक बाल वधुओं वाला देश बन गया है, जहां वैश्विक संख्या का लगभग एक तिहाई हिस्सा है।

बाल विवाह बच्चों के बुनियादी अधिकारों का गंभीर उल्लंघन है। छोटी उम्र में विवाह के कारण बच्चों का बचपन असमय समाप्त हो जाता है और वह शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा के अवसरों से वंचित हो जाते हैं। विवाह के बाद कम उम्र में ही लड़कियों पर पारिवारिक जिम्मेदारियां आ जाती हैं। स्कूल छोडने की मजबूरी, आर्थिक आत्म निर्भरता से वंचित होना, घरेलू हिंसा और यौन शोषण का बढ़ा हुआ खतरा उनकी जिंदगी का हिस्सा बन जाता है। बाल विवाह के बाद नाबालिग लड़कियों के गर्भधारण की संभावना भी बढ़ जाती है, जिससे प्रसव संबंधी जटिलताएं और मातृ मृत्यु दर में वृद्धि जैसी समस्याएं पैदा होती हैं।

यह चिंता का विषय है कि बालिकाओं में कम उम्र में गर्भावस्था उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर असर डालती है। किशोरावस्था में शरीर पूरी तरह विकसित नहीं होता, जिससे गर्भावस्था और प्रसव के दौरान जटिलताएं बढ़ जाती हैं। प्रसव के दौरान रक्तस्राव, उच्च रक्तचाप, गर्भावस्था से संबंधित संक्रमण और शिशु मृत्यु जैसी घटनाएं सामने आती हैं।

बाल विवाह केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। कम उम्र में विवाह के चलते लड़कियां शिक्षा अधूरी छोड़ देने पर मजबूर हो जाती हैं जिससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता सीमित रह जाती है। इससे पूरे समुदाय की सामाजिक और आर्थिक विकास प्रक्रिया प्रभावित होती है। इससे गरीबी, अशिक्षा और लैंगिक भेदभाव का दुष्चक्र बना रहता है। समाज की प्रगति में आधी आबादी की सहभागिता बाधित होने का परिणाम देश की समग्र विकास गति की धीमी पडने के रूप में सामने आता है।

भारत में बाल विवाह निषेध के लिए कई कानूनी प्रावधान हैं। बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006 इसके विरुद्ध कानूनी आधार प्रदान करता है। सुप्रीम कोर्ट ने 18 अक्टूबर 2024 को महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए हैं जिसमें राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को जिला स्तर पर बाल विवाह निषेध अधिकारियों की नियुक्ति का आदेश दिया गया है। अदालत ने जिला कलेक्टरों और पुलिस अधीक्षकों को भी अपने जिलों में बाल विवाह रोकने के लिए सक्रिय भूमिका निभाने का निर्देश दिया है लेकिन बड़ा सवाल यह है कि क्या इन निर्देशों की पूर्णतया पालना हो पा रही है?

हमारे देश में बाल विवाहों पर पूर्णतया अंकुश की बात अभी तक एक सपना ही है मगर सकारात्मक पक्ष यह है कि देश में बाल विवाह की दर में धीरे-धीरे गिरावट आ रही है। सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं, कार्यक्रमों, माताओं की साक्षरता दर बढने, लड़कियों के लिए शिक्षा के अवसरों में वृद्धि, शहरीकरण और बाल विवाह के खतरों के बारे में जन जागरूकता बढने का इसमें बड़ा योगदान है। सरकार की 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी पहल ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

लड़कियों की शिक्षा सुनिश्चित करना सबसे प्रभावी तरीका है। अगर लड़कियां शिक्षित होंगी तो वह बाल विवाह से बचने और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने में सक्षम होंगी। अनेक शिक्षित लड़कियों ने छोटी उम्र में अपने विवाह का प्रतिरोध करके इसे साबित भी किया है। सरकार को उन लड़कियों को सम्मानित करना चाहिए जिन्होंने शिक्षा और आत्म निर्भरता के रास्ते को चुना और बाल विवाह से बच गईं। इससे अन्य बालिकाओं को प्रेरणा मिलेगी।

विभिन्न समुदायों में बाल विवाह के दुष्परिणामों के प्रति जागरूकता फैलानी होगी। इसमें धार्मिक नेताओं, पंचायत प्रतिनिधियों और सामाजिक संगठनों को इसमें सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। गरीब परिवारों को आर्थिक सहायता देना और बालिकाओं के लिए अधिकाधिक छात्रवृत्तियां उपलब्ध कराना बाल विवाह रोकने में मददगार हो सकता है। बाल विवाह की सूचना मिलने पर त्वरित कार्रवाई भी बाल विवाह के चलन को हतोत्साहित कर सकती है।

बाल विवाह ऐसा सामाजिक मुद्दा है, जिसे सरकार या प्रशासन पर नहीं छोड़ा जा सकता है। इसके लिए समाज को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। बाल विवाहों का चलन सामाजिक कारणों से ही बढ़ा है और समाज की पहल से ही इसे खत्म किया जा सकता है। बाल विवाह की रोकथाम के लिए केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है, इसके लिए बहुआयामी प्रयास करने होंगे। परंपरा के नाम पर बच्चों का विवाह उनके साथ अन्याय ही है, जिसे हर हाल में रोका जाना चाहिए।

श्रम के महत्व को स्वीकार करने की आवश्यकता है

-संदीप सृजन

मानव सभ्यता के विकास में श्रम का योगदान अनमोल रहा है। प्राचीन काल से ही मानव ने अपनी मेहनत और बुद्धि के बल पर प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित किया। चाहे वह पाषाण युग में औज़ारों का निर्माण हो, कृषि क्रांति के दौरान खेती की शुरुआत हो, या औद्योगिक क्रांति के समय मशीनों का विकास , श्रम ने हर युग में सभ्यता को नई दिशा दी। भारतीय संस्कृति में श्रम को उच्च स्थान प्राप्त है। भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कर्मयोग की महत्ता बताते हैं, जहां कर्म (श्रम) को जीवन का आधार माना गया है। "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" का यह संदेश स्पष्ट करता है कि श्रम करना हमारा कर्तव्य है, और इसका महत्व फल की अपेक्षा से कहीं अधिक है। इसी तरह, भारतीय परंपराओं में कारीगरों, शिल्पियों, और मेहनतकश लोगों को हमेशा सम्मान दिया गया है।

श्रम मानव जीवन का आधार है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास और आत्मनिर्भरता का स्रोत है, बल्कि समाज के समग्र प्रगति और समृद्धि का भी मूलमंत्र है। श्रम के बिना न तो सभ्यता का विकास संभव है और न ही मानव समाज की उन्नति। फिर भी, आधुनिक समाज में श्रम के महत्व को पूरी तरह से स्वीकार करने में कमी देखी जाती है। कुछ लोग श्रम को केवल शारीरिक मेहनत तक सीमित मानते हैं, जबकि इसका दायरा इससे कहीं अधिक व्यापक है। श्रम का अर्थ केवल शारीरिक परिश्रम तक सीमित नहीं है। यह मानसिक, बौद्धिक, रचनात्मक और भावनात्मक प्रयासों को भी समेटता है। एक किसान जो खेतों में दिन-रात मेहनत करता है, एक वैज्ञानिक जो प्रयोगशाला में नए आविष्कारों के लिए कार्यरत है, एक शिक्षक जो विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करता है, या एक माता-पिता जो अपने बच्चों के पालन-पोषण में समय और ऊर्जा लगाते हैं,ये सभी श्रम के विभिन्न रूप हैं। प्रत्येक कार्य, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, समाज के लिए मूल्यवान है।

श्रम का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह मानव को आत्मसम्मान और उद्देश्य प्रदान करता है। जब कोई व्यक्ति अपने प्रयासों से कुछ हासिल करता है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है और वह समाज में सकारात्मक योगदान दे पाता है। इसके विपरीत, श्रम के प्रति उदासीनता या अवहेलना न केवल व्यक्तिगत स्तर पर हानिकारक है, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी अवनति का कारण बन सकती है।

आधुनिक समाज में तकनीकी प्रगति और स्वचालन ने श्रम के स्वरूप को बदल दिया है। एक ओर जहां मशीनें और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव श्रम को आसान बनाया है, वहीं दूसरी ओर कुछ लोगों में यह भ्रांति उत्पन्न हुई है कि श्रम की आवश्यकता कम हो गई है। यह धारणा खतरनाक है, क्योंकि श्रम के बिना कोई भी समाज टिकाऊ ढंग से प्रगति नहीं कर सकता।

साथ ही, आधुनिक समाज में श्रम को सामाजिक स्तर पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है। कुछ कार्यों को उच्च और कुछ को निम्न माना जाता है। उदाहरण के लिए, एक कॉर्पोरेट कार्यालय में काम करने वाले व्यक्ति को समाज में अधिक सम्मान मिलता है, जबकि एक सफाई कर्मचारी या निर्माण मजदूर के श्रम को कम महत्व दिया जाता है। यह भेदभाव न केवल सामाजिक असमानता को बढ़ाता है, बल्कि श्रम के प्रति लोगों की मानसिकता को भी प्रभावित करता है।

श्रम को समाज में पूर्ण स्वीकृति मिलना बहुत आवश्यक है। जब समाज सभी प्रकार के श्रम को समान रूप से महत्व देता है, तो सामाजिक भेदभाव कम होता है। प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह किसी भी पेशे में हो, अपने कार्य के लिए सम्मान प्राप्त करता है। यह सामाजिक एकता को बढ़ावा देता है और समाज में सकारात्मकता का संचार करता है। श्रम ही आर्थिक विकास का आधार है। जब समाज श्रम के महत्व को स्वीकार करता है, तो लोग अधिक मेहनत और लगन से काम करते हैं। इससे उत्पादकता बढ़ती है और अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। विशेष रूप से विकासशील देशों में, जहां मानव संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, श्रम की स्वीकृति और प्रोत्साहन आर्थिक प्रगति को गति दे सकते हैं।

आज की युवा पीढ़ी में कई बार मेहनत के प्रति उदासीनता देखी जाती है। यदि समाज श्रम के महत्व को प्रचारित करता है और मेहनतकश लोगों को सम्मान देता है, तो युवा इससे प्रेरित होंगे। वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मेहनत करने के लिए प्रोत्साहित होंगे। श्रम केवल भौतिक लाभ तक सीमित नहीं है। यह व्यक्ति के नैतिक और आध्यात्मिक विकास में भी योगदान देता है। जब समाज श्रम को महत्व देता है, तो लोग अपने कार्य को कर्तव्य के रूप में देखते हैं, जिससे उनका जीवन अधिक सार्थक और उद्देश्यपूर्ण बनता है।

श्रम के महत्व को समाज में स्थापित करने और इसे पूर्ण स्वीकृति दिलाने के लिए स्कूलों और कॉलेजों में बच्चों को श्रम के महत्व के बारे में पढ़ाया जाना चाहिए। उन्हें यह समझाना होगा कि प्रत्येक कार्य, चाहे वह शारीरिक हो या बौद्धिक, समाज के लिए महत्वपूर्ण है। साथ ही, शिक्षा प्रणाली में व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि युवा विभिन्न प्रकार के श्रम के लिए तैयार हों। समाज को उन रूढ़ियों को तोड़ना होगा जो कुछ कार्यों को निम्न मानती हैं। इसके लिए मीडिया, साहित्य, और सार्वजनिक मंचों का उपयोग करके सभी प्रकार के श्रम को सम्मान देने का संदेश प्रसारित किया जाना चाहिए। सरकार को श्रमिकों के लिए बेहतर नीतियां बनानी चाहिए, जैसे कि उचित वेतन, सुरक्षित कार्यस्थल, और सामाजिक सुरक्षा। इससे न केवल श्रमिकों का जीवन स्तर सुधरेगा, बल्कि समाज में श्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी विकसित होगा।

आज विश्व तेजी से बदल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन, और तकनीकी प्रगति ने श्रम के स्वरूप को निश्चित रूप से प्रभावित किया है। लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि तकनीक श्रम का स्थान नहीं ले सकती; यह केवल श्रम को अधिक प्रभावी और कुशल बना सकती है। भविष्य में, समाज को श्रम के नए रूपों जैसे डेटा विश्लेषण, डिजिटल रचनात्मकता, और पर्यावरण संरक्षण से संबंधित कार्यों को भी स्वीकार करना होगा।

श्रम मानव जीवन और समाज का आधार है। यह न केवल आर्थिक और सामाजिक प्रगति का स्रोत है, बल्कि व्यक्तिगत विकास और आत्मसम्मान का भी आधार है। समाज को श्रम के महत्व को पूर्ण रूप से स्वीकार करना होगा, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य के लिए सम्मान प्राप्त कर सके और समाज में सकारात्मक बदलाव आ सके। शिक्षा, नीतिगत सुधार, और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकते हैं जहां श्रम को उसका उचित स्थान मिले। आइए, हम सभी मिलकर श्रम के प्रति सम्मान और गर्व की भावना को बढ़ावा दें, क्योंकि श्रम ही वह शक्ति है जो समाज को प्रगति के पथ पर ले जाती है।

प्रख्यात गायक मन्ना डे के जन्मदिन (1 मई) पर विशेष

गायन से भावों को साकार कर देते थे मन्ना डे

मोहन मंगलम

सुप्रसिद्ध पार्श्वगायक मन्ना डे केवल गीत ही नहीं गाते थे बल्कि अपने गायन से शब्दों के पीछे छिपे भावों को भी खूबसूरती से सामने ला देते थे। शायद यही कारण है कि प्रख्यात हिन्दी कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपनी अमर कृति 'मधुशाला' को स्वर देने के लिए मन्ना डे का ही चयन किया था।

मन्ना डे का जन्म 1 मई 1919 को कलकत्ता के महामाया व पूरन चन्द्र डे के परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दु बाबुर पाठशाला से पूरी करने के बाद स्कॉटिश चर्च कॉलेज में प्रवेश लिया और फिर विद्यासागर कॉलेज से स्नातक किया। कॉलेज के दिनों वे कुश्ती और मुक्केबाजी की प्रतियोगिताओं में खूब हिस्सा लेते थे। वे फुटबॉल के भी काफी शौकीन थे।

मन्ना डे के चाचा संगीताचार्य कृष्ण चंद्र डे शास्त्रीय संगीत में पारंगत थे। घर पर संगीत के अनेक महारथी आते रहते थे। रात-रात भर गाना बजाना हुआ करता था। ऐसे में बालक मन्ना का संगीत के प्रति सहज ही आकर्षण बढ़ने लगा था। कृष्ण चन्द्र डे और उस्ताद बादल खान एक बार साथ-साथ रियाज कर रहे थे। तभी बादल खान ने मन्ना डे की आवाज सुनी और कृष्ण चन्द्र से पूछा - ₹यह कौन गा रहा है ?₹ इस पर मन्ना डे को बुलाया गया। उस्ताद के पूछने पर मन्ना ने कहा - ₹बस ऐसे ही गा लेता हूं।₹ बादल खान ने मन्ना की छिपी प्रतिभा को पहचान लिया। इसके बाद मन्ना अपने चाचा से संगीत की शिक्षा लेने लगे।

पढ़ाई पूरी करने के बाद मन्ना डे अपने चाचा के साथ 1942 में मुंबई आ

गए। संगीत की अच्छी समझ होने के कारण उन्होंने फिल्मों में असिस्टेंट म्यूजिक डायरेक्टर के तौर पर काम करना शुरू किया। गायक के तौर पर मन्ना डे को सबसे बड़ा ब्रेक फिल्म 'तमन्ना' से मिला। इस फिल्म के गाने को मन्ना डे ने सुरैया के साथ मिलकर गाया। यह गाना बड़ा हिट रहा। इसके बाद तो मन्ना डे की गाड़ी चल पड़ी। 1943 में फिल्म 'राम राज्य' रिलीज हुई थी जिसमें मन्ना डे ने बतौर सोलो सिंगर एक गाने को अपनी आवाज दी थी। यह एकमात्र ऐसी फिल्म है, जिसे महात्मा गांधी ने देखा था।

सन-1961 में संगीत निर्देशक सलिल चौधरी के संगीत निर्देशन में फिल्म 'काबुलीवाला' की सफलता के बाद मन्ना डे शोहरत की बुलंदियों पर जा पहुँचे। फिल्म 'आवारा' में उनके द्वारा गाया गीत ₹तेरे बिना चाँद ये चाँदनी !₹ बेहद लोकप्रिय हुआ। इसके बाद उन्हें बड़े बैनर की फिल्मों में अवसर मिलने लगे।

गायकी को लेकर मन्ना डे के मन में अपार श्रद्धा थी। उन्हें मुश्किल गीत गाने में महारत हासिल थी। किसी भी निर्माता को अपनी फिल्म में शास्त्रीय गीत गवाना होता था तो वह सिर्फ मन्ना डे को ही साइन करता था। मशहूर गायक मोहम्मद रफी ने एक बार कहा था, "आप लोग मेरे गीत को सुनते हैं लेकिन अगर मुझसे पूछा जाये तो मैं कहूँगा कि मैं मन्ना डे के गीतों को ही सुनता हूँ।"

मन्ना डे के गाये गीत हर तबके में काफी लोकप्रिय हुए। ₹लागा चुनरी में दाग, छुपाऊँ कैसे ?₹, ₹पूछो न कैसे मैंने रैन बितायी !₹, ₹सुर ना सजे, क्या गाऊँ मैं ?₹, ₹जिन्दगी कैसी है पहेली हाय, कभी ये हँसाये कभी ये रुलाये !₹,₹तुझे सूरज कहूँ या चन्दा, तुझे दीप कहूँ या तारा !₹ और ₹आयो कहाँ से घनश्याम ?₹ जैसे गीत ही नहीं, उनके गाये ₹यक चतुर नार, बड़ी होशियार !₹, ₹यारी है ईमान मेरा, यार मेरी जिन्दगी !₹, ₹प्यार हुआ इकरार हुआ₹, ₹ऐ मेरी जोहरा जबीं !₹ और ₹ऐ मेरे प्यारे वतन !₹ जैसे गीत आज भी लोगों की जबान पर चढ़े हुए हैं।

मन्ना डे सन 1969 में फिल्म 'मेरे हुजूर' के लिए सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायक, 1971 में बांग्ला फिल्म 'निशि पदमा' और 1970 में प्रदर्शित फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में सर्वश्रेष्ठ पार्श्वगायन के लिए फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित किए गए। भारत सरकार ने फिल्मों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सन-1971 में मन्ना डे को 'पद्मश्री' और 2005 में 'पद्मभूषण' अलंकरण से सम्मानित किया। वहीं, सन 2007 में उन्हें फिल्मों का सर्वोच्च सम्मान 'दादा साहेब फाल्के पुरस्कार' प्रदान किया गया।

मन्ना डे ने 3000 से अधिक गानों को अपनी आवाज दी। हिन्दी एवं बांग्ला फिल्मी गानों के अलावा उन्होंने अन्य भारतीय भाषाओं में भी गीत रिकॉर्ड करवाये। मन्ना डे ने 90 के दशक में म्यूजिक इंडस्ट्री से पूरी तरह से दूरी बना ली थी। 1991 में आई फिल्म 'प्रहार' के गाने 'हमारी मुट्ठी में' गाने को उन्होंने अंतिम बार अपनी आवाज दी थी।

मन्ना डे पार्श्वगायक तो थे ही, उन्होंने बांग्ला भाषा में अपनी आत्मकथा भी लिखी थी जो अन्य भाषाओं में भी छपी। उनकी जीवनी को लेकर अन्य लेखकों ने भी पुस्तकें लिखीं। 24 अक्टूबर 2013 को 94 साल की उम्र में मन्ना डे ने इस फानी दुनिया को अलविदा कह दिया लेकिन अपने सुमधुर गीतों के माध्यम से वे सदैव अमर रहेंगे।

खत वो तेरे पुराने आए ।

याद मुझकों मोहब्बत के वो
ज़माने आए ।
आज हाथों में मेरे , ख़त वो तेरे पुराने
आए |
हम न होंगे तो फिर किससे करोगे बातें ।
आजकल तो हर लब पर ,
अपने ही फ़साने आए ।
यह ही एक दिल था तड़पता रहा मिलने
के लिए , |
और तुझको तो रह - रह के , सिर्फ़
सिर्फ बहाने आए ।
बाद मुद्दत के तुझको अपने रूबरु पाया
हमने ।
दिल में वो ही जज़्बात , वो ही अन्दाज
पुराने आए |
वो जो तक़दीर में हमारे , नहीं हैं शायद ।
रह - रह के ख्वाब फिर भी , उसके ही
सुहाने आए ।
तेरे लबों की लाली , की चाहतों में '
मुश्ताक़ ' |
घटाओं में जुल्फों की , हम तो उलझने
आए ।

-डॉ . मुश्ताक अहमद शाह 'सहज'
हरदा

भारत ने पाकिस्तान पर की वाटर एवं डिजिटल 'स्ट्राइक'

प्रदीप कुमार वर्मा

जम्मू-कश्मीर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पहलगाम की बैसारन घाटी में एक सप्ताह पूर्व इस्लामिक जेहादियों द्वारा इंसानियत के विरुद्ध कायराना हरकत को अंजाम देते हुए दो दर्जन से अधिक पर्यटकों की मौत के मामले में भारत ने कड़ा रुख अख्तियार किया है। पाकिस्तान से आए चार आतंकियों द्वारा की गई अंधाधुंध फायरिंग में उत्तर प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, नेपाल, यूएई नेपाल और उड़ीसा के पर्यटक मौत का शिकार बने थे। इस कायराना आतंकी हमले के बाद पूरे देश में खासा आक्रोश है और देश का आवाम अब पाकिस्तान के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई की मांग कर रहा है। उधर,देश के आवाम की भावनाओं की कद्र करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने भी पाकिस्तान के विरुद्ध कड़े कदम उठाते हुए आतंकियों को मुंहतोड़ जवाब देने का ऐलान किया है। इस कार्रवाई में पाकिस्तान के चैनलों को बेन करने के साथ-साथ सिंधु जल समझौते को इस स्थगित करने जैसे कदम शामिल है। पीएम नरेंद्र मोदी की अगुवाई में भारत ने इस बार आतंकियों के विरुद्ध संभावित सर्जिकल एवं एयर स्ट्राइक करने से पूर्व वाटर और डिजिटल ₹स्ट्राइक₹ की है।

आतंकी हमले से गुस्साए भारत में सबसे पहले पाकिस्तान के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई के तहत वर्ष 1960 में हुए ₹सिंधु जल समझौते₹ को फिलहाल रोक दिया गया है। वर्ल्ड बैंक की मध्यस्थता के साथ वर्ष 1960 में भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु नदी के जल पर समझौता हुआ था। इस समझौते पर पाकिस्तान की करीब 80 प्रतिशत खेती निर्भर है। भारत के हालिया फैसले पर वर्ल्ड बैंक भी स्पष्ट कर चुका है कि उसकी मध्यस्थता के दौरान कुछ समय के लिए संस्थान सिग्नेटरी रहा है। लेकिन अब ये दो मुल्कों के बीच का मामला है। भारत ने भी पाकिस्तान को भेजे अपने पत्र में साफ किया है कि वर्तमान हालात में सिंधु जल समझौते को आगे बढ़ाया जाना संभव नहीं है। जिसके चलते गर्मी के इस मौसम के साथ-साथ आने वाले दिनों में पाकिस्तान को उसकी जरूरत के हिसाब से पानी मिलने में संभावित संकट सामने आना तय है। पानी की किल्लत से पाकिस्तान में खेती-किसानी प्रभावित होगी तथा लोगों को पीने के लिए भी उनकी जरूरत का पानी नहीं मिल सकेगा।

रणनीति एवं सैन्य मामलों के जानकार भारत के इस कदम को आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के विरुद्ध ₹वाटर स्ट्राइक₹ करार दे रहे हैं। जानकारों का यह भी कहना है कि सर्जिकल और एवं सर्जिकल स्ट्राइक की तुलना में भारत द्वारा की गई वाटर स्ट्राइक के दूरगामी में परिणाम होंगे। सिंधु जल समझौते के निरस्तीकरण के बाद पाकिस्तान में उत्पन्न होने वाले जल संकट से उसकी समस्या अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक गतिविधियां भी बुरी तरह प्रभावित होगी। इसके साथ ही भारत में पाकिस्तान के विरुद्ध ₹डिजिटल स्ट्राइक₹ भी कर दी है। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद में विदेशी मीडिया द्वारा गलत रिपोर्टिंग करने के मामले में भारत ने पाकिस्तान के करीब डेढ़ दर्जन न्यूज़ एवं यूट्यूब चैनलों को बैन किया है। इनमें जिओ न्यूज़, डॉन न्यूज़ ए आरआई न्यूज, बोल न्यूज़, सुनो न्यूज़, जीएनएन टीवी,समा टीवी एवं समा स्पोर्ट्स शामिल है। इसके साथ ही आरजू कासमी तथा शोएब अख्तर के यूट्यूब चैनलों को भी भारत में बैन किया गया है।

यह सभी पाकिस्तानी चैनल अपने कंटेंट में भड़काऊ तथा सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील सामग्री दिखा रहे थे तथा भारत के विरुद्ध दुष्प्रचार कर रहे थे। इसके साथ ही इन चैनलों द्वारा भारतीय सेवा और सुरक्षा एजेंसियों को निशाना बनाते हुए भ्रामक नैरेटिव भी सेट किया जा रहा है। भारत के विदेश मंत्रालय ने बीबीसी को भी पत्र लिखकर पहलगाम आतंकी हमले के दौरान की गई रिपोर्टिंग पर सख्त एतराज जताया है। इस संबंध में सरकार की ओर से भारत में बीबीसी के प्रमुख जैकी मार्टिन को पत्र भी लिखा गया है। पत्र में आतंकियों को चरमपंथी बताने पर गंभीर आपत्ति जताई गई है। यही नहीं, मंत्रालय ने बीबीसी की रिपोर्टिंग पर नजर रखने के लिए भी कहा है। भारत के गृह मंत्रालय की सिफारिश पर की गई इस कार्रवाई को इंटरनेशनल स्तर पर पाकिस्तान के विरुद्ध भारत की ₹डिजिटल स्ट्राइक₹ माना जा रहा है।

भारत द्वारा की गई डिजिटल स्ट्राइक के तहत भारत विरोधी गतिविधियों और दुष्प्रचार पर नजर रखने के लिए गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय के अधिकारियों की एक विशेष टीम बनाई गई है। यह टीम भारतीय और विदेशी डिजिटल मीडिया पर पहलगाम आतंकी हमले से जुड़ी सामग्री और ऑनलाइन गतिविधियों की जांच करेगी। इसके साथ ही टीम ऐसे लोगों की भी पहचान करेगी जो, भारत सरकार और सेना की नकारात्मक छवि पेश करने के लिए मनगढ़ंत और झूठे प्रचार में जुटी हुई है। सैन्य एवं कूटनीति के जानकारों का कहना है कि पहलगाम की वैसारन घाटी में हुआ यह हमला वर्ष 2019 में पुलवामा अटैक के बाद दूसरा सबसे बड़ा आतंकी हमला है। तब 14 फरवरी 2019 को आतंकवादी संगठन जैसे मोहम्मद के आत्मघाती हमलावर ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की गाड़ी को अपने निशाना बनाया था। जिसमें सीआरपीएफ के 40 जवान शहीद हुए थे।

इससे पूर्व 18 सितंबर वर्ष 2016 उरी में आतंकी हमला हुआ था। जैश-ए-मोहमद द्वारा सेना की बिग्रेड पर किए गए इस हमले में 19 सैनिक शहीद हुए थे। बताते चलें कि इससे दो साल पूर्व रियासी में शिवखोड़ी से दर्शन करके लौट रहे श्रद्धालुयों की बस पर आतंकियों ने अंधाधुंध फायरिंग की थी। जिसमें कुल नो हिंदू दर्शनार्थियों की मौत हो गई थी। भारत में जहां पहले सिंधु जल समझौते को निरस्त करके तथा पाकिस्तान के चैनलों को बेन करके भारत के विरुद्ध वाटर एवं डिजिटल स्ट्राइक करके पाक के दुष्प्रचार को रोक दिया है। भारत का यह कदम सर्जिकल एवं एयर स्ट्राइक से पूर्व उठाया गया महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। रक्षा एवं सैन्य मामलों की जानकारों का कहना है की बहुत जल्दी ही भारत पाकिस्तान के विरुद्ध सर्जिकल अथवा एयर स्ट्राइक करेगा, जो पड़ोसी पाकिस्तान द्वारा पोषित आतंकवाद के विरुद्ध भारत का निर्णायक कदम होगा।

दिल्ली वालों को मई में राशन मिलेगा या नहीं? सामने आई बड़ी वजह

दिल्ली में आज से मई महीने का राशन वितरण शुरू होना है लेकिन अभी तक दुकानों पर 50% अनाज भी नहीं पहुंचा है। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के गोदामों से राशन उठाने में देरी हो रही है जिसके लिए ट्रांसपोर्टरों की लापरवाही को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। इस देरी के कारण लाखों राशन कार्ड धारकों को परेशानी हो रही है जिससे मई का राशन बटना मुश्किल लग रहा है।

नई दिल्ली। दिल्ली में गुरुवार से मई महीने के लिए राशन का वितरण शुरू होना है, लेकिन अभी तक सरकारी दुकानों तक 50 फीसदी अनाज भी नहीं पहुंचा है। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के गोदामों से अप्रैल के बाद मई का राशन उठाने में भी देरी हो रही है।

ट्रांसपोर्टरों की लापरवाही इस स्थिति का बड़ा कारण बताई जा रही है। हालांकि, राशन उठाने का जिम्मा संभालने वाले दिल्ली राज्य नागरिक आपूर्ति निगम (डीएससीएससी) ने इस पर अपनी राय नहीं दी है।

करीब 73 लाख राशन लाभार्थी

गौरतलब है कि दिल्ली में करीब 17.80 लाख राशन कार्ड और करीब 73 लाख राशन लाभार्थी हैं। यहां 1953 उचित मूल्य राशन की दुकानें हैं। इन दुकानों के लिए हर महीने दिल्ली स्थित एफसीआई के छह गोदामों से राशन का उठाव होता है।

नियम यह है कि किसी भी महीने का राशन पिछले महीने की आखिरी तारीख तक उठा लिया जाना चाहिए ताकि महीने की पहली तारीख से राशन बांटा जा सके। लेकिन अप्रैल की तरह मई का भी शत-प्रतिशत राशन अभी तक सरकारी दुकानों तक नहीं पहुंचा है।

याद रहे कि अप्रैल में भी केंद्र सरकार के खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग

ने राशन उठान में हो रही देरी को लेकर दिल्ली सरकार के खाद्य आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव को पत्र लिखा था।

अधिकारियों ने बताया कि राशन की दुकानें खाद्य आपूर्ति विभाग के अधीन आती हैं, लेकिन एफसीआई गोदामों से इन दुकानों तक राशन पहुंचाने की जिम्मेदारी दिल्ली राज्य नागरिक आपूर्ति निगम (डीएससीएससी) की है।

बताया जाता है कि ट्रांसपोर्टरों की लापरवाही के कारण राशन उठाने में देरी हो रही है। कभी वे कम चक्कर लगाते हैं तो कभी उनके ट्रकों पर पर्याप्त मजदूर नहीं होते। आधिकारिक सूत्रों का कहना है कि छह में से चार गोदामों से 50 फीसदी गेहूं और चावल भी नहीं उठाया गया है।

इस संबंध में डीएससीएससी अधिकारियों से संपर्क करने का प्रयास भी किया गया, लेकिन वहां से फोन या व्हाट्सएप पर कोई जवाब नहीं मिला।

एफसीआइ के किस गोदाम से बुधवार शाम सात बजे तक उठा कितना राशन (प्रतिशत में):-

गोदाम	संबंधित दुकानें	गेहूं उठान	चावल उठान
नरेला	483	45.62	37.18
घेवरा	383	30.40	29.99
मायापुरी	439	23.78	30.32
पूसा सीटीओ	247	62.42	62.18
ओखला	213	40.69	55.12
शक्ति नगर	188	47.13	44.10

अप्रैल का राशन समय पर न उठने से लाखों लाभार्थी परेशान हैं। अब मई में भी यही स्थिति बनती दिख रही है। हालांकि, आठ-दस दिन पहले हम डीएससीएससी के महाप्रबंधक अखिलेश कुमार से भी मिले थे। उन्होंने हमें आश्वासन दिया था कि ट्रांसपोर्टरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी, ताकि ऐसी स्थिति दोबारा न आए। लेकिन इस बार भी स्थिति जस की तस है।

– शिव कुमार गर्ग, अध्यक्ष, दिल्ली सरकारी राशन डीलर्स एसोसिएशन

भारत विकास परिषद सभा द्वारा पहलगांव में आतंकवादियो द्वारा हमले में मारे गए भारतीयों को दी श्रद्धांजलि

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत विकास परिषद सभा द्वारा पहलगांव में आतंकवादियो द्वारा हमले में मारे गए हमारे 28 लोगों को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि भी दी गई।

साथ ही इस वर्ष की पहली कार्यकारिणी की सभा कल दिनांक 29/04/25 को सांय छह बजे श्रीमती मनु शिवपुरी ब्रांड एंबेसडर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के आवास ₹कनखलर₹ में सम्पन्न हुई।

सभा में पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री आदर्श पाल तोमर जी श्री विजय सेठी जी पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष वैध एम० आर० शर्मा जी और पूर्व अध्यक्ष श्री नरेश जैनर जी अध्यक्ष श्री आशुतोष शर्मा जी सचिव श्री गजेन्द्र प्रसाद रतूडी जी, श्री मति मनु शिवपुरी जी, श्री सुरेश जैनर जी श्री तेजपाल खिल्लन जी एवं विशाल अरोड़ा जी उपस्थित रहें। कार्यकारिणी की सभा में पूरे वर्ष होने वाले कार्यक्रमों एवं बजट पर चर्चा हुई। कार्यकारिणी सभा में

दायित्व ग्रहण समारोह की तारीख पर भी चर्चा की गई। जो कि संभवत 25 मई के बाद में प्रांत के अधिकारियों से समय मिलने पर दायित्व ग्रहण समारोहों की तारीख का ऐलान कर दिया जाएगा। इसी के साथ यह भी तय किया गया कि प्रत्येक सदस्य अपने द्वारा परिषद में सदस्यों की संख्या का भी विस्तार करें। एवं परिषद के सदस्यों की संख्या बढ़ाने पर जोर दिया जाए।

इसी के साथ पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री आदर्श पाल तोमर जी के द्वारा सभी सदस्यों की तरफ से श्रीमती मनु शिवपुरी आभार आभार एवं धन्यवाद भी किया। सभा द्वारा पहलगांव में आतंकवादियो द्वारा हमले में मारे गए हमारे 28 लोगों को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि भी दी गई। और उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना की गई। सभी में दायित्व धारी आशुतोष शर्मा अध्यक्ष, गजेन्द्र प्रसाद रतूडी सचिव, सुरेश जैनर कोषाध्यक्ष, सुशीला शर्मा महिला सहभागीता आदि की सहभागिता रही।

रामाकृष्णापुरम में बाबा साहब की जयंती के अवसर पर भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम और नाटक का मंचन

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली। एस आर एस (शिक्षा रोजगार संगठन)अभियान एक लक्ष्य(पंजी) संस्था द्वारा दशहरा ग्राउंड ,वेस्ट ब्लॉक सेक्टर 1 ,तमिल संगम के सामने , रामाकृष्णन पुरम दिल्ली में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की जयंती समारोह का आयोजन रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया । इस आयोजन में बाबा साहब के जीवन पर आधारित एक रंगमंचीय नाटक का मंचन भी किया गया । इस भव्य और विराट आयोजन में पूरी दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्र से आए लोग बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित रहे ।

इस कार्यक्रम में रामाकृष्णापुरम के क्षेत्रीय विधायक श्री अनिल शर्मा जी ने बाबा साहब के जीवन पर विचार रखते हुए कहा कि बाबा साहब ने संविधान लिखकर देश के लिए जो काम किया उन्हें देश सदैव याद करता रहेगा। देश और सरकार सभी संविधान से चलते हैं । बाबा साहब सभी समाज के हैं । सभी के लिए आदरणीय हैं । उन्होंने भारत की उन्नति और प्रगति में बहुत बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । अनिल जी ने कमेटी के सभी लोगों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे क्षेत्र में बाबा साहब की जयंती पर इस तरह का आयोजन होने से मैं अपने आप को बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। पूर्व में विधायक जी के प्रयास से मोती बाग गांव में बाबा साहब की सुंदर प्रतिमा स्थापित की गई थी । रामाकृष्णापुरम के वरिष्ठ भाजपा नेता श्री राधेश्याम शर्मा ने बाबा साहब के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि बाबा साहब अंबेडकर जी के उत्कृष्ट कार्यों बारे में इतना कहा जा चुका है कि उसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता । 70-80 साल पहले राजधानी दिल्ली में भी भेदभाव , ऊंच- नीच, छुआछूत ,जातिवाद जैसी कुरीतियां विद्यमान थी । लेकिन बाबा साहब जैसे युग पुरुष ने भारत को इन सभी सामाजिक बुराइयों से मुक्त कराया । बाबा साहब विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। एक गरीब परिवार से निकलकर देश- विदेश में शिक्षा ग्रहण करके भारत देश को संविधान जैसा पवित्र ग्रंथ प्रदान किया। शर्मा जी ने नाटक की प्रशंसा करते हुए नाटक के सभी कलाकारों को शुभकामनाएं और आशीर्वचन प्रेषित किए । समिति की उज्ज्वल भविष्य की कामना की ।

इस आयोजन में दिल्ली विश्वविद्यालय पीजीडीएवी कॉलेज के प्रोफेसर मनोज कुमार कैन ने बताया की बाबा साहब दुनिया के सबसे पढ़े लिखे व्यक्ति थे। प्रो. कैन ने कहा कि बाबा साहब ही एक ऐसे युग पुरुष है जिनकी जयंती पर पूरे विश्व में सबसे ज्यादा कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं । हम सभी भारतवासियों को तो एक बार बाबा साहब के जीवन और उनके कार्यों को अवश्य देखना और पढ़ना चाहिए । बाबा साहब का आदर्श जीवन और उच्च विचार सदैव भारत के लोगों के लिए प्रेरणादायक रहेंगे । कैन ने नाटक की प्रशंसा करते हुए कहा कि लगभग एक घंटे के इस नाटक में बाबा साहब के जीवन के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को बड़े अच्छे ढंग से संजोया गया है। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री रविन्दर जलोटा जी ने बताया कि यह आयोजन बाबा साहब की जयंती के अवसर पर हर साल आयोजित किया जाता है । इस आयोजन में निरंतर बहुत बड़ी संख्या में प्रोफेसर, वकील ,डॉक्टर, समाजसेवक अध्यापक और आम जनता तन मन धन देकर राष्ट्र निर्माता बाबा साहब के पवित्र कार्य में सहयोग कर रहें हैं। कार्यक्रम का सुंदर संचालन श्री महीलाल कैन और श्री रविकांत गौतम जी ने किया। समारोह में लालता प्रसाद, सोहनबीर कैन , एच के मानक , देशराज, सनी जुड़ी , मुकेश दिलेर , धर्मपाल बागड़ी , जगदीप गौतम, जसवंत सिंह जनमेजय , राजपाल कैन , संत कुमार , डॉ बीजेंदर , मुकेश कुमार, सन्नी एच आर, रिषि कुमार, इत्यादि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री 1008 आदिनाथ भगवान जी के अक्षय तृतीया के दिन प्रथम आहार के उपलक्ष्य में गन्ने का रस (इच्छु रस) का वितरण किया गया

परिवहन विशेष न्यूज

कार्तिक, दिल्ली : जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री 1008 आदिनाथ भगवान जी के अक्षय तृतीया के दिन प्रथम आहार के उपलक्ष्य में गन्ने का रस (इच्छु रस) का वितरण किया गया. यह कार्यक्रम आज 30 अप्रैल, प्रातः 10 बजे से आर्य समाज चौक, आर्य पुरा, सब्जी मण्डी, दिल्ली-7 में किया गया. संवाददाता के संवाद में श्री जैन नवयुवक समिति के अध्यक्ष विकास जैन ने बताया कि परम हर्ष का विषय है कि हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी भगवान श्री 1008 आदिनाथ भगवान जी के अक्षय तृतीया के दिन प्रथम आहार के उपलक्ष्य में गन्ने का रस (इच्छु रस) का वितरण किया गया उसके के पश्चात्छोले-कुलचे के प्रीतिभोज की भी व्यवस्था की गई थी. इस कार्यक्रम में श्री जैन नवयुवक समिति के महामंत्री : सूरज जैन, कोषाध्यक्ष : संजय जैन, मीडिया प्रभारी: कार्तिक जैन से साथ श्री दिगम्बर जैन पंचायत (रजि०) सब्जी मंडी, दिल्ली-7, श्री आदिनाथ महिला मण्डल सब्जी मंडी, दिल्ली-7, श्री सकल दिगम्बर जैन समाज, आर्यापुरा सब्जी मण्डी,

दिल्ली-7, नव आदर्श वेलफेयर एसोसिएशन आर्यापुरा, दिल्ली-7 के पदाधिकारियों, सदस्यों एवं क्षेत्रीय निवासियों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया. इस कार्यक्रम में क्षेत्रीये विधायक सूर्य प्रकाश खत्री जी, क्षेत्रीये निगम पार्षद रेखा अमरनाथ जी एवं पूर्व निगम पार्षद गुड्डी देवी जाटव जी ने भी हिस्सा लिया.

दिल्ली पुलिस ने 5 महीने से लापता महिला को खोज निकाला

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: एक महत्वपूर्ण उपलब्धि में, दिल्ली क्राइम ब्रांच की NR-II और स्नैचिंग (NR-II) इकाई की एक टीम ने 27 वर्षीय एक महिला को सफलतापूर्वक बरामद किया है, जो 5 महीने से लापता थी। यह ऑपरेशन तकनीकी इनपुट और ऑन-ग्राउंड खुफिया जानकारी जुटाने के सावधानीपूर्वक विश्लेषण सहित निरंतर और समन्वित प्रयासों के माध्यम से चलाया गया था।

19.12.2024 को, एक महिला के लापता होने के संबंध में डीडी नंबर 43 ए के माध्यम से पुलिस स्टेशन नरेला, दिल्ली में एक गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज की गई थी। पीड़िता की अचानक अनुपस्थिति ने उसके परिवार को गहरी चिंता में डाल दिया, जिसके कारण दिल्ली पुलिस ने उसके ठिकाने का पता लगाने के लिए तत्काल खोज और जांच अभियान शुरू किया।

सूचना, टीम और कार्रवाई:

वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों पर कार्य करते हुए, निरीक्षक नीरज कुमार शर्मा की कड़ी निगरानी और एसीपी/एनआर-II श्री नरेंद्र सिंह के समग्र मार्गदर्शन में उप-निरीक्षक बलराज, महिला/हेड कांस्टेबल नीलम और महिला सिपाही सोनम सहित एनआर-II/क्राइम ब्रांच की एक विशेष टीम का गठन किया गया। टीम ने पीड़िता और संभावित संदिग्धों से संबंधित कई कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) के विश्लेषण को शामिल करते हुए एक बहुआयामी रणनीति अपनाई। इस तकनीकी मूल्यांकन के समानांतर, कार्रवाई योग्य सुराग जुटाने के लिए जमीनी स्तर पर पूछताछ की गई।

जांच के अंत में, उप-निरीक्षक बलराज, महिला/हेड कांस्टेबल नीलम और महिला सिपाही सोनम को लापता महिला की उपस्थिति का संकेत देने वाली एक विश्वसनीय सूचना मिली। पीड़िता के स्थान की पुष्टि करने के बाद, टीम ने तुरंत इस खुफिया जानकारी पर कार्रवाई की और इलाके में सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध तरीके से छापेमारी की। उनके त्वरित और सावधानीपूर्वक प्रयासों के परिणामस्वरूप पीड़िता को सुरक्षित बरामद किया गया।

खोज के बाद, लापता महिला को पीएस नरेला लाया गया और जीडी संख्या 106 ए दिनांक 29.04.2025 के अनुसार जांच अधिकारी को सौंप दिया गया। पीड़िता की सुरक्षा सुनिश्चित करने और जिम्मेदार लोगों को न्याय दिलाने के लिए संबंधित पुलिस अधिकारियों द्वारा आगे की आवश्यक कानूनी कार्रवाई और जांच की जाएगी।

यह सफल ऑपरेशन दिल्ली पुलिस, विशेष रूप से एनआर-II/क्राइम ब्रांच की गुमशुदा व्यक्तियों, विशेष रूप से कमजोर महिलाओं का पता लगाने और उन्हें उनके परिवारों तक सुरक्षित पहुंचाने की अटूट प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। दिल्ली पुलिस सार्वजनिक सुरक्षा और कल्याण के प्रति अपने समर्पण की पुष्टि करती है, और नागरिकों को किसी भी जानकारी की तुरंत रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करती है जो अपराधों को रोकने या लापता व्यक्तियों का पता लगाने में मदद कर सकती है।

वक्फ बिल के खिलाफ मुस्लिम समुदाय का प्रदर्शन, घरों और दुकानों की लाइटें बंद कर किया विरोध

मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के आह्वान पर मुस्लिम समुदाय ने वक्फ संशोधन एक्ट के खिलाफ घरों और दुकानों की लाइट बंद कर विरोध प्रदर्शन किया। रात 9 बजे से 915 बजे तक चले इस प्रदर्शन में जामा मस्जिद समेत पुरानी दिल्ली और पूर्वी दिल्ली के कई इलाकों में लोगों ने भाग लिया। कई स्थानों पर वक्फ संशोधन एक्ट के खिलाफ नारे भी लगाए गए।

नई दिल्ली। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के आह्वान पर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने वक्फ संशोधन एक्ट के खिलाफ अपने घरों व व्यापारिक प्रतिष्ठानों की लाइट बंद कर विरोध जताया।

यह विरोध प्रदर्शन रात नौ बजे से सवा नौ बजे तक 15 मिनट तक चला। ऐतिहासिक जामा मस्जिद की लाइट भी कुछ देर के लिए बंद कर दी गई। इसी तरह पूर्वी दिल्ली की कई मस्जिदों में नमाजियों ने अंधेरे में नमाज अदा की।

वहीं, मटिया महल, चितली कबाड़, सुई वालान, चांदनी महल, पहाड़ी भोजला, बल्लीमारान, कूचा पंडित समेत पुरानी दिल्ली के अन्य मुस्लिम बहुल इलाकों में लोगों ने अपने घरों व दुकानों की लाइट बंद रखी, सड़कों पर अंधेरा पसरा रहा।

पूर्वी दिल्ली के सीलमपुर, जाफराबाद, मौजपुर, मुस्तफाबाद समेत अन्य इलाकों और दक्षिणी दिल्ली के ओखला, निजामुद्दीन समेत अन्य इलाकों में इसका असर देखने को मिला। कई जगहों पर वक्फ संशोधन एक्ट के खिलाफ नारेबाजी भी की गई।

समाज और राष्ट्र की धुरी हैं मजदूर

(1 मई अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस विशेष आलेख)

एक मई को हर वर्ष अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस या मजदूर दिवस या मई दिवस के रूप में मनाया जाता है। वास्तव में, यह दिवस मजदूरों और श्रमिक वर्गों का उत्सव है, जिसे अंतरराष्ट्रीय श्रम आंदोलन द्वारा बढ़ावा दिया जाता है और यह हर साल 1 मई, या मई के पहले सोमवार को होता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि 1 मई महाराष्ट्र दिवस और गुजरात दिवस के साथ भी मेल खाता है, जो 1960 में दो भारतीय राज्यों के गठन का प्रतीक है ।बहरहाल , यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि किसी भी देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति में मजदूरों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण और अहम् होती है और यह दिवस मजदूरों को उनके अधिकारों, रोजगार, उनकी कड़ी मेहनत और समाज और देश को उनके योगदान विशेष को सम्मान देने के क्रम में हर साल मनाया जाता है ।कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला अपनी एक कविता में मजदूरों की दशा पर कुछ यूं लिखा है-वह तोड़ती पत्थर, देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर, वह तोड़ती पत्थर, कोई न छायादार पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार, श्याम तन, भर बंधा यौवन नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार-बार प्रहार, सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।' बहरहाल, हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि किसी भी समाज और राष्ट्र का विकास तभी संभव हो सकता है, जब वहां के श्रमिक/मजदूर सुरक्षित और सम्मानित हों। यहां यह गौरतलब है कि इस दिवस की नींव सर्वप्रथम वर्ष 1886 में रखी गई थी, जब इस दिन को मनाने की मांग अमेरिका के शिकागो शहर में उठी, जब वहां के मजदूर अपने सम्मान और अधिकारों के लिए सड़क पर उतर आए थे। हालांकि, पहली बार मजदूर दिवस वर्ष 1889 में मनाने का फैसला लिया गया था। उल्लेखनीय है कि वर्ष 1886 से पहले अमेरिका में मजदूरों ने अपने हकों के लिए हड़ताल की। दरअसल ,मजदूरों की कार्य अवधि(काम के घंटों)को लेकर यह आंदोलन हुआ था, क्यों कि उस दौर में मजदूर 15-15 घंटे काम किया करते थे। आंदोलन के दौरान पुलिस ने मजदूरों पर गोलियां चलाईं , जिसमें कई श्रमिकों की जान चली गई और कई घायल हो गए। घटना के तीन साल बाद 1889 में अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें हर मजदूर की प्रतिदिन कार्य-अवधि 8 घंटे तय कर दी गई। वहीं एक मई को मजदूर दिवस के तौर पर मनाने का फैसला लिया गया। बाद में अमेरिकी मजदूरों की तरह ही दूसरे देशों में भी श्रमिकों के लिए 8 घंटे काम करने का नियम लागू कर दिया गया। यहां पाठकों को बताता चलूं कि पिछले साल मजदूर दिवस 2024 की थीम 'जलवायु परिवर्तन के बीच कार्यस्थल पर सुरक्षा और स्वास्थ्य सुनिश्चित करना' रखी गई थी, जिसमें मजदूरों को सामाजिक न्याय और सभ्य कार्य, उनकी सुरक्षा एवं स्वास्थ्य, डिजिटलीकरण और कार्य का भविष्य तथा कार्यस्थल पर लैंगिक समानता को शामिल किया गया था। कहना ग़लत नहीं होगा कि अंतरराष्ट्रीय मज़दूर दिवस हमें मज़दूरों और

ट्रेड यूनियनों के संघर्षों और उपलब्धियों की याद दिलाता है। सच तो यह है कि यह सामाजिक आंदोलनों और मज़दूरों की बेहतर अधिकारों, सभ्य मज़दूरी और उचित व्यवहार की माँगों को दर्शाता है ।उल्लेखनीय है कि भारत में पहला मजदूर दिवस समारोह वर्ष 1923 में चेन्नई (तब मद्रास) में लेबर किसान पार्टी ऑफ हिंदुस्तान द्वारा आयोजित किया गया था। पाठकों को बताता चलूं कि इस दिन की शुरुआत चेन्नई में कम्युनिस्ट नेता सिंगारवेलु चेट्टियार ने की थी। उन्होंने मजदूरों के हक और अधिकारों की मांग को लेकर मद्रास हाई कोर्ट के सामने पहली बार मजदूर दिवस की सभा आयोजित की थी। इसी सभा में पहली बार भारत में 'मई दिवस' मनाया गया। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि मजदूरों को काम करने के अधिकार(पसंद का काम करने का अधिकार), भेदभाव के विरुद्ध अधिकार(समान कार्य,समान वेतन), न्यायोचित और मानवीय कार्य स्थितियाँ(कार्यस्थल पर स्वास्थ्य और सुरक्षा, उचित कार्य समय, और अवकाश का अधिकार), सामाजिक सुरक्षा(बेरोजगारी, बीमारी, और अन्य स्थितियों में), मजदूरी की सुरक्षा(समय पर और पूरी मजदूरी का भुगतान, और न्यूनतम मजदूरी का अधिकार), संगठित होने और ट्रेड यूनियन बनाने का अधिकार आदि प्रदान किए गए हैं। इतना ही नहीं, मजदूरों को कार्यस्थल पर गोपनीयता का अधिकार, शिकायतों का निवारण, और प्रबंधन में भागीदारी का अधिकार भी है। आज मशीनीकरण, औधोगिकीकरण, तकनीक का युग है। आज भी मजदूरों को कम वेतन दिया जाता है,उनका शोषण किया जाता है और कठिन परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता है, जो कि सरासर ग़लत और मजदूरों के साथ घोर अन्याय है। मजदूरों के समर्पण, परिश्रम और योगदान का ही नतीजा होता है कि देश और समाज तरक्की के पथ पर अग्रसर होता है। मजदूर अपने कठिन परिश्रम से आम जनमानस के जीवन को आसान और सरल बनाते हैं, इसलिए देश और समाज निर्माण में उनकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। वे किसी भी राष्ट्र के विकास के असली स्तंभ और धुरी होते हैं ।अंत में अदम गोंडवी जी के शब्दों में बस यही कहूंगा कि -'वो जिसके हाथ में छाले हैं पैरों में बिवाई है,उसी के दम से रौनक आपके बंगले मे आई है।।'

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार,

मानवता के लिए जरूरी पूरी दुनिया से परमाणु बमों का खात्मा : राकेश मणि, सलीम

सुनील बाजपेई

कानपुर। पहलगाम आतंकी हमले को लेकर देश भर के सामाजिक संगठनों में भी जबरदस्त रोष व्याप्त है। आतंकवाद से जुड़े इस गंभीर मुद्दे को लेकर प्रतिक्रियाओं का भी दौर जारी है, जिसके क्रम में ट्रांस गोमती निवासी संघर्ष समिति के अध्यक्ष मोहम्मद सलीम और महामंत्री राकेशमणि पाण्डेय ने पहलगाम की नरसंहार की घोर निन्दा करते हुए सरकार से कठोरता कार्यवाही की मांग भी की है।

अध्यक्ष मो. सलीम और महामंत्री राकेशमणि पाण्डेय जारी जारी संयुक्त विज्ञप्ति में सभी पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था बनाये रखने के साथ ही दुनिया से आतंकवाद और उसे समर्थन देने वाले लोगों को भी दुनिया से अलग थलग करने को विश्व हित में बताते हुए यह भी कहा है कि सरकार यह सुनिश्चित करें कि पहलगाम पर्यटन स्थल पर सुरक्षा व्यवस्था पर चूक कैसे हुई।

भारत द्वारा पाकिस्तान के खिलाफ सफल कूटनीतिक प्रयासों के बीच चीन के सहयोग से पाकिस्तान और बंगलादेश पर भारत विरोधी षड़यंत्र करने का भी आरोप लगाते हुए मोहम्मद सलीम और राकेश कुमार पांडेय ने कहा कि भारत को दोनों तरफ से घेर कर चीन अपनी विस्तारवादी नीति को बढ़ाना चाहता है

इन दोनों नेताओं मोहम्मद सलीम और राकेश मणि पांडेय ने भारत की कूट नीति की सराहना भी की और कहा कि इसी के चलते दुनिया की अमेरिका व रूस जैसी महाशक्तियां भारत के साथ हैं लेकिन भारत अमेरिका से अधिक रूस पर विश्वास कर सकता है ,क्योंकि रुस ने पहले भी भारत के साथ अपनी मित्रता को प्रमाणित किया है। जबकि अमेरिका ने कई अन्य स्थितियों में भारत के विरूद्ध पाकिस्तान का साथ दिया है। मोहम्मद.सलीम व राकेशमणि पाण्डेय ने विश्व समुदाय के राष्ट्राध्यक्षों से दुनिया से सभी परमाणु बम समाप्त किये जाने की भी मांग करते हुए कहा कि दुनिया को आज सबसे ज्यादा जरूरत रोटी ,रोजी और चिकित्सा व्यवस्था की है।

आतंकवाद, विस्तारवाद और कटरता के कारण देश व विदेशो में चल रहीं विध्वंसक गतिविधियों पर रोक के लिए प्रभावी कार्यवाही को भी आवश्यक बताते हुए अध्यक्ष मोहम्मद सलीम और महामंत्री राकेश पांडेय यह भी कहा कि कुछ देश तनाव पैदा करके अपने सैन्य साजो सामान को बेच कर लाभ कमाने में लगे हैं। दोनों नेताओं ने कहा कि विकासशील देश अपनी आमदनी का अधिकाश भाग युद्ध सामग्री के खरीदने में व्यय करते हैं, जिससे उनकी स्थिति दिन प्रतिदिन दयनीय होती जा रही है।

अध्यक्ष मोहम्मद सलीम महामंत्री राकेश पांडे ने भविष्य में प्रबल संभावित युद्ध से होने वाले नुकसान पर भी चिंता जाहिर करते हुए सभी राष्ट्रध्यक्षों से एक मंच पर बैठकर मानव समाज के लिए विनाशक इन हालातों को समाप्त करने की भी बात कही और दावा किया कि अगर ऐसा नहीं किया जाएगा तो ना केवल लाखों करोड़ों बेगुनाह मारे जायेंगे बल्कि सारी विकासशील स्थितियां भी समाप्त हो जायेंगी।

जीवन का संतुलन: उजाला तभी अर्थपूर्ण है जब अंधेरा भी हो

जब सूरज की पहली किरण धरती को चूमती है, तो उसकी सुनहरी चमक हर नयन को मंत्रमुग्ध कर देती है। पंछी मधुर स्वरों में चहकते हैं, फूल रंग-बिरंगे उल्लास में खिलखिलाते हैं, और जीवन एक अनघट उत्सव-सा प्रतीत होता है, मानो प्रकृति स्वयं आनंद का गीत गा रही हो। किंतु, इस स्वर्णिम चमक के ठीक पीछे, एक मौन साये की भाँति छिपी रहती है छाया—वह अनकही कविता, जो रोशनी के मधुर रागों के बीच अपनी सौम्य उपस्थिति तलाशती है। छायाएँ न केवल अंधेरे का प्रतीक हैं, अपितु उन अनगिनत गहन कहानियों की साक्षी हैं, जो जीवन की गहराइयों में साँस लेती हैं, प्रत्येक क्षण को और भी रहस्यमयी व अर्थपूर्ण बनाती हैं।

जीवन में हर वह दृश्य जो हमें सुकून देता है, उसके पीछे एक अनदेखी तपस्या छिपी होती है। एक विशाल वृक्ष की छाया में बैठकर जब हम ठंडक का आनंद लेते हैं, तो क्या हम उस बीज की कहानी को याद करते हैं, जो मिट्टी के अंधेरे गर्भ में दबकर, तपकर, और टूटकर आज इस विशालता तक पहुँचा ? वह वृक्ष, जो आज अपनी शाखाओं से छाँव लुटा रहा है, कभी आंधियों से लड़ा होगा, तपती धूप में झुलसा होगा, और तूफानों के सामने अडिग खड़ा रहा होगा। उसकी छाया केवल शीतलता नहीं, बल्कि उसकी जीवटता की गाथा है। इसी तरह, मानव जीवन की हर मुस्कान भी एक छाया को अपने भीतर समेटे रहती है। जब हम किसी के चेहरे पर खिलखिलाहट देखते हैं, तो शायद ही उस मुस्कान के पीछे छिपी थकान, टूटी उम्मीदें, या दबे आँसुओं को महसूस कर पाते हैं। उदाहरण के लिए, विश्व-प्रसिद्ध लेखिका जे.के. राउलिंग की कहानी को लें। हैरी पॉटर की रचना से पहले, वह गरीबी, अस्वीकृति, और अवसाद की छाया से गुजरीं। उनकी मुस्कान, जो आज लाखों प्रशंसकों को प्रेरित करती है, कभी असफलताओं की परछाइयों में डूबी थी। यह छाया हमें सिखाती है कि साहस का असली चेहरा अक्सर खामोशी में छिपा होता है।

छायाएँ हमें यह समझाती हैं कि उजाले का मूल्य तभी है, जब अंधेरा उसका साथी हो। एक दीपक की लौ कितनी भी तेज क्यों न हो, उसके नीचे एक छोटी सी छाया अवश्य बनती है। यह छाया उस सत्य का प्रतीक है कि प्रकाश और अंधकार एक-दूसरे के पूरक हैं। यदि हम केवल रोशनी की आराधना करें और अंधेरे की पीड़ा को अनदेखा करें, तो हम जीवन के वास्तविक अर्थ को कभी नहीं समझ पाएँगे। पर्वत की ऊँचाई हमें आकर्षित करती है, पर क्या हम कभी उसकी गहराइयों में छिपी दरारों को देखते हैं ? माउंट एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाले पहले पर्वतारोही, सर एडमंड हिलारी और तेनजिंग नोर्गे की उपलब्धि को हम तालियों से नवाजते हैं, पर उनके रास्ते में आए हिमस्खलन, ठंड, और अनगिनत जोखिमों की छायाओं को शायद ही याद करते हैं। यह छायाएँ हमें बताती हैं कि हर सफलता के पीछे असफलताओं की परछाइयाँ होती हैं, और हर उपलब्धि के नीचे असंख्य त्याग छिपे होते हैं।

छायाएँ हमें केवल संघर्ष की कहानियाँ ही नहीं सुनातीं, बल्कि संवेदनशीलता का पाठ भी पढ़ाती हैं। वे हमें सिखाती हैं कि हर इंसान, हर कृति, और हर उपलब्धि के पीछे एक अनदेखी कहानी होती है। जब हम किसी कलाकार की पेंटिंग की प्रशंसा करते हैं, तो क्या हम उन अनगिनत रातों को महसूस करते हैं, जो उसने कैनवास के सामने बिताई होंगी ? क्या हम उन असंख्य असफल स्ट्रोक को देखते हैं, जो उस एक परफेक्ट स्ट्रोक के पीछे छिपे हैं ? उदाहरण के लिए, विन्सेंट वैन गॉग की 'द स्टारी नाइट' को देखें। यह चित्र आज कला की दुनिया में अमर है, पर इसे रचने वाला कलाकार अपने जीवनकाल में उपेक्षा और मानसिक यातना की छाया में जिया। उसकी कृति की चमक के पीछे उसकी अनकही पीड़ा की छाया थी, जो आज भी हमें यह सिखाती है कि हर रचना के पीछे एक मौन तपस्या होती है।

छायाएँ न केवल संवेदनशीलता, बल्कि विनम्रता भी सिखाती हैं। वे हमें बताती हैं कि यदि रोशनी हमारी है, तो उसकी छाया भी हमारी जिम्मेदारी है। इस चकाचौंध की दुनिया में, जहाँ हर कोई अपनी चमक को प्रदर्शित करने की होड़ में लगा है, छायाएँ हमें रुककर सोचने के लिए मजबूर करती हैं। वे हमें याद दिलाती हैं कि हर मुस्कान के पीछे एक कहानी है, हर उपलब्धि के पीछे एक संघर्ष है। जब हम किसी की सफलता पर तालियाँ बजाते हैं, तो हमें उसके पीछे की अनदेखी तपस्या को भी नमन करना चाहिए। जब हम किसी के चमकते चेहरे को देखते हैं, तो हमें उसकी थकी आँखों को भी महसूस करना चाहिए। यह संवेदनशीलता न केवल हमें दूसरों के प्रति करुणामय बनाती है, बल्कि हमें अपने जीवन के अंधेरे मोड़ों को भी सम्मानपूर्वक स्वीकार करना सिखाती है।

जीवन एक ऐसी कविता है, जिसमें रोशनी और छाया दोनों अपने-अपने छंद रचते हैं। यदि हम केवल उजाले के छंदों को गुनगुनाएँगे, तो यह कविता अधूरी रह जाएगी। छायाएँ हमें वह गहराई देती हैं, जो हमें पूर्ण बनाती है। वे हमें सिखाती हैं कि सुख और दु:ख, सफलता और विफलता, प्रकाश और अंधकार—सभी जीवन के अभिन्न अंग हैं। इसलिए, अगली बार जब हम किसी चमकते सूरज को देखें, तो उसकी छाया को भी निहारें। जब हम किसी की मुस्कान को देखें, तो उसके पीछे छिपी कहानी को सुनें। क्योंकि जीवन का असली सौंदर्य तब उजागर होता है, जब हम रोशनी और छाया—दोनों को एक साथ गले लगाना सीख जाते हैं। यह कला न केवल हमें संवेदनशील बनाती है, बल्कि हमारी आत्मा को एक अनोखी गहराई प्रदान करती है, जो हमें सच्चे अर्थों में मानव बनाती है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

"स्वतंत्रता का स्वप्न"

नारी की स्वतंत्रता की धारा,
चली हर मन में इक विचार सा।
बंधनों से बंधी नहीं वह,
स्वतंत्रता का है अब ख्वाब हमारा।

कभी कहा गया, तुम छोटी हो,
तुमसे न होगा कोई काम बड़ा।
पर भीतर की शक्ति ने कहा,
रखो ख्वाब, जियो तुम नया।

संवेदनाओं से भरी है उसकी बात,
गहरी नज़र में छुपा ज्ञान का साथ।
हर कदम पर लिखे हैं उसके गीत,
जो सच्चाई की ओर उसे ले जाए रीत।

हमें न चाहिए कोई दाम,
न कोई पुरस्कार, न कोई तमगा।
अपने विचारों से सजे-धजे,
हमें चाहिए बस अपार सवेरा।

सिर्फ़ हर बोझ को उठाना नहीं,
स्वतंत्रता की असली पहचान है —
अपनी राह खुद चुनना,
हर मुश्किल को अपने भीतर से पार करना।

हर वादा, हर विश्वास टूटे,
पर न हमारी ज़िन्दगी की राह।
हम आज़ाद हैं, हम संजीव हैं,
स्वतंत्रता से भरा है हर हमारा पक्ष।

यही हमारा संदेश है, यही है गीत,
नारी अपनी मुक्ति का ढूंढे न कोई मीत।
सच्ची स्वतंत्रता है जब मन का है विश्वास,
तब दुनिया बदलती है, हर कदम से नया प्रकाश।

---प्रियंका सौरभ

------घाटी के आँसू-----

घाटी जहाँ फूल खिलते थे, अब वहाँ सिसकती शाम,
वेदना की राख पर टिकी, इंसानियत की थाम।
कहाँ गया वह शांति-सूर्य, जो पूरब से उठता था?
आज वहाँ बस मौन है, जहाँ कल गीत बहता था।

पहलगाम की घाटियाँ, रोईं बहाये नीर।
धर्म पे वार जो हुआ, मानवता अधीर।
संगिनी का चीखना, गूँजा व्याकुल शोर।
छिन गया पल एक में, उसका जीवन भोर।

हिंदुस्तानी रक्त में, साहस भरा अपार।
आतंकी के हर कदम, होंगे अब लाचार।
श्रद्धा पे जो वार है, वह कायरता जान।
ऐसे नरपिशाच की, कब होगी पहचान?

वो जो चला तीर्थ को, दिल में लिए यकीन।
मार दिया उसको वहीं, क्यूँ इतना अधीन?
आस्था के मार्ग पर, अब भय का पहरा।
कहाँ गया वो ज़मीर, कहाँ गया सवेरा?

धूप-छाँव का देश है, फिर भी सबका एक।
नफरत के सौदागरों, मत खेलो ये खेल।
चुप्पी साधे लोग जो, देख रहे तमाशा।
एक दिन पूछेगा वक्त, कहाँ थी तुम्हारी भाषा?

अब न मौन रहो, न सहो ये छद्म धर्म का दंश,
हर दिल में दीप जलाओ, करुणा से करें नवं अंश।
सत्य ही शस्त्र बने, स्वर ही अग्निवाण,
इस घाटी की पीड़ा में, छिपा है हिंदुस्तान।

--- प्रियंका सौरभ

क्या कनाडा में भारतीय समुदाय ने खालिस्तानियों से मुंह फेर लिया है!

रामस्वरूप रावतसरे

कनाडा के संघीय चुनाव में एक बार फिर से जस्टिन ट्रूडो की लिबरल पार्टी ने जीत हासिल कर ली है। मार्क कार्नी, जिन्होंने जस्टिन ट्रूडो के इस्तीफे के बाद कनाडा के शासन को संभाला था, वो लिबरल्स की जीत के बाद फिर से देश के प्रधानमंत्री बनेंगे। हालांकि जस्टिन ट्रूडो के कार्यकाल में लिबरल पार्टी ने जनता का विश्वास खो दिया था लेकिन ट्रूडो के इस्तीफे और विपक्षी नेता पियरे पोइलिवर के बेहद खराब कैंपेन की वजह से मार्क कार्नी ने एक हारे हुए मैच को जीत में तब्दील कर दिया। लिबरल पार्टी ने डोनाल्ड ट्रंप के कनाडा विरोधी बयानबाजी को देश की संप्रभुता, अखंडता और राष्ट्रवाद से जोड़ दिया था, जिसका उन्हें जबरदस्त फायदा मिला। लिहाजा सवाल उठने लगे हैं कि जबकि कनाडा में एक बार फिर से लिबरल पार्टी की सरकार बनी है, क्या भारत के साथ संबंध सुधर पाएंगे?

मार्क कार्नी ने पिछले दिनों भारत के साथ तनावपूर्ण संबंधों पर कहा था कि ''मैं संकट के समय सबसे उपयोगी होता हूं।'' उनके इस बयान को इस तरह से देखा गया है कि उनकी जीत नई दिल्ली और ओटावा के बीच द्विपक्षीय संबंधों में संभावित सुधार ला सकती है जो पूर्व प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के कार्यकाल में काफी हद तक खराब हो गए थे। अपने चुनावी कैम्पेन के दौरान मार्क कार्नी ने कई मंदिरों का दौरा किया था और भारतीय समुदाय से जुड़ने की इच्छा जताई थी।

मार्क कार्नी ने इलेक्शन कैम्पेन के दौरान कहा था कि ''कनाडा जो करने की कोशिश कर रहा है, वह समान विचारधारा वाले देशों के साथ हमारे व्यापारिक संबंधों में विविधता लाना है और भारत के साथ संबंधों को फिर से बनाने के अवसर हैं। उस वाणिज्यिक संबंध के इर्द-गिर्द मूल्यों की साझा भावना होनी चाहिए और अगर मैं प्रधानमंत्री होता तो मैं इसे बनाने के अवसर की तरह देखता।''

मार्क कार्नी ने चुनाव अभियान के दौरान भारत को एक महत्वपूर्ण देश बताया था। इसके अलावा उन्होंने संकेत दिया था कि उनकी मंशा भारत के साथ संबंधों को सुधारने की है, खासकर कारोबारी संबंध को, क्योंकि कनाडा डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ युद्ध का नुकसान उठा रहा है। इसके अलावा मार्क कार्नी ने चुनावी कैम्पेन में अमेरिका के ऊपर से अपनी निर्भरता कम करने की बात कही थी, ऐसे में कनाडा के पास एक बड़े बाजार के तौर पर भारत ही बचता है, क्योंकि चीन के साथ उसके पहले से ही खराब संबंध हैं।

मार्क कार्नी के प्रधानमंत्री बनने के बाद भारत और कनाडा के बीच सीईपीए पर फिर से बातचीत शुरू होने की संभावना बढ़ी है। ये एक ट्रेड डील है, जिसे ट्रूडो ने भारत से विवाद के बाद रोक दिया था। जून २०२३ में ब्रिटिश कोलंबिया के सरे में एक गुरुद्वारे के बाहर कनाडा के नागरिक और खालिस्तानी आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के बाद भारत और कनाडा के संबंध बिगड़ने लगे थे। जस्टिन ट्रूडो ने हत्या का आरोप भारतीय एजेंट्स पर लगाए थे जिसके बाद भारत-कनाडा संबंध २०२३ में अपने सबसे निचले स्तर पर पहुंच गए थे। नई दिल्ली ने लंबे समय से ओटावा पर कनाडा के सिख प्रवासियों में चरमपंथ को बढ़ावा देने का आरोप लगाया था। जस्टिन ट्रूडो की सरकार में खालिस्तानी चरमपंथियों का वर्चस्व था।

इसके अलावा जगमीत सिंह, जो खालिस्तान समर्थक हैं, उनकी न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी के समर्थन से जस्टिन ट्रूडो सरकार चला रहे थे, लिहाजा जगमीत सिंह को भारत कनाडा संबंधों के खराब होने की सबसे बड़ी वजह माना गया लेकिन इस बार जगमीत सिंह बुरी तरह से चुनाव हार गया है। वो तीसरे स्थान पर रहा है, जो खालिस्तानियों के लिए बहुत बड़ा झटका है। चुनाव कैम्पेन के दौरान भारतीय मूल के कनाडाई नागरिक आदित्य झा, जो एक कारोबारी हैं और जिन्हें कनाडा का सर्वोच्च सम्मान ऑर्डर ऑफ कनाडा मिल चुका है, उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा था कि ''कनाडा के भारतीय समुदाय ने इस बार ऐसे तत्वों (खालिस्तानी) को हराने के लिए मतदान करने की योजना बनाई है और 30 से 35 सीटों को टारगेट किया गया है।'' उन्होंने कहा था कि, ''हिंदू समुदाय लिबरल पार्टी को नहीं बल्कि खालिस्तानियों को हराकर पार्टी के ऊपर से खालिस्तानियों के प्रभाव को खत्म करना चाहती है।''

जगमीत सिंह का चुनाव हारना और उसकी न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी को काफी कम वोट मिलने का मतलब है कि भारतीय समुदाय अपने मकसद में कामयाब रहा है। न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी को २०२५ के संघीय चुनाव में सिर्फ 7 सीटें मिली हैं जबकि पिछले इलेक्शन (२०२१) में उसे २४ सीटें मिली थीं। कनाडा में रहने वाले भारतीय समुदाय के कुछ लोगों का कहना है कि भारत विरोधी स्टैंड की वजह से भारतीय समुदाय, खासकर पंजाब के भारत समर्थक सिखों ने न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी को वोट नहीं दिया है। न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी का पूरा वोट बैंक तहस नहस हो गया है यानि संसद में उसका प्रभाव अब काफी कम हो गया है, लिहाजा नई सरकार के ऊपर खालिस्तानियों का प्रेशर नहीं रहेगा। जानकारों की माने तो कनाडा और भारत में मध्य फिर से सौहार्दपूर्ण संबंध बनेगें जिसका लाभ दोंनों देशों को होगा।

ख़ुशियों के ख़ूबसूरत रिश्तों नातों को तोड़ने में ग़लतफ़हमी संवादहीनता व नांसमझी की मुख्य भूमिका

एडवोकेट किशन सनमुख़दास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ में भारत ही एक ऐसा देश है जहां रिश्तोंनातों की बहुत गहराई से कद्र होती है, जो कि आदि अनादि काल से ही भारत की मिट्टी में समाया हुआ है इसलिए जो मानव भारत की मिट्टी पर पैदा हुआ है उसमें प्राकृतिक रूप से उसके मन में रिश्ते नातों,संबंधों की कद्र करना समा जाता है, परंतु समय का तकाजा है,उसके चकरे के घूमने से कई चीजें न केवल बदल जाती है,बल्कि व्यक्ति विशेष का स्वभाव अंदाज, आदत तो छोड़ो लेकिन उसके जीवन की दिनचर्या ही बदल जाती है जिसमें उसके रिश्ते नाते संबंधों में दरार आने लगती है, जिससे वह व्यक्ति खुशीयों की खूबसूरत लकीर से हटकर अकेलापन और दुख की ओर चल पड़ता है। मेरा मानना है कि इसका सबसे मजबूत कारण मिस अंडरस्टैंडिंग मिस कम्युनिकेशन व कम्युनिकेशन गैप है, चूंकि सामने वाला व्यक्ति, कहना कुछ चाहता है, हम समझते कुछ हैं, और हो कुछ और जाता है इसलिए सबसे पहले हमें उस अंडरस्टैंडिंग के अंदाज को समझने की ज़रूरत है,जिस लहजे में हमसे बोला जा रहा है, अगर हम यह तकनीक सीख गए तो मेरा पूरा विश्वास है हमारे रिश्ते नाते हमेशा दूर-दूर तक साधारण वह मजबूत रहेंगे। अवस्था में रहेंगे और हमें खुशियां मिलेगी क्योंकि खुशियों के लिए हमारे द्वारा बनाए संबंधों रिश्तो नातों को मजबूत स्वस्थ और खुशहाल बनाना जरूरी है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे रिश्तो के बिना जीवन बेकार है रिश्तो पर ध्यान देने की जरूरत है, ख़ुशियों के खूबसूरत रिश्तों नातों को तोड़ने में ग़लतफ़हमी संवादहीनता व नांसमझी की मुख्य भूमिका हैं ।ख़ुशहाल रिश्तों नातों को मज़बूत करने नजरअंदाजी झुकना व समर्पण का भाव होना अत्यंत ज़रूरी हैं।

साथियों बात अगर हम अपने जीवन में रिश्तों नातों को निभाने की करें तो,व्यक्ति के जीवन में उसका परिवार, दोस्त और रिलेटिव सबसे ज्यादा करीब होते हैं ।रिश्ता चाहें जो भी हो,उसे निभाने के लिए कई जरूरी बातों का ख्याल रखना होता है। परिवार में हर व्यक्ति की सोच और स्वभाव एक दूसरे से अलग होती है, लेकिन फिर भी सभी घर में एक दूसरे के साथ बैलेंस बनाकर चलते हैं ।कई बार व्यवहार बिल्कुल अलग होने और सोच एक दूसरे से न मिलने के कारण रिश्ते खराब हो जाते हैं और कई बार टूट भी सकते हैं,ऐसा कोई नहीं चाहता कि उनका रिश्ता उनके करीबियों से खराब हो जाए या टूट जाए, इसलिए अपने किसी भी रिश्ते में लापरवाही या नासमझी नहीं करनी चाहए। रिश्तो को खुशहाल रखने के लिए इन बातों को रेखांकित करना जरूरी है(1) इज्जत और सम्मान करें-रिश्ता चाहें माता पिता से हो या दोस्तों से हो, उसकी मर्यादा को हमेशा याद रखना चाहिए,कोई भी रिश्ता बिना सम्मान के ज्यादा दिन नहीं टिक पाता है अपने रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए एक दूसरे की इज्जत करना बेहद जरूरी है। (२) भरोसा करें और ईमानदार रहें-दुनियां के हर रिश्ते की नींव भरोसे पर टिकी होती है। भरोसा कमजोर पड़ते ही सालों पुराने और खून के रिश्ते भी टूट जाते हैं,इसीलिए हमको अपने किसी भी रिश्ते में बेवजह शक नहीं करना चाहिए और अपनों का भरोसा कभी नहीं तोड़ना चाहिए। (३) इन चीजों को करने से बचेंरोक-टोक ना करें-हर समय की रोक-टोक किसी भी व्यक्ति को परेशान कर सकती है और वे आपसे धीरे धीरे दूर हो सकते हैं, इसीलिए बेवजह बात बात पर रोक टोक ना करें और सामने वाले को उनका पूरा समय देने की कोशिश करें। (4) मिसकॉम्युनिकेशन से बचें-किसी भी रिश्ते में कम्युनिकेशन गैप आने से रिश्ते खराब हो जाते हैं, इस स्थिति से बचने के लिए मन में कोई बात ना रखें और खुलकर बात करें और दूसरो को भी अपने मन की बात कहने का मौका दें।

साथियों बात अगर हम रिश्ते खराब होने के कारणों की करें तो, जब जब किसी रिश्ते के बीच में मैं का भाव आ जाता है तो है रिश्ता खराब होना निश्चित होता है,उसरिश्ते को तब तक नहीं बचाया जा सकता जब तक की मैं का भाव मिटा न दिया जाए ।और यह हमारी आपसी तालमेल पर ही निर्भर करता है कभी हम अपनी गलती माने, कभी सामने वाला अपनी गलती माने, इसी प्रकार से जिंदगी खुशी पूर्वक चलती रहती है। परंतु यदि हम यह सोच कर बैठ जाएंगे कि हम तो गल्ती करते ही नहीं, तो फिर रिश्ता निभाना मुश्किल हो जाएगा। कई बार हमको उस बात के लिए भी सामने वाले से माफी मांग लेनी चाहिए, जिसमें कि हमारा कोई दोष नहीं है,क्योंकि कभी-कभी यह समय की आवश्यकता होती है और बाद में सही समय पर उस व्यक्ति को उसकी गलती का एहसास दिलाया जा सकता है ।परंतु यदि अभी लड़ाई चल रही है और हम भी अपनी बात पर अड़ गए, तो फिर विवाद का अंत होना संभव ही नहीं है, विवाद बढ़ता ही चला जाएगा और यह स्थिति हमारे जीवन में अशांति और क्लेश घर कर जाएगा। एक सफल रिश्ते की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण कुंजी है,विश्वास और एक दूसरे पर भरोसा, इसे कभी भी नहीं टूटने देना चाहिए, क्योंकि यदि एक बार किसी का भरोसा आप पर से उठ गया, तो यकीन मानिए फिर दोबारा से उस व्यक्ति को भरोसे में ला पाना असंभव ही होता है वह हमेशा हमें शक की दृष्टि से ही देखेगा। यदि एक बार हमारे जीवन में शक नामक घुन लग गया तो यकीन मानिए फिर वह हमको तबाह करके ही छोड़ता है। पुरानी कहावत है लव रिक्वायर्स टोलरेंस ।इसका सीधा अर्थ है प्यार में नज़रन्दाज़ी यानि झुकना जरुरी है ।यानि अगर झुकोगे नहीं,तो टूट जाओगे (रिश्ता खत्म) तलाक के 90 प्रतिशत मामले अकड़ का नतीजा होते हैं। दोनों में से कोई भी झुकने को तैयार नहीं होता। इसलिए रिश्ता टूट जाता है ।गलती हुई है,तो सॉरी बोलिए ।बात को खत्म करिये ।नज़र अन्दाज करने की आदत डालिये ।छोटी सी गलती को तूल देना अच्छा नहीं !अगर रिश्ता पति पत्नी का है,तो न कोई छोटा है,न कोई बड़ा ।टोकरी शहतूत के पेड़ की टहनी से इसलिए बनती है कि उसमें लचक होती है ।वह मोड़ने पर टूटती नहीं ।यानि जो व्यक्ति झुकना नहीं जानता,वह टूट जाता है। इसलिए रिश्ता जिन्दा रखना है,तो झुकना सीखें वरना,एक दिन राख के ढेर में यादों को तलाशते रहजाएंगे ।रिश्तों में एक दूसरे को स्पेस देना बहुत जरूरी है। क्योंकि जब तक हम उनसे दूर नहीं जाएंगे वो आपकी कमी को कभी महसूस नहीं कर पाएंगे ।और अगर रिश्तों को बेहतर बनाने की सोच से हम नजदीकियां बढ़ाएगे तो कहीं उलटा ही ना हो जाए,क्योंकि ज्यादा मिठास भी शुगर कर देती है,हाहाहा... ।इसलिए थोड़ी दूरियां बनाइये ताकि हमारी कमी उन्हें महसूस हो,हमको याद करने का उन्हें अवसर दे।

साथियों बात अगर हम रिश्तो को जोड़े रखने की टिप्स को समझने की करें तो, रिश्तों को जोड़े रखने के लिए कभी अंधा कभी बहरा तो कभी गूंगा होना पड़ता है ?जी हां ! यह रिश्ते को ही नहीं आज अपने घर में भी हर बुजुर्ग को बच्चों के साथ रहना, खाना है,तो यह करना चाहिए। यह उपाय हमको हर समस्या से बचाए रखता है। (1) समझदारी-रिश्तों को मजबूती से जोड़ने के लिए समझदारी बहुत महत्वपूर्ण है, जिससे आप दूसरों की भावनाओं को समझ सकते हैं ।(२) संवाद कौशल-सही संवाद कौशल रखना रिश्तों को मजबूत बनाए रखने में मदद करता है, जिससे समस्याओं का समाधान हो सकता है। (३) समर्पण-रिश्तों को टिकाऊ बनाए रखने के लिए समर्पण बहुत महत्वपूर्ण है, जिससे आप एक दूसरे के साथ खुशियों और दु:खों का हिस्सा बन सकते हैं। (4) सहमति और समर्थन-रिश्तों में सहमति और समर्थन देना जरूरी है ताकि हर कदम पर आप एक दूसरे के साथ हों। (५) आपसी आत्मविश्वासरिश्तों को मजबूत रखने के लिए आपसी आत्मविश्वास महत्वपूर्ण है, ताकि आप खुद को और दूसरों कोसमझ सकें ।जो लोग रिश्तो के प्रतिवफादार नहीं होते, और उनकी मर्यादा नहीं समझते या उनकी कीमत नहीं समझते, ऐसे लोग अपने रिश्तो को आसानी से तोड़ देते हैं ।रिश्ते तोड़ते समय उनके मन में जरा सा भी संकोच या शर्म महसूस नहीं होती क्योंकि ऐसे लोग शर्म और संकोच से परे होते हैं, वह जानते ही नहीं है कि ,शर्म, मर्यादा और संकोच क्या कहलाता है ? ऐसे व्यक्तियों से यदि रिश्ता टूट जाता है तो दुख नहीं करना चाहिए क्योंकि यह व्यक्ति आगे जाकर हमें और ज्यादा परेशान करते हैं ।हमें यदि कल परेशान होना है तो ,क्यों ना हम इनके रिश्ते से टूट कर ,अभी बिखर कर फिर नए तरीके से संभलकर जीवन को आगे बढ़ाएं।

अत: अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि खुशियों के खूबसूरत रिश्तों नातों को तोड़ने में ग़लतफ़हमी संवादहीनता व नांसमझी की मुख्य भूमिका ख़ुशहाल रिश्तों नातों को मज़बूत करने नजरअंदाजी झुकना व समर्पण का भाव होना अत्यंत ज़रूरी रिश्तों नातों को ख़ुशहाल बनाने आपसी आत्मविश्वास, समर्पण सहमति समर्थन व समझदारी का भाव रूपी अस्त्र की महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

नई जनरेशन की सिट्रोएन C5 एयरक्रोस हुई पेश, मिलेगा हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक पावरट्रेन

परिवहन विशेष न्यूज

सिट्रोन ने हाल ही में 2025 Citroen C5 Aircross को पेश किया है। यह नई जनरेशन की Citroen C5 Aircross होने वाली है। इसमें हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक पावरट्रेन देखने के लिए मिलेगा। इतना ही नई इसके बाहर और अंदर के डिजाइन में काफी बदलाव देखने के लिए मिलेगा। इसके साथ ही इसमें कई नए बेहतरीन फीचर्स भी देखने के लिए मिलेगा।

नई दिल्ली। नई जनरेशन की Citroen C5 Aircross को पेश किया गया है। जिसके बाद से उम्मीद लगाई जा रही है कि इसे जल्द ही लॉन्च किए जाएगा। नई जनरेशन की C5 Aircross में कई बदलाव देखने के लिए मिलेंगे। इन बदलावों में इंजन से लेकर डिजाइन और नए फीचर्स तक देखने के लिए मिलेंगे। इतना ही नहीं, इसके इंटीरियर में भी बदलाव देखने के लिए मिलेगा। आइए जानते हैं कि 2025 Citroen C5 Aircross में क्या नया देखने के लिए मिलेगा?

कैसा होगा डिजाइन?

2025 Citroen C5 Aircross का बाहरी डिजाइन काफी बेहतरीन होने वाला है। इसमें शार्प लाइन्स और स्मूथ राउंडेड सरफेस दोनों का कॉम्बीनेशन देखने के लिए मिल सकता है। इसमें तीन-पीस C-शेप्ड LED DRLs के साथ स्लिम हेडलैम्प्स को कॉन्सेप्ट जैसा ही रखा गया है। इसके बंपर को दो दो-टोन, ब्लैंक्ड-आउट ट्रीटमेंट दिया गया है, जिसमें फ्लश हॉरिजॉन्टल स्लैट्स और नीचे एक ब्लैक-आउट सेंट्रल एयर इनटेक दिया गया है।

Citroen C5 Aircross

साइड प्रोफाइल में फ्लश डोर हैंडल दिया गया है। इसमें 20-इंच के अलॉय को थोड़ा कम किया गया है। इसके डी-पिलर के चारों ओर की डिटेलिंग छत के लिए एक फ्लोटिंग इफ़ेक्ट दिया गया है और शोल्डर लाइन काफी मस्कुलर दिखाई देती है। इसके पीछे की तरफ सी-शेप्ड थीम उभरे हुए टेल-लैंप दिए गए हैं, जिसमें एक अच्छा 3D इफेक्ट दिया गया है। इसके रियर बम्पर को ग्लॉस और मैट फिनिश का कॉम्बीनेशन दिया गया है।

इंटीरियर काफी ज्यादा होगा प्रीमियम

नई जनरेशन Citroen C5 Aircross में डैशबोर्ड की अधिकांश जगह पर एक विशाल पोर्ट्रेट-ओरिएंटेड टचस्क्रीन देखने के लिए मिलेगी। इसमें फोम फैब्रिक पैडिंग देखने के लिए मिलेगी, जो हल्के या गहरे रंगों की होने वाली है।

इसके सेंटर कंसोल पर कुछ फिजिकल स्विचगियर दिए गए हैं, जबकि AC वेंट्स डैशबोर्ड के ऊपर एक स्लिम बैंड में बहुत अच्छे से छिपाए गए हैं। इसमें 10 इंच का डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और एक वैकल्पिक हेड-अप डिस्प्ले भी देखने के लिए मिलेगा। इसमें साइड बोलस्टर अब इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल देखने के लिए मिलेगा। वहीं, पीछे की सीटें 21 से 33 डिग्री के बीच रिक्लाइन हो सकेंगी। साथ ही पीछे की सीटों पर सेंटर कंसोल में कपहोल्डर्स और USB-C चार्जिंग पोर्ट देखने के लिए मिलेगा।

कैसा होगा इंजन?

नई जनरेशन Citroen C5 Aircross को नए STLA मीडियम आर्किटेक्चर पर डेवलप किया गया है। इसमें दो हाइब्रिड हैं- एक माइल्ड और एक प्लग-इन और साथ ही एक ऑल-इलेक्ट्रिक ड्राइवट्रेन भी देखने के लिए मिलेगी। इसमें 1.2-लीटर तीन-सिलेंडर पेट्रोल इंजन देखने के लिए मिलेगा, जो 134hp की पावर जनरेट करेगा और इसका इलेक्ट्रिक मोटर 12hp की पावर जनरेट करेगा, जो 0.9kWh बैटरी पैक का होगा। इसके इलेक्ट्रिक मोटर को 6-स्पीड ड्यूल-क्लच ऑटोमैटिक के साथ जोड़ा जाएगा। वहीं, इसका दूसरा पावरट्रेन 1.6-लीटर चार-सिलेंडर पेट्रोल इंजन का होगा, जो 125hp इलेक्ट्रिक मोटर के साथ मिलकर 195hp की पावर जनरेट करेगा। इसमें 21kWh की बैटरी मिलेगी, जो 85km की ऑल-इलेक्ट्रिक रेंज तक दे सकती है।

Citroen C5 Aircross

वहीं, इसका ऑल-इलेक्ट्रिक C5 एयरक्रॉस को 73kWh बैटरी पैक से साथ पेश किया जा सकता है, जो 520km की रेंज या 97kWh बैटरी के साथ 680km की रेंज के साथ लॉन्च किया जा सकता है। इसके पहले मॉडल में 213hp की फ्रंट इलेक्ट्रिक मोटर और दूसरे मॉडल में 233hp की फ्रंट इलेक्ट्रिक मोटर देखने के लिए मिलेगा।

ईवी खरीदने पर महाराष्ट्र में होगा तगड़ा फायदा, टैक्स के अलावा मिलेगी टोल पर बड़ी छूट, जानें पूरी डिटेल

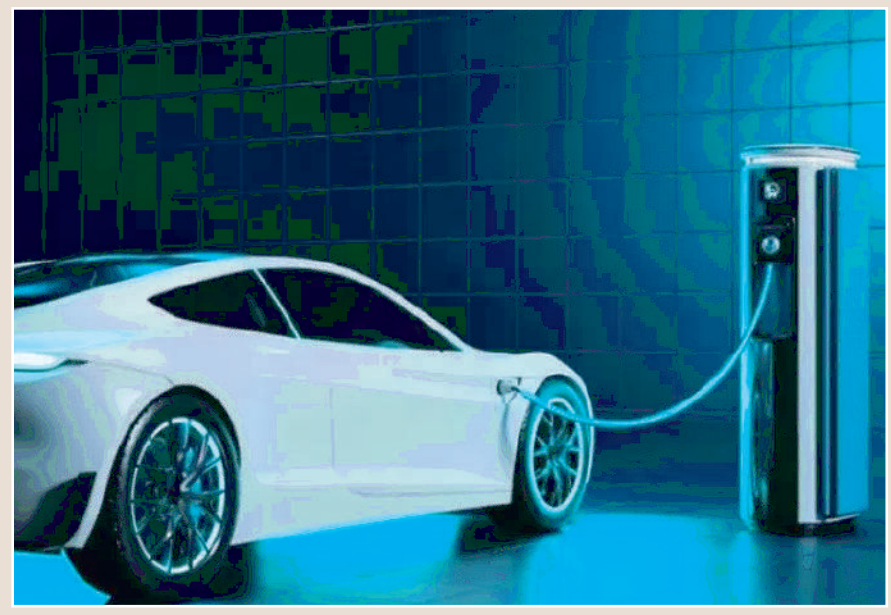

भारत में लगातार इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग में बढ़ोतरी हो रही है। केंद्र के साथ ही राज्य सरकारों की ओर से भी ईवी खरीदने पर लोगों को सब्सिडी दी जा रही है। इसी क्रम में महाराष्ट्र सरकार की ओर से जल्द ही ईवी पर तगड़ा फायदा देने की तैयारी की जा रही है। सरकर की ओर से किस तरह के कदम उठाए जा रहे हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। दुनियाभर के साथ ही भारत में भी इलेक्ट्रिक वाहनों पर जोर दिया जा रहा है। केंद्र सरकार की ओर से 2019 से ही ईवी खरीदने पर सब्सिडी दी जा रही है तो कई राज्य सरकारों की ओर से भी कई कदम उठाए जा रहे हैं। महाराष्ट्र सरकार की ओर से नई ईवी पॉलिसी में किस तरह घोषणा की गई है। इससे ईवी चलाने वालों को किस तरह से फायदा मिल सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

महाराष्ट्र सरकार दे सकती है बड़ी छूट

महाराष्ट्र सरकार की ओर से इलेक्ट्रिक वाहन के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए नई तरह से छूट देने की तैयारी की गई है। राज्य सरकार की ओर से नई इलेक्ट्रिक व्हीकल पॉलिसी 2025 को मंजूरी दी गई है, जिसमें यह जानकारी दी गई है।

कैसे मिलेगी छूट

जानकारी के मुताबिक महाराष्ट्र सरकार राज्य में इलेक्ट्रिक वाहन का उपयोग करने वालों को टोल प्लाजा पर भी छूट दी जाएगी। हालांकि अभी चुनिंदा हाइवे और एक्सप्रेस वे पर ही इस तरह की छूट दी जा रही है।

कहां मिलेगी छूट

राज्य सरकार की नीति के अनुसार, मुंबई-पुणे यशवंतराव चव्हाण एक्सप्रेसवे, अटल बिहारी वाजपेयी शिवरी-न्हावा शेवा अटल सेतु, हिंदू हृदय सम्राट बालासाहेब ठाकरे महाराष्ट्र समृद्धि महामार्ग पर यात्रा करने वाले सभी चार पहिया यात्री इलेक्ट्रिक वाहन और बसों को टोल से पूरी तरह छूट दी जाएगी। साथ ही लोक निर्माण विभाग के अधिकार क्षेत्र में अन्य राज्य और राष्ट्रीय राजमार्गों पर चार पहिया इलेक्ट्रिक वाहनों को 50 प्रतिशत की रियायत दी जाएगी।

ईवी को मिल रहा बढ़ावा

राज्य सरकार की नई ईवी पॉलिसी 2025 में नीति के तहत राज्य में बेचे और रजिस्टर्ड सभी इलेक्ट्रिक वाहनों को मोटर वाहन टैक्स और रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र या रिन्यूअल शुल्क से छूट दी गई है। सरकार की ओर से जारी की गई रिलीज में कहा गया है कि राज्य में इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने की सुविधा के लिए राज्य में एक मजबूत चार्जिंग बुनियादी ढांचा विकसित किया जाएगा। राज्य और राष्ट्रीय राजमार्गों पर हर 25 किलोमीटर की दूरी पर इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए चार्जिंग सुविधाएं स्थापित की जाएंगी।

इसमें कहा गया है कि बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ाने के लिए 2030 तक वाहन खरीद पर छूट दी जाएगी। इलेक्ट्रिक दोपहिया, तिपहिया, चार पहिया वाहन (गैर-परिवहन), राज्य परिवहन उपक्रमों की बसों (एम 3, एम 4) के साथ ही निजी, राज्य/शहरी परिवहन उपक्रमों की बसों के लिए मूल कीमत का 10 फीसदी की छूट दी जाएगी।

इसमें कहा गया है कि बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ाने के लिए 2030 तक वाहन खरीद पर छूट दी जाएगी। इलेक्ट्रिक दोपहिया, तिपहिया, चार पहिया वाहन (गैर-परिवहन), राज्य परिवहन उपक्रमों की बसों (एम 3, एम 4) के साथ ही निजी, राज्य/शहरी परिवहन उपक्रमों की बसों के लिए मूल कीमत का 10 फीसदी की छूट दी जाएगी।

Lamborghini Temerario भारत में हुई लॉन्च, 2.7 सेकेंड में पकड़ती है 0-100 की स्पीड, जानें कितनी है कीमत

परिवहन विशेष न्यूज

इटली की सुपर कार निर्माता Lamborghini की ओर से कई बेहतरीन कारों और एसयूवी की बिक्री दुनियाभर में की जाती है। निर्माता Lamborghini Temerario को औपचारिक तौर पर भारत में लॉन्च कर दिया गया है। इसमें कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस तरह के फीचर्स इसमें दिए गए हैं और किस कीमत पर सुपरकार को लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। दुनिया के कई देशों में इटली की सुपर कार निर्माता Lamborghini की ओर से बेहतरीन कारों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से औपचारिक तौर पर भारतीय बाजार में भी Lamborghini Temerario को लॉन्च कर दिया गया है। इस कार में किस तरह के फीचर्स दिए गए हैं। कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

सुपर कार निर्माता Lamborghini की ओर से नई सुपर कार Temerario को औपचारिक तौर पर भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया गया है। इस कार को हाइब्रिड तकनीक वाले इंजन के साथ ऑफर किया गया है और कई बेहतरीन फीचर्स इसमें दिए गए हैं।

निर्माता की ओर से इस सुपर कार में चार लीटर की ट्विन टर्बो वी8 इंजन दिया जा रहा है। इस इंजन के साथ इसमें हाइब्रिड तकनीक को भी दिया गया है, जिसमें तीन मोटर से कार को पावर मिलेगी। इसका वी8 इंजन ही 800 बीएचपी की पावर और 730 न्यूटन मीटर का टॉर्क देता है। हाइब्रिड तकनीक के साथ इसकी पावर 920 हॉर्स पावर और 800 न्यूटन मीटर का टॉर्क जनरेट करेगी। इस कार को 0-100 किलोमीटर की स्पीड से सिर्फ 2.7 सेकेंड में ही चलाया जा सकता है। इसकी टॉप स्पीड 343 किलोमीटर प्रति घंटा तक है।

लैम्बॉर्गिनी की नई सुपर कार Lamborghini Temerario में शार्क नोज़ बंपर के साथ हेक्सागोनल एलईडी हेडलाइट्स, 20 और 21 इंच अलॉय व्हील्स, कार्बन फाइबर, 12.3 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 8.4 इंच पोट्रेट टच स्क्रीन के साथ 9.1 इंच पैसेंजर स्क्रीन दी गई है। साथ ही हीटेड और वेंटिलेटिड सीट्स जैसे फीचर्स को भी इसमें दिया जाएगा।

निर्माता की ओर से इसे भारतीय बाजार में छह करोड़ रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है।

Lamborghini की ओर से Temerario को सुपर कार कैटेगरी में लॉन्च किया गया है। भारत में इसका सीधा मुकाबला Ferrari, Aston Martin और Mclaren जैसी सुपर कारों के साथ होगा।

5 साल बाद वापसी कर रही हैं मर्सिडीज की ये कार, पहले के मुकाबले ज्यादा होगी प्रीमियम और शानदार

परिवहन विशेष न्यूज

नई Mercedes AMG GT 63 भारतीय बाजार में 27 जून 2025 को लॉन्च होने वाली है। इसके पहले जनरेशन को भारत में साल 2020 में बंद कर दिया गया है जिसके बाद यह भारत में 5 साल बाद वापसी करने जा रही है। यह पहले जनरेशन के मुकाबले काफी बड़ी होने वाली है और इसमें चार लोगों की बैठने की सीट मिलेगी। पहले केवल दो सीट मिलती थी।

नईदिल्ली। भारतीय बाजार में नई जनरेशन की Mercedes AMG GT 63 लॉन्च बोने वाली है। इसमें 4मैटिक+ और उससे भी ज्यादा परफॉरमेंस मिलेगा। इसे भारत में 27 जून को लॉन्च किया जाएगा। कंपनी ने जनवरी में घोषणा की थी कि वह साल 2025 में कुल 8 गाड़ियां लॉन्च करेंगी। इसके भारत में लॉन्च होने के साथ ही इसकी देश में 5 साल के बाद वापसी होने जा रही है। इसके पहले जनरेशन को साल 2020 में बंद कर दिया गया था। आइए जानते हैं कि नई Mercedes AMG GT 63 किन बेहतरीन फीचर्स के साथ भारत में लॉन्च होने वाली है।

नई Mercedes AMG GT 63 में क्या होगा खास?

दूसरी जनरेशन की AMG GT 63 पहले जनरेशन की तुलना में बड़ी है। यह पिछले मॉडल की तुलना में 182 मिमी लंबी, 45 मिमी चौड़ी और 66 मिमी ऊंची है। इसका व्हीलबेस 70 मिमी लंबा है। इसमें 2+2 सीटिंग लेआउट दिया गया है, जबकि पहले वाली मॉडल में केवल दो सीट ही मिलते थें।

इसमें पैसेंजर के लिए ज्यादा जगह के साथ-साथ बूटट स्पेस को भी काफी ज्यादा बढ़ाया गया है। इसमें एएमजी-स्पेक स्टीयरिंग व्हील और एकीकृत हेडरेस्ट के साथ स्कल्प्चर्ड फ्रंट स्पोर्ट सीटों से लेकर 12.3-इंच इंस्ट्रूमेंट पैनल और 11.9-इंच पोर्ट्रेट-ओरिएंटेड इंफोटेनमेंट डिस्प्ले तक देखने के लिए मिलेंगे।

कैसा होगा इंजन?

नई GT 63 में 4.0-लीटर ट्विन-टर्बो V8 इंजन देखने के लिए मिलेगा, जो 585hp की पावर और 800Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। इसमें नए 9-स्पीड डुअल-क्लच ऑटोमैटिक गियरबॉक्स देखने के लिए मिलेगा, जो कंपनी के 4Matic+ ऑल-व्हील ड्राइव सिस्टम के ज़रिए सभी चार पहियों तक पावर पहुंचाएगा। कंपनी इसको लेकर दावा करती है कि यह महज 3.2 सेकेंड में 0-100kph की स्पीड पकड़ लेती है। इसकी टॉप स्पीड 315kph है।

कैसा होगी AMG GT 63 Pro?

इसके AMG GT 63 Pro वेरिएंट में AMG GT 63 की तरह ही फीचर्स देखने के लिए मिलेंगे। इसके पावरट्रेन में कुछ अलग दिया जा सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, प्रो वेरिएंट उसी V8 इंजन का अपग्रेडेड वर्जन होगा, जो 612hp और 850Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। वहीं, यह महज 10.9 सेकेंड में 0-200 किमी प्रति घंटे की रफ़्तार पकड़ लेगी। इसकी टॉप स्पीड 317 किमी प्रति घंटे हो सकती है।

कितनी होगी कीमत?

नई जनरेशन Mercedes AMG GT 63 की कीमत 3 करोड़ रुपये के आसपास हो सकती है। वहीं, इसके GT 63 Pro 4Matic+ की कीमत इससे 20-40 लाख रुपये ज्यादा हो सकती है।

लॉन्च से पहले BMW R 1300 RS की आई डिटेल्स; ट्रैक्शन कंट्रोल, राइडिंग मोड समेत मिलेंगे ये फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में जल्द ही नई BMW R 1300 RS लॉन्च होने वाली है। इस नई स्पोर्ट टूरर मोटरसाइकिल को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लेकर आया जा रहा है। इसके साथ ही इसमें ट्रैक्शन कंट्रोल और इंजन ब्रेकिंग कंट्रोल समेत तीन राइडिंग मोड भी मिलेंगे। भारत में यह मई 2025 में लॉन्च हो सकती है जिसकी कीमत 21 लाख रुपये तक हो सकता है।

नई दिल्ली। BMW मोटोराड भारतीय बाजार में अपनी नई स्पोर्ट टूरर मोटरसाइकिल R 1300 RS को लेकर आने वाली है। कंपनी नए जनरेशन R 1300 RS को भारत में जल्द ही लॉन्च करने वाली है। इसके लॉन्च होने से पहले कंपनी ने रिवील किया है। यह पुराने जनरेशन के मुकाबले काफी बेहतरीन होने वाली है और यह एक फेयर्ड वर्जन होने वाली है। इसमें बॉक्सर इंजन देखने के लिए मिल सकता है। आइए जानते हैं कि BMW R 1300 RS कैसी मोटरसाइकिल होने वाली है।

कैसा होगा इसका इंजन?

BMW ने R 1300 RS की डिटेल्स का इसके लॉन्च होने से पहले खुलासा कर दिया है, जो एक स्पोर्ट टूरर मोटरसाइकिल है। इसमें 1,300cc बॉक्सर इंजन इस्तेमाल किया गया है। इसका इंजन 145hp की पावर और 149Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। R 1300 RS में 17 लीटर का फ्यूल टैंक दिया गया है।

ब्रेक और सस्पेंशन

इसके प्रेम को सस्पेंड करने के लिए एक USD फोर्क और एक पैरालेवर EVO यूनिट दिया गया है, जिसमें मानक के रूप में प्रीलोड और डंपिंग एडजस्टमेंट मिलता है। इसमें USD फोर्क में एडजस्टेबल सप्रिंग रेट मिलता है, जिससे यह R 1300 R के बाद दूसरी सीरीज प्रोडक्शन बाइक बन जाती है, जिसमें यह फीचर मिलता है।

इसमें आगे की तरफ ट्विन डिस्क देखने के लिए मिलेगा, जिसे रेडियली माउंटेड 4-पिस्टन कैलिपर्स के साथ जोड़ा जाता है। वहीं, पीछे की तरफ सिंगल डिस्क दिया गया है। इसके दोनों सिरों पर 17-इंच के पहिएं दिए गए हैं। नई R 1300 RS में नए कास्ट एल्युमीनियम व्हील दिए गए हैं।

BMW R 1300 RS के फीचर्स

इसमें ट्रैक्शन कंट्रोल और इंजन ब्रेकिंग कंट्रोल दिया गया है। इसमें तीन राइडिंग मोड भी मिलते हैं, जो इको, रेन और रोड है। इसमें ऑप्शनल राइडिंग पैकेज प्रो एक्सट्रा डायनेमिक और डायनेमिक प्रो मोड को दिया गया है। इसे चार वेरिएंट में लेकर आया जाएगा, जिनमें अलग-अलग कलर ऑप्शन मिलेगा, जो बेसिक वर्जन, ट्रिपल ब्लैक, परफॉरमेंस और ऑप्शन 719 क्यूयामाका होंगे।

कितनी होगी कीमत?

BMW मोटोराड ने अभी तक R 1300 RS के भारत में लॉन्च होने की तारीख की घोषणा नहीं की है, लेकिन हमें उम्मीद है कि इसे मई 2025 में लॉन्च किया जा सकता है। भारत में इसकी कीमत 21.20 लाख रुपये के आसपास हो सकती है।

बीमारियों के आगे हारती दवाइयां

विजय गर्ग

दुनिया के सभी मुल्कों को प्राथमिकता के तौर पर इस पर गौर करना चाहिए। कोरोना के वक्त कोविड-19 का महज लक्षण के आधार पर इलाज होने के बावजूद लाखों की संख्या में लोगों की मौत हो गई थी। अमेरिका, इटली, चीन और भारत प्रमुख देश थे, जहां कोरोना का असर व्यापक था। तभी से यह लगने लगा था कि भविष्य में नई बीमारियों की वजह से उपयुक्त | दवाओं के न मिलने या दवा का असर मामूली होने की वजह से हर वक्त लोगों में दहशत बनी रह रह सकती है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) ने रोगाणुरोधी प्रतिरोध यानी एएमआर (एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध) को मानवता के सामने शीर्ष दस वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरों में से एक घोषित किया है। एएमआर तब होता जब बैक्टीरिया, विषाणु और कुछ परजीवी जैसे सूक्ष्म जीव एंटीबायोटिक्स जैसे रोगाणुरोधी द्वारा मारे जाने का प्रतिरोध करने के लिए तंत्र विकसित करते हैं। इस प्रकार संक्रमण बना और दूसरों में फैलता रहता है। जीवाणुरोधी घटक का तेजी से दुनिया के सार्वजनिक स्वास्थ्य संकटों के रूप में उभरने के साथ जलवायु परिवर्तन के बाद दूसरे स्थान पर 'डायग्नोस्टिक स्टीवर्डशिप' यानी दवाओं के उचित प्रयोग की भूमिका को न समझना है। दवाओं का उपयुक्त और बेहतर इस्तेमाल का तरीका और उसके गुण-दोषों को न जानने की वजह से शरीर कई तरह की बीमारियों का घर तो बनता ही है, वे दवाएं भी काम करना बंद कर देती हैं, जो तो शुरुआत में बेहतर असर कर रही थीं। यह समस्या दुनिया भर में है। संगठन के मुताबिक यह वैश्विक स्वास्थ्य खतरा व्यापक स्तर पर बढ़ने की आशंका है।

दुनिया के सभी मुल्कों को प्राथमिकता के तौर पर इस पर गौर करना चाहिए। कोरोना के वक्त कोविड-19 का महज लक्षण के आधार पर इलाज होने के बावजूद लाखों की संख्या में लोगों की मौत हो गई थी। अमेरिका, इटली, चीन और भारत प्रमुख देश थे, जहां कोरोना का असर व्यापक था। तभी से यह लगने लगा था कि भविष्य में नई बीमारियों की वजह से उपयुक्त | दवाओं के न मिलने या दवा का असर मामूली होने की वजह से हर वक्त लोगों में दहशत बनी रह रह सकती है।

जीवाणुरोधी घटक की जटिलता का अनुमान इससे लगाया जाता है कि रोगाणुरोधी दवाओं के प्रतिरोध विकसित होने या हो जाने के बाद संक्रमण का इलाज करना मुश्किल या कभी-कभी असंभव भी जाता है। जाहिर तौर पर बीमार व्यक्ति उपयुक्त इलाज के अभाव में धीरे-धीरे तड़प-तड़प कर दम तोड़ देता है। देखा जाता है कि एलोपैथी में ऐसी अनेक दवाएं हैं, जो एक सीमा के बाद काम करना बंद कर देती हैं। नई बीमारियों के इलाज में नई दवाएं कितनी कारगर होंगी, यह उनके इस्तेमाल के बाद ही पता चलता है। अब चिंता इस बात की है कि कोविड-19 के बाद दुनिया में दहशत पैदा करने वाली नई-नई बीमारियां पैदा हो रही हैं। कभी इनकी शुरुआत चीन से हुई, तो कभी अफ्रीकी देशों से, लेकिन दुनिया के तमाम देशों में इनके प्रति दहशत का एक माहौल थोड़े ही दिन में बन जाता है। ऐसे हालात दुनिया में शायद कभी नहीं रहे, जैसे आज हैं।

सवाल है कि रोगाणुरोधी प्रतिरोध यानी एएमआर चिंता का विषय क्यों है? यह चिंता का विषय इसलिए है कि रोगाणुरोधी एजेंटों के प्रति प्रतिरोध के क्रमिक और बढ़ते विकास के साथ, कई दवाइयां संक्रमणों का इलाज करने की अपनी क्षमता खो रही हैं। इससे विज्ञान और चिकित्सा में वर्षों की प्रगति से प्राप्त लाभों का उलट होने का खतरा है। इसके बढ़ते खतरों को लेकर विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी दी है कि दवा प्रतिरोधी बीमारियों की वजह से 2050 तक एक करोड़ लोगों की असमय मौत हो सकती है। 'लॅसेट' पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार 2019 में चालीस लाख 19 हजार मौतें रोगाणुरोधी प्रतिरोध से जुड़ी थीं। अध्ययन बताता है कि किसी भी व्यक्ति को, जीवन के किसी भी चरण में जीवाणुरोधी तत्त्व असर डाल सकते हैं। ये इतनी

तेजी से विकसित हो रहे हैं कि नए एंटीबैक्टीरियल एजंट' विकसित होने की गति से भी आगे निकल गए हैं। अध्ययन बताता है कि व्यापार और यात्रा के माध्यम से वैश्विक संपर्क बढ़ने के साथ विकसित एएमआर दुनिया भर में फैलने की आशंका बढ़ गई है।

यदि हम रोगाणुरोधी प्रतिरोध का समाधान नहीं करते हैं, तो नियमित चिकित्सा प्रक्रिया और शल्य चिकित्सा सुरक्षित रूप से करने की क्षमता भी खो देंगे। जीवाणुरोधी प्रतिरोध तब होता है, जब जीवाणु, विषाणु, कवक और परजीवी समय के साथ स्वाभाविक रूप से उत्परिवर्तित होते. और आधुनिक दवाओं से प्रतिक्रिया नहीं करते हैं। इससे संक्रमण का इलाज मुश्किल हो जाता है। नतीजतन, मानक एंटीबायोटिक उपचार अप्रभावी हो जाते हैं और संक्रमण बना रहता है, जिससे रोगी के लिए खतरा बढ़ जाता है। इसको हम इस तरह समझ सकते हैं। भारत जैसे विकासशील देश में कई दवाओं की कीमत आम आदमी की हैसियत से बाहर होती है। इससे बीमारियां लगातार बढ़ती जाती हैं। रोगाणुरोधी प्रतिरोधक (एएमआर) दवाओं की कीमत बहुत ज्यादा है और इसे मानव जीवन के नुकसान के रूप में मापा जा सकता है

'एंटीमाइक्रोबियल स्टीवर्डशिप' (एएमएस) एंटीमाइक्रोबिल दवाओं के उचित इस्तेमाल के जरिए भविष्य की पीढ़ियों के लिए एंटीबायोटिक असर को संरक्षित करने की प्रतिबद्धता है। चिकित्सा क्षेत्र के शोधार्थियों के मुताबिक 'एंटीमाइक्रोबिल स्टीवर्डशिप' पहल का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सही एंटीबायोटिक सही रोगी को समय समय पर, सही खुराक के साथ दी जाए, जिससे बीमार को कम से कम नुकसान हो। लेकिन जिस तरह की अव्यवस्था चिकित्सा के क्षेत्र में है, उससे नहीं लगता कि बीमार को सही वक्त पर उपयुक्त दवा और उचित इलाज बगैर किसी अतिरिक्त दबाव के मिलता है।

भारतीय चिकित्सा के क्षेत्र में कई तरह की विसंगतियां और जटिलताएं हैं। इस क्षेत्र का पूरा तंत्र ही भ्रष्टाचार में आकंठ डूबा है। गौरतलब है दवाओं का भारत में बहुत बड़ा बाजार है। यहां मनमाने ढंग से वे दवाइयों के दाम तय होते हैं। इसी के साथ नकली दवाओं के कारोबार से करोड़ों लोग अनायास बीमार हो और मौत के मुंह में समा रहे हैं। ये नकली दवाइयां दस से पांच सौ गुना महंगी तो हैं ही, मरीज का इलाज करने में भी असफल रहती। हैं।

पिछले चार वर्षों में करोड़ों लोग एएमआर आर के कारण बीमार हुए लाखों लोग मौत के शिकार हुए। गौरतलब है कि एएमआर से पीड़ित लोगों को लगातार दवाइयां लेनी पड़ती हैं। दवा लेते रहने के लोगों की बीमारी खत्म नहीं होती, बल्कि लगातार दवाइयां लेते रहने से वे नई बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। इन नई बीमारियों की भी दवा मरीज लेना शुरू करता है, लेकिन दवा का असर बहुत कम या होता ही नहीं। इसका कारण है कि दवाओं को लेते रहने की वजह से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता जहां खत्म हो जाती है वहीं दवा का असर बिल्कुल न होने की वजह से शरीर बीमारियों का घर हो जाता है।

चिकित्सा क्षेत्र में दुनिया में जो उपलब्धियां अर्जित की गई हैं, उससे कई देशों में चिकित्सा अत्यंत सहज और सबको उपलब्ध कराई गई है, लेकिन भारत में चिकित्सा का क्षेत्र इतनी जटिलताओं और विसंगतियों से भरा हुआ है, जिसके बारे में कुछ कहना मुश्किल है। फिर भी हमें उम्मीद करनी चाहिए कि एएमआर से वैसी वैश्विक दहशत नहीं पैदा होगी, जैसा कोरोना काल में हुआ था।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

भारतीयों के आनुवंशिक मेकअप का अध्ययन करने के लिए व्हाइट ब्लड सेल का उपयोग क्यों किया गया

विजय गर्ग

यह 10,000 स्वस्थ व्यक्तियों के जीनोम एकत्र करके किया गया था नमूने असंबंधित व्यक्तियों से एकत्र किए गए थे जीनोम निकालने की विधि के कारण किया गया शोध अद्वितीय है जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट - भारत के सबसे महत्वाकांक्षी वैज्ञानिक उपक्रम में से एक ने हाल ही में 10,000 से अधिक भारतीयों के आनुवंशिक मेकअप से निष्कर्षों का अनावरण किया।

यह परियोजना भारतीयों के डीएनए के बारे में व्यक्तिगत जानकारी पर प्रकाश डालती है, जो उन्हें अन्य आबादी से अद्वितीय बनाती है और हमारे आनुवंशिक मेकअप के बारे में जानकारी निवारक दवा के क्षेत्र को कैसे बदल सकती है।

नेचर जेनेटिक्स में प्रकाशित, अध्ययन ने पूरे जीनोम का विश्लेषण किया है - देश की एक विशाल आबादी के जीव के जीनोम के पूर्ण विश्लेषण की एक प्रक्रिया

लेकिन जो इसे अलग करता है वह 135 मिलियन आनुवंशिक विविधताओं के अलावा इसका अनूठा अध्ययन दृष्टिकोण है।

भारतीय जीनोम में पाए जाने वाले वेरिएंट दुनिया भर में कहीं भी नहीं पाए जाते हैं। जबकि अन्य देशों ने डीएनए निकालने के लिए लार, गर्भनाल या त्वचा कोशिकाओं का उपयोग किया है, भारतीय वैज्ञानिकों ने उसी उद्देश्य के लिए व्हाइट ब्लड सेल (डब्ल्यूबीसी) का उपयोग किया है।

डब्ल्यूबीसी अस्थि मज्जा में उत्पादित कोशिकाएं हैं और रक्तप्रवाह में परिचालित होती हैं। ल्यूकोसाइट्स के रूप में भी जाना जाता है, वे शरीर को संक्रमण और बीमारियों से बचाने में मदद करते हैं।

जेनेटिक इंडिया प्रोजेक्ट क्या है? जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट एक वैज्ञानिक अध्ययन है जो समुदायों में 10,000 स्वस्थ व्यक्तियों के जीनोम एकत्र करके किया जाता है।

यह 20 संस्थानों की एक सहयोगी परियोजना है, जो 2020 में जैव प्रौद्योगिकी विभाग के वित्त पोषण के साथ शुरू हुई थी, भारतीय जीनोमिक विविधता के लिए एक व्यापक संदर्भ बनाने के लिए, भविष्य के अनुसंधान के लिए एक मजबूत जैव बैंक स्थापित करें, जीनोमिक डेटा तक खुली पहुंच को सक्षम करें, निदान के लिए सस्ती आनुवंशिक उपकरण विकसित करें, भारत में सटीक चिकित्सा के लिए मार्ग प्रशस्त करें, और जीनोमिक इनोवेटर्स की अगली पीढ़ी को प्रेरित

करें।

गैर-आदिवासी समूहों के लगभग 160 नमूने और आदिवासी समूहों के 75 नमूने 83 जनसंख्या समूहों से एकत्र किए गए थे। उत्परिवर्तन का सटीक विश्लेषण सुनिश्चित करने के लिए असंबंधित व्यक्तियों से नमूने एकत्र किए गए थे।

जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट एक वैज्ञानिक अध्ययन है जो 10,000 स्वस्थ व्यक्तियों के जीनोम एकत्र करके किया जाता है। यह बताते हुए कि जीनोम इंडिया प्रोजेक्ट के प्रमुख अन्वेषक रोगों के विश्लेषण में उत्परिवर्तन कैसे मदद कर सकते हैं, , ₹कुछ उत्परिवर्तन रोग पैदा करने वाले हैं; कुछ दुनिया भर में वितरित किए जाते हैं, और कुछ भारतीय विशिष्ट हैं। हम उन प्रकार के उत्परिवर्तन को देख रहे हैं जो तभी उभरेंगे जब हम अपना विश्लेषण पूरा करेंगे

उन्हें क्यों चुना गया है? डब्ल्यूबीसी से जीनोम निकालने की विधि के कारण किया गया शोध अद्वितीय है। उन्हें उनकी स्थिरता के कारण चुना जाता है, जो डीएनए के सटीक निष्कर्षण में मदद करता है।

"डब्ल्यूबीसी सबसे कम दूषित होते हैं, और वे परिणामस्वरूप विभिन्न स्तरों पर अच्छी गुणवत्ता वाले डेटा प्राप्त करने के लिए सबसे अच्छा अनुक्रमण विकल्पों में से एक प्रदान करते हैं

अध्ययन के चिकित्सा प्रभाव जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने कहा है कि भारतीय जीनोम में पाए जाने वाले वेरिएंट दुनिया भर में कहीं नहीं पाए जाते हैं.

रिपोर्ट में स्थानीय समुदायों, कबीले या जनजाति के भीतर शादी करने के रिवाज का भी उल्लेख किया गया है, जिसे एंडोगैमी के रूप में जाना जाता है, जो आबादी के भीतर उत्परिवर्तन दरों में वृद्धि का कारण है।

"कुछ उत्परिवर्तन बीमारी से जुड़े होते हैं,₹। ₹अगर हम इन सभी उत्परिवर्तन को एक सरणी में रखते हैं, तो किसी भी बीमारी का निदान अधिक सस्ते में विकसित किया जा सकता है

बीमारियों के लिए उपचार व्यक्ति की प्रतिक्रिया पर निर्भर करेगा। उपचार के लिए व्यक्तियों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण करने के बाद इसकी जाँच की जाएगी।

"कुछ व्यक्ति उपचार के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया दे सकते हैं। उनके लिए, नया उपचार काम कर सकता है। लेकिन कुछ में, यह प्रतिकूल प्रभाव पैदा कर सकता है, जिससे नई दवा-व्यक्तिगत दवाओं का विकास हो सकता है

डब्ल्यूबीसी का उपयोग करने के विकल्प ने देश की आनुवंशिक रूप से विविध आबादी में जीन-रोग संबंधों की समझ पैदा की है। हालांकि, वैज्ञानिकों का कहना है कि भारतीय आबादी के लिए लक्षित उपचार और निवारक रणनीतियों को विकसित करने के लिए इन आनुवंशिक विविधताओं की स्पष्ट समझ महत्वपूर्ण है।

"भारतीय आबादी एंडोगैमस है। हम जनसंख्या-विशिष्ट उत्परिवर्तन पाते हैं। कुछ बहुत दुर्लभ हैं, कुछ रोग पैदा करने वाले हैं,₹। ₹हम 10,000 जीनोम का विस्तार से विश्लेषण कर रहे हैं, और हम इस पर वास्तविक प्रभाव पाएंगे और 2-3 महीने बाद एक बड़ा पेपर लिखेंगे (

अनूठी संरचना और रोचक जीवन व्यवहार

विजय गर्ग

झींगा मछली वास्तव में मछली नहीं है। यह ताजे पानी की नदियों और झीलों में पाया जाने वाला क्रस्टेशियन है। इसे अंग्रेजी में क्रेफिश कहते हैं। यह जिस पानी में चूने की मात्रा हो उसमें रहना पसंद करती है।

झींगा मछली समशीतोष्ण भागों में पायी जाती है। यह इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, संयुक्त राष्ट्र अमरीका, दक्षिणी अमेरिका, न्यूगिनी, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि में काफी संख्या में देखने को मिलती है। झींगा मछली अफ्रीका में नहीं पाई जाती, किंतु मेडागास्कर में है। इसी तरह यह एशिया के बहुत बड़े भाग में नहीं पायी जाती, किंतु कोरिया और जापान के उत्तरी द्वीपों में बहुतायत से मिलती है। झींगा मछली की कुछ जातियां ऐसी हैं, जिन्हें सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है और उन्हें पाला जा सकता है। उदाहरण के लिए फ्रांस की झींगा मछली 'रेड क्ला' को इंग्लैंड की थेम्स नदी में सफलतापूर्वक पाला जा रहा है। इसी तरह संयुक्त राष्ट्र अमरीका की झींगा मछली जर्मनी में फल-फूल रही है।

झींगा मछली की लगभग 500 जातियां तथा उपजातियां हैं, जिनमें शारीरिक संरचना आकार और आदतों में थोड़ा बहुत अंतर होता है। झींगा मछली अधिक तापमान सहन नहीं कर पाती, यह दोपहर के समय पानी में हो या पानी के बाहर छांव में चली जाती है। यह सर्दियों में नदी के किनारे मिट्टी में गहरी मांद बनाती है। कुछ जातियां वर्षभर मांदें बनाती हैं और जमीन पर रहती हैं।

झींगा मछली की शारीरिक संरचना बड़ी विचित्र होती है। सामान्यतया इसकी लंबाई 10 सेंटीमीटर या इससे कुछ अधिक होती है, किंतु कुछ जाति की झींगा मछलियां बहुत बड़ी तथा भारी होती हैं। विश्व की सबसे बड़ी झींगा मछली तस्मानिया में पायी जाती है। एस्टेकाप्सिस फ्रेंकलिनी नामक इस झींगा मछली का वजन 4 से 5 किलोग्राम तक होता है। झींगा मछली का रंग रेतीला पीला, हरा या गहरा कत्थई होता है। झींगा मछली का सिर और वक्ष एक आवरण से ढका रहता है। इस आवरण का अगला सिरा नुकीला होता है। झींगा मछली के दो यौगिक आंखें होती हैं एवं सिर के अग्रभाग में संवेदनशील अंगों से युक्त 4 एंटीना होते हैं। इनके साथ ही एक जोड़ा लंबा एंटीना का होता है, जो स्पर्शेन्द्रिय का कार्य करता है। झींगा मछली के एक जोड़ा मजबूत और दो जोड़े कमजोर जबड़े होते हैं। इन जबड़ों को मैक्सिली कहते हैं। शरीर के अंत में एक बड़ी पंखे जैसी पूंछ होती है। इसकी पूंछ अत्यंत विलक्षण होती है। यह इसकी सहायता से शत्रु से बचने के लिए तेजी से पीछे की ओर तैर सकती है।

झींगा मछली का प्रमुख भोजन पानी के छोटे-छोटे जीव हैं। कुछ मछलियां जलीय पौधे खाती हैं। इसके शिकार करने का ढंग रोचक होता है। यह अपने शिकार को पैरों के अगले हिस्से से पकड़ती है और इसके बाद उसके टुकड़े-टुकड़े कर देती है।

नर और मादा झींगा मछली की शारीरिक संरचना अलग-अलग होती है तथा दोनो अर्धआंतरिक समागम करते हैं। इसका समागम काल सितंबर से शुरू होता है और अक्तूबर के अंत तक चलता है। मादा झींगा मछली शुक्राणु लेकर अपनी मांद में चली जाती है और वहां लगभग 100 अंडे देती है। यह अंडे शुक्राणु के संपर्क में आकर निषेचित हो जाते हैं और इसके तैरने वाले पैरों से चिपक जाते हैं। लगभग छह माह बाद अंडे फूट जाते हैं और झींगा मछली का बच्चा एक छोटी मछली के रूप में ही जन्म लेता है। नवजात बच्चे का शरीर पारदर्शी होता है तथा यह अपने अगले पंजों से मादा के तैरने वाले पैरों से कुछ समय तक चिपका रहता है। इसके बच्चे चार बार केंचुल बदलते हैं। इसे एक बार केचुल बदलने में छह घंटे लगते हैं। इस दौरान यह किसी माद या इसी तरह के सुरक्षित जगह में छिपी रहती है और कुछ खाती-पीती नहीं है। इस काल में यह बहुत कठोर हो जाती है। कई बार केंचुल बदलते समय कमजोरी के कारण इसकी मृत्यु भी हो जाती है।

झींगा मछली के बच्चे दो से तीन वर्ष के बीच वयस्क हो जाते है तथा लगभग 20 सालों तक जीवित रहते हैं। दुनिया के अधिकतर देशों में इसे बड़ी रुचि से खाया जाता है। कुछ आदिवासी क्षेत्रों में इसे कच्चा भी खाते हैं, जो हानिकारक है। झींगा मछली में पर्याय एक परजीवी लारवा रहता है, जो मानव के फेफड़ों में पहुंच जाता है। यह परजीवी लारवा अनेक घातक बीमारियों को जन्म देता है, जिनसे व्यक्ति की मृत्यु भी हो सकती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

फसलों में प्रयोग के खतरे

विजय गर्ग

शीर्ष न्यायालय में आनुवंशिक रूप से संशोधित यानी जीएम फसलों के परीक्षण पर लगी रोक पर सुनवाई होनी है। पर्यावरण मंत्रालय की अनुमोदन समिति की संस्तुति ऐसी फसलों के लिए अनिवार्य होती है। उसी समिति ने इसे मंजूरी देने से इनकार किया है। संसद। अन्य दो समितियों की रपट में भी जीएम फसलों के स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्रभावों के आकलन के बिना मंजूरी न देने की बात कही गई है। देश में अभी आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों के रूप में केवल बीटी कपास की ही व्यावसायिक खेती हो रही रही है।

भारत की पहली आनुवंशिक रूप से संशोधित सरसों की फसल धारा सरसों हाइब्रिड (डीएमएच-11 11) बीज के रूप में व्यावसायिक रूप से आवश्यक न्यूनतम मापदंड को पूरा करने में विफल रही है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा पिछले रबी सीजन में छह अलग-अलग स्थानों पर किए गए क्षेत्रीय परीक्षणों के परिणामों के अनुसार डीएमएच-11 की उपज लगभग 26 कुंतल प्रति हेक्टेयर है। कहा रहा है कि एक हजार बीजों पर यह लगभग 3.5 ग्राम है, जो कि बीज किस्म के रूप में अधिसूचना के पात्र होने के लिए 4.5 ग्राम के मानक से कम है। वैसे प्रति हजार पांच और 5.5 ग्राम से कम वजन वाले बीज सरसों की फसल की मशीनीकृत कटाई को मुश्किल बनाते हैं। मशीनीकृत कटाई के दौरान कम वजन वाले सरसों के बीज उड़ जाते हैं। इसलिए उत्तरी क्षेत्र के किसानों द्वारा इसे पसंद नहीं किया जाता है।

अन्य व्यावसायिक संस्थानों के साथ-साथ नीति आयोग जीएम फसलों के लिए अड़ा हुआ है। कार्यबल की मसविदा रपट में दलहन एवं तिलहन का उत्पादन बढ़ाने के लिए जीएम बीजों के इस्तेमाल, बिजली पर सबसिडी को तर्कसंगत बनाने और किसानों को उपज के लिए घटे मूल्य पर भुगतान प्रणाली अपनाने की सिफारिश की जा चुकी है। जीएम फसलों के समर्थकों का एकमात्र तर्क यह है कि इसके प्रयोग से फसलों का उत्पादन बढ़ेगा और देश की अनाज समस्या का समाधान हो जाएगा। निश्चित रूप से इससे कम अवधि के लिए फसलों की पैदावार में वृद्धि होती है. लेकिन इसके दूरगामी परिणाम नुकसानदेह होते हैं। जीएम तकनीक के अंतर्गत बीजों के स्वजातीय जीन के आदान-प्रदान की प्रक्रिया नष्ट कर दूसरी प्रजाति जीन को समाहित किया जाता है। ऐसी प्रक्रिया से तैयार बीज अप्राकृतिक और रासायनिक हो जाते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए खतरनाक होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन भी इसे अप्राकृतिक बता चुका है।

देश में अभी तक जीएम फसलों के रूप में बीटी कपास की व्यावसायिक खेती हो रही। वर्ष 2010 में बीटी बैंगन को भी मंजूरी दिलाने की कवायद शुरू हुई थी, पर नौ राज्य सरकारों, कई पर्यावरण विशेषज्ञों, कृषि विशेषज्ञों, बुद्धिजीवियों और किसानों के व्यापक विरोध के कारण सरकार को अपना कदम वापस लेना पड़ा। यहां तक कि स्वदेशी जागरण मंच और किसान संघ का तीव्र विरोध भी नीति निर्धारकों को झेलना पड़ा। मंच का कहना है कि इससे पर्यावरण को नुकसान हो सकता है। राजग सरकार के प्रमुख सहयोगी नीतीश कुमार खुल कर इसके विरोध में आ गए हैं। उन्होंने पर्यावरण मंत्री को पत्र लिख कर कहा है कि जीएम बीज मामले में केंद्र सरकार को राज्यों से अनापत्ति प्रमाण पत्र लेने के बाद ही इसको व्यावसायिक उपयोग की अनुमति देनी चाहिए और राज्यों से बिना पूछे इसका किसी भी स्थान पर इसका परीक्षण न किया जाए।

यह एक गंभीर मामला है। सरसों बिहार का प्रमुख तिलहन है और बिहार देश के प्रमुख शहद उत्पादक राज्यों में शामिल है। नीतीश कुमार ने इस तकनीक को बाजार में उतारने पर आश्चर्य व्यक्त किया है। पारंपरिक किस्मों की तुलना में जीएम किस्म को लेकर बढ़ा-चढ़ा कर दावे किए जा रहे हैं। मगर उसमें भी मतभेद हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि मौजूदा आइसीएआर की किस्म की उत्पादकता 2.1 टन प्रति हेक्टेयर है। जबकि रेपसीड और सरसों की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता 1.2 टन प्रति हेक्टेयर हैं।

विश्व के अन्य भागों में भी जीएम फसलों के परीक्षण अच्छे साबित नहीं हुए। अमेरिका में एक एक भू-भाग आनुवंशिक रूप से संशोधित मक्का की खेती की गई, जिसने 50 फीसद गैर-जीएम खेती को संक्रमित कर दिया। उत्पादन बढ़ाने की होड़ में चीन ने भी अपनी जमीन पर धान और मक्के की खेती की, मगर पांच-छह वर्षों में ही वहां के किसानों को नुकसान उठाना पड़ा। वर्ष 2014 के बाद वहां जीएम खेती लगभग बंद करनी पड़ी। जीएम फसलों के पैरोकार तीसरी दुनिया के मुल्कों को डरा रहे हैं कि वर्तमान में करोड़ों लोग भूखे सोते हैं, इसलिए जीएम फसलों के जरिए अतिरिक्त उत्पादन कर इसका मुकाबला संभव है। वर्तमान में भारत खाद्य उत्पादन में न सिर्फ आत्मनिर्भर हो चला है, बल्कि गेहूं, धान, शक्कर, सब्जी एवं फलों आदि का बड़े पैमाने पर निर्यात भी कर रहा है।

सबसे खराब प्रयोग बीटी कपास के उत्पादन में हुआ, जिसे हम अभी भी झेल रहे हैं। वर्ष 2003 में देश में बीटी कपास की व्यावसायिक खेती को मंजूरी मिली। बीटी कपास से देश के कपास उत्पादक किसानों पर क्या प्रभाव पड़ा, इसको लेकर संसद की कृषि मामलों की समिति ने अपनी 37वीं रपट में काफी कुछ कहा। 'कल्टीवेशन आफ जेनेटिक मोडिफाइड क्राप, संभावना एवं प्रभाव' नामक रपट में बताया गया है कि बीटी कपास की व्यावसायिक खेती करने से कपास उत्पादक किसानों की माली हालत सुधरने के बजाय बिगड़ गई। इस कपास में कीटनाशकों का अधिक प्रयोग करना पड़ा।

महाराष्ट्र में इन दिनों अपनी कपास को कीड़े से बचाने की जुगत में किसानों द्वारा अनजाने में मौत को गले लगाने के कई मामले सामने आए हैं। अकेले यवतमाल जिले में ही चौबीस से अधिक किसानों की मौत के समाचार हैं। मौतों की वजह किसानों द्वारा खरीदा गया वह कीटनाशक बताया जा रहा है, जिसे उन्होंने फसल पर कीड़े मारने के लिए छिड़का था। बीटी कपास उगाने के लिए जिस कीटनाशक के उपयोग का प्रचार किया उस वक्त किसानों को यह बताया नहीं गया कि क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए।

वैज्ञानिक एमएस न स्वामीनाथन आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों के प्रयोग से पहले भूमि परीक्षण अनिवार्य करने की सिफारिश कर चुके हैं। आश्चर्यजनक है कि किसानों को गोलबंद करने वाला महाराष्ट्र शेतकारी संगठन जीएम फसलों का गुणगान करने में जुटा है। जबकि दिलचस्प है कि किसान आत्महत्या की सर्वाधिक खबरें विदर्भ और मराठवाड़ा से ही आ रही हैं। पर्यावरण समर्थकों की निगाहें अब सुप्रीम कोर्ट में होने वाली सुनवाई पर टिकी हैं। शीर्ष अदालत की दो न्यायाधीशों वाली पीठ ने जीएम फसलों को पर्यावरण के अनुकूल बनाने के लिए सशर्त मंजूरी देने के केंद्र के फैसले की वैधता पर विभाजित फैसला सुनाया था। हालांकि इसने केंद्र को इन फसलों पर एक राष्ट्रीय नीति बनाने का भी निर्देश दिया।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

सबसे बड़ा धर्म.....

विजय गर्ग

धर्म क्या है! यह व्यक्ति को उसका कर्तव्य मार्ग दिखाने का रास्ता मात्र है। यही बात श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने हजारों साल पहले कही थी। जाति या वर्ण व्यवस्था केवल व्यक्ति के कर्म के अनुसार थी। भारत के संविधान में सभी धर्मों को बराबर का दर्जा दिया गया है, परन्तु धर्म और जाति की राजनीति देश के आज़ाद होते ही शुरू हो गई थी। किसी भी आवेदन के फार्म में आपको विवरण देना होगा। अगर सभी समान हैं तो इसकी आवश्यकता ही क्यों?

लोगों के दिमाग में जातिवाद की गहरी जड़ों को एक उदाहरण से समझिए, अध्यापक का स्कूल में प्रथम दिन था। बातों ही बातों में पहचान लिया कि सबसे आगे बैठी लड़की सबसे तेज है। पूछा बेटा, आपका क्या नाम है? लड़की बोली, जी सर, मेरा नाम जूही है। अध्यापक ने फिर पूछा, पूरा नाम बताओ बेटा? लड़की ने फिर कहा, जी सर, मेरा पूरा नाम जूही ही है। अध्यापक ने सवाल बदल दिया, अच्छा... पापा का नाम बताओ? लड़की ने जवाब दिया : जी सर, मेरे पापा का नाम है शमशेर। अध्यापक ने फिर पूछा, पापा का पूरा नाम बताओ? लड़की ने जवाब दिया, मेरे पापा का पूरा नाम शमशेर ही है, सर जी। अब अध्यापक बोले, अच्छा अपनी मां का पूरा नाम बताओ? लड़की ने जवाब दिया, मेरी मां का पूरा नाम है निशा।

अध्यापक के पसीने छूट चुके थे। क्योंकि लड़की के बायोडाटा में जो चीज वह ढूंढ़ रहे थे, वह नहीं मिल रही थी। उसने आखिरी पैंतरा आजमाया और पूछा, अच्छा तुम कितने भाई बहन हो? लड़की बोली, सर जी, मैं अकेली हूं। अध्यापक निर्णायक सवाल पर आ गए- बेटे, तुम्हारी धर्म और जाति क्या है?

लड़की ने इस सीधे से सवाल का भी सीधा-सा जवाब दिया, बोली, सर, मैं एक विद्यार्थी हूं, यही मेरी जाति है, और ज्ञान प्राप्त करना ही मेरा धर्म है। आप मेरे पैरेंट्स की जाति और धर्म जानना चाहेंगे। मेरे पापा का धर्म है मुझे पढ़ाना, मेरी मम्मी की जरूरतों को पूरा करना और मेरी मम्मी का धर्म है, मेरी देखभाल और मेरे पापा की जरूरतों को पूरा करना। अध्यापक के होश उड़ गये। सर, मैं विज्ञान की छात्रा हूं। साइंटिस्ट बनना चाहती हूं। जब अपनी पढ़ाई पूरी कर लूंगी और अपने मां-बाप के सपनों को पूरा कर लूंगी, तब कभी फुर्सत में सभी धर्मों का अध्ययन करूंगी। जो भी धर्म विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरेगा, उसे अपना लूंगी।

अध्यापक ने बड़ी हिम्मत कर जातीयता के चश्मे को हटाया और बोला, बेटे मानवतावादी बनकर, इस जाति के बीज को खत्म करने की कोशिश करें, तभी देश और समाज प्रगति कर सकेगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

श्रमिक दिवस विशेष : अच्छे नहीं हैं हालात मज़दूर के

डॉ घनश्याम बादल

आज एक मई है, इस दिन हर साल एक दुनिया भर में मजदूर दिवस मनाया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि आज का दिन श्रमिक अधिकारों और उनकी संघर्षगाथा से जुड़ा दिन है।

अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाने की शुरुआत 1886 के शिकागो हेमार्केट आंदोलन से हुई। तब शिकागो में मजदूरों ने 8 घंटे कार्य दिवस की मांग को लेकर प्रदर्शन किया था। पर उद्योगपतियों के षड्यंत्र के चलते यह प्रदर्शन हिंसक हो गया और कई मजदूरों की जान गई। इस तरह मजदूर के अधिकारों के लिए किया गया पहला आंदोलन अच्छा नहीं रहा लेकिन मजदूरों ने हार नहीं मानी और 1889 में अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में एक मई को उन मजदूरों की स्मृति में मजदूर दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत हुई। जहां तक भारत की बात है तो यहां पहली बार मजदूर दिवस 1923 में चेन्नई में मना और तब से लगातार यह दिवस मनाया जा रहा है लेकिन सवाल यह है कि 100 साल से ज़्यादा हो गए मजदूर दिवस मनाते हुए लेकिन मजदूरों की हालत आज भी बहुत अच्छी नहीं कहीं जा सकती।

महंगाई के कारण मजदूरों की वास्तविक क्रयशक्ति बहुत कम है और और स्थिति यह है कि पूरे दिन कमर तोड़ मेहनत करने के बावजूद मज़दूर और उसके परिवार को न भरपेट खाना मिल पाता है और नहीं उसका जीवन स्तर संतोषजनक है। ऐसे में मजदूरों के हित के लिए बहुत से कदम है उठाने की ज़रूरत है आज।

कुछ ऐसा किए जाने की ज़रूरत है कि केवल कानून एवं किताबों में नहीं बल्कि वास्तविक धरातल पर सभी क्षेत्रों में न्यूनतम वेतन अधिनियम को लागू हो और उल्लंघन करने वालों के सख्त खिलाफ कार्रवाई हो। स्वास्थ्य बीमा, पेंशन योजनाएं को दृढ़ता पूर्वक असंगठित क्षेत्रों में भी लागू किया जाए। कौशल विकास जैसी योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन हो ताकि मजदूर अधिक वेतन वाली नौकरियाँ पा सकें। एक मजबूत लेबर इन्फोर्समेंट सिस्टम बनाया जाए जिससे मज़दूरों का शोषण न हो। यूनियनों और मजदूर संगठनों को मजबूत किया जाए ताकि वे अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठा सकें।

भारत में मजदूरों की स्थिति पर उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार भारत में लगभग 56.5 करोड़ लोग कार्यबल का हिस्सा हैं। इनमें से । 45% कृषि क्षेत्र में कार्यरत हैं।11.4% निर्माण क्षेत्र में। 28.9% सेवा क्षेत्र में और 13% निर्माण क्षेत्र में कार्यरत हैं। इनमें से 57.3% लोग स्वरोजगार में लगे हैं जबकि 18.3% लोग घरेलू उद्यमों में बहुत कम वेतन पर कार्यरत हैं। 21.8% लोग आकस्मिक मजदूरी करते हैं। 20.9% नियमित वेतन या वेतनभोगी कर्मचारी हैं।

केंद्र सरकार ने अक्टूबर 2024 से न्यूनतम वेतन दरों में वृद्धि की हैः। अत्यधिक कुशल श्रमिकों के लिए: ₹1,035, कुशल श्रमिकों के लिए: ₹954 प्रतिदिन का वेतन तय किया गया है जबकि अर्ध-कुशल श्रमिकों के लिए: ₹868 प्रतिदिन व अकुशल श्रमिकों के ₹783 प्रतिदिन निश्चित किया गया है जो एक अच्छा कदम है। मगर दूसरी सरकारी घोषणाओं की तरह यह घोषणा भी ज़मीन पर कम एवं कागज़ों पर अधिक नजर आती है। हालांकि न्यूनतम वेतन दरें निर्धारित हैं, लेकिन वास्तविकता में अधिकांश श्रमिकों को बहुत कम वेतन मिलता है।

आज भी मजदूरी करने वाले लोग महीने में ज्यादा से ज्यादा 20- 22 दिन कार्य प्राप्त कर पाते हैं वहीं इनमें से एक बड़ा हिस्सा ऐसा है जो शारीरिक एवं मानसिक थकान के चलते हुए अपनी इच्छा से ही 18 दिन से ज्यादा काम नहीं करता इसलिए इनके मासिक वेतन की बात करना ही बेमानी है। असंगठित क्षेत्र का हाल तो और भी खराब है। भारत में लगभग 82% कार्यबल असंगठित क्षेत्र में कार्यरत है, जहां श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा, नियमित व पूरा वेतन, पेंशन, पी एफ ,ई पी एफ और अन्य लाभ नहीं मिलते।

जहां मजदूरों को कम वेतन मिलता है वहीं विभिन्न कारणों से सदैव ऋणी रहते हैं आंकड़ों के अनुसार भारत में लगभग 3 लाख श्रमिक ऋण बंधन की स्थिति में हैं, विशेषकर तमिलनाडु, कर्नाटक और ओडिशा में। यहां श्रमिक औसतन 47 से 52 घंटे प्रति सप्ताह कार्य करते हैं, जो वैश्विक औसत से बहुत अधिक है।

महिला श्रमिकों की स्थिति तो और भी खराब है। महिला श्रमिकों की संख्या भारत में 2017-18 में 23.3% से बढ़कर 2022-23 में 37% हो गई हालांकि महिला श्रम भागीदारी बढ़ी है, लेकिन अधिकांश महिलाएं असंगठित और कम वेतन वाले क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

आज के हालात देखते हुए भारत को 2030 तक हर साल लगभग 78.5 लाख गैर-कृषि नौकरियों की आवश्यकता है।

आज यह आवश्यक है कि भारत में श्रमिकों की स्थिति पर गंभीरता से विचार हो। सरकार, उद्योग और समाज को मिलकर श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा, उचित वेतन, सामाजिक सुरक्षा और बेहतर कार्य परिस्थितियों को सुनिश्चित करना चाहिए। इससे न केवल श्रमिकों का जीवन स्तर सुधरेगा, बल्कि देश की आर्थिक प्रगति भी सुनिश्चित होगी।

भारत में केवल वयस्क एवं महिला श्रमिक ही नहीं अपितु बाल श्रमिकों की भी भारी तादाद है और उनकी हालत भी अच्छी नहीं है। यहां बाल श्रम एक गंभीर सामाजिक व आर्थिक समस्या है, जो बच्चों के बचपन, शिक्षा और भविष्य को प्रभावित करती है।

राष्ट्रीय बाल श्रम सर्वेक्षण (2011 जनगणना) के अनुसार 5 से 14 वर्ष की आयु के लगभग 1 करोड़ से अधिक बच्चे श्रम में लगे हुए थे। इन बच्चों में से 70% से अधिक ग्रामीण क्षेत्रों से हैं। यूनिसेफ के अनुसार भारत में बाल श्रम में कमी आई है, लेकिन अभी भी 8-10 मिलियन बच्चे अलग-अलग रूपों में श्रम कर रहे हैं। बाल मज़दूर यहां घरेलू नौकर, चाय की दुकान, रेस्तरां, निर्माण स्थल, ईंट भट्टा, खेतों, फैक्ट्रियों, और खतरनाक उद्योगों में खूब काम करते हैं जो अवैधानिक होते हुए भी लगातार जारी है। कई बार मानव तस्करी और बंधुआ मजदूरी के तहत भी बच्चों को काम कराया जाता है।

दरअसल मेहनत मजदूरी करना इन बच्चों की मज़बूरी है जिसका मुख्य कारण है गरीबी। माता-पिता की आय कम होने से बच्चे काम करने को मजबूर होते हैं। अशिक्षा और जागरूकता की कमी भी इसकी जिम्मेदार है। परिवारों को नहीं पता कि सभी बच्चों को मुफ्त शिक्षा का अधिकार है।

यहां बच्चों से कम पैसों में काम कराया जाता है क्योंकि यहां बालश्रम कानून का पालन न के बराबर किया जाता है निगरानी और सजा की प्रक्रिया भी कमजोर है।बाल श्रम को समाप्त किया जा सकता है बशर्ते कि शिक्षा को यथार्थ के धरातल पर अनिवार्य और आकर्षक बना दें।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम सख्ती से लागू हो, स्कूलों में मिड-डे मील, मुफ्त किताबें और वर्दी जैसी योजनाओं को सुधारा जाए व उनके परिवारों की आर्थिक स्थिति को सबल किया जाए और माता-पिता को जागरूक किया।

इसके लिए जरूरी है कि गांव एवं शहरों में जनजागरूकता अभियान चलाया जाए।

ग्बाल अधिकारों और शिक्षा के महत्व का प्रचार-प्रसार किया जाए, स्वयंसेवी संस्थाओं की भागीदारी बढ़े, । बाल श्रमिकों को छुड़ाने के बाद उन्हें स्कूलों में दाखिला, मनोवैज्ञानिक परामर्श, और कौशल प्रशिक्षण देना समय की मांग है।।

बालश्रम केवल एक सामाजिक अपराध ही नहीं, बल्कि देश के भविष्य से खिलवाड़ है। जब हर बच्चा स्कूल में होगा, तभी भारत सही मायनों में विकासशील से विकसित देश बन सकेगा।

"स्वतंत्र स्त्री का भय: हिंदी साहित्य का अपच" "हिंदी साहित्य की आँख में किरकिरी: स्वतंत्र स्त्रियाँ"

हिंदी साहित्य जगत को असल स्वतंत्र चेता प्रबुद्ध स्त्रियां अभी भी हजम नहीं होती। उन्हें वैसी ही स्त्री लेखिका चाहिए जैसा वह चाहते हैं। वह सॉफ्ट मुद्दों पर लिखे, परिवार, समाज, कुछ मनोविज्ञान, स्त्री-पुरुष संबंध। आधुनिकता का या आधुनिक स्त्री का पर्याय उनके लिए वह है कि बोल्ड लेखन कर सके, अश्लीलता को बोल्ड लेखन के नाम पर यह समाज स्त्री लेखिकाओं को खूब चढ़ाता है और उन्हें खूब बड़े-बड़े शब्दों से नवाज़ता है। यह सब वे स्त्री स्वतंत्रता के नाम पर करता है।

वे भ्रमित स्त्रियां भी घर परिवार का विरोध, संस्कृति का विरोध, विकृत यौनिकता के समर्थन को ही बोल्ड और आधुनिक मान उनके हाथ के कठपुतली बनी हुई इठलाती रहती हैं। अफ़सोस कि उन्हें पता ही नहीं होता कि वे कठपुतली हैं, उनसे जैसा चाहे वैसा लिखवाया जाता है और वह भी उन्हें आधुनिक, साहसी, बोल्ड, स्वतंत्र चेता, प्रबुद्ध शब्दों की चाशनी में लपेटकर। लिजलिजे साहित्य की रचना, विध्वंस, नकारात्मकता लिखना ही उन्हें बोल्ड और प्रबुद्ध कहलवाता है।

-प्रियंका सौरभ

हिंदी साहित्य जगत को असल स्वतंत्र चेता प्रबुद्ध स्त्रियां अभी भी हजम नहीं होती। उन्हें वैसी ही स्त्री लेखिका चाहिए जैसा वह चाहते हैं। वह सॉफ्ट मुद्दों पर लिखे, परिवार, समाज, कुछ मनोविज्ञान, स्त्री-पुरुष संबंध। आधुनिकता का या आधुनिक स्त्री का पर्याय उनके लिए वह है कि बोल्ड लेखन कर सके, अश्लीलता को बोल्ड लेखन के नाम पर यह समाज स्त्री लेखिकाओं को खूब चढ़ाता है और उन्हें खूब बड़े-बड़े शब्दों से नवाज़ता है। यह सब वे स्त्री स्वतंत्रता के नाम पर करता है।

वे भ्रमित स्त्रियां भी घर परिवार का विरोध, संस्कृति का विरोध, विकृत यौनिकता के समर्थन को ही बोल्ड और आधुनिक मान उनके हाथ के कठपुतली बनी हुई इठलाती रहती हैं। अफ़सोस कि उन्हें पता ही नहीं होता कि वे कठपुतली हैं, उनसे जैसा चाहे वैसा लिखवाया जाता है और वह भी उन्हें आधुनिक, साहसी, बोल्ड, स्वतंत्र चेता, प्रबुद्ध शब्दों की चाशनी में लपेटकर। लिजलिजे साहित्य की रचना, विध्वंस, नकारात्मकता लिखना ही उन्हें बोल्ड और प्रबुद्ध कहलवाता है।

हिंदी साहित्य जगत के लिए आज भी स्वतंत्र चेतना वाली प्रबुद्ध स्त्रियाँ एक असहज कर देने वाला सच हैं। वे स्त्रियाँ जो अपनी स्वतंत्र बुद्धि की मालिक हैं, जो सोचती हैं, सवाल उठाती हैं, और झुकी हुई लेखिकाओं के पुराने सांचे में नहीं ढलतीं — वे साहित्यिक जमात को अब भी पचती नहीं हैं। आज भी उन्हें वैसी ही लेखिकाएँ चाहिए जो उनके निर्धारित खांचे में फिट बैठें: जो 'सॉफ्ट' मुद्दों पर लिखें — परिवार, समाज, थोड़ी सी मनोविज्ञान की बात, कुछ हल्के-फुल्के स्त्री-पुरुष संबंध।

जब हिंदी साहित्य के मंचों पर 'आधुनिकता' का जिक्र होता है, तो उसका भी एक निर्धारित ढांचा होता है। ₹आधुनिक₹ स्त्री लेखिका का मतलब उनके लिए वह है जो 'बोल्ड' हो — यानी अश्लीलता को 'बोल्ड लेखन' का नाम देकर परोसे। जिसे 'यौनिक स्वतंत्रता' के नाम पर उकसाया जाए — परिवार के विरोध, संस्कृति के उपहास और संबंधों की विकृति को ही आधुनिकता का पर्याय बताया जाए। और इस पूरी चालाकी को इतनी मिठास से लपेटा जाता है कि भ्रमित लेखिकाएँ स्वयं भी इस झूठ को सच मान बैठती हैं। वे गर्व से फूली नहीं समातीं कि वे कितनी 'बोल्ड', 'स्वतंत्र' और 'आधुनिक' बन गई हैं — जबकि वे महज़ उन साहित्यिक ठेकेदारों के हाथों की कठपुतली बन चुकी होती हैं, जो उन्हें अपनी सुविधा के अनुसार नचाते हैं। अफसोस, उन्हें कभी यह सवाल उठाने की फुर्सत नहीं होती — कि जिस स्वतंत्रता का पाठ उन्हें पढ़ाया जा रहा है, क्या वही पाठ उन पुरुष लेखकों ने अपनी घर की स्त्रियों को भी पढ़ाया है?

साहित्यिक समाज की मानसिकता यह है कि स्त्री लेखन सीमित रहे — कोमल भावनाओं, सौंदर्य, प्रेम, विरह, या सॉफ़्ट पोर्न के एक छुपे हुए दायरे में। यदि कोई स्त्री geopolitics, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, अंतरराष्ट्रीय संबंधों, समाजशास्त्र, राजनीति, शिक्षा, अर्थशास्त्र या नीतियों पर गंभीरता से लिखने का साहस करती है, तो वह असहज कर देती है। उनके मन में यह असहनीय बात घर कर जाती है कि ₹यह क्षेत्र तो पुरुषों के हैं।₹ स्त्रियों को बस शब्दों का श्रृंगार करना चाहिए — गहरे सवाल नहीं उठाने चाहिए। विचारों की गहराई, विश्लेषण की धार और बौद्धिक निर्भीकता — ये सब अभी भी हिंदी साहित्यिक परिदृश्य में 'पुरुषों का गढ़' माने जाते हैं।

जो स्त्री न किसी पुरस्कार की आकांक्षा में झुकती है, न किसी मंच के लालच में अपने विचारों से समझौता करती है, न किसी प्रसिद्ध आलोचक की कृपा-दृष्टि की भूखी होती है, जो स्त्री अपने विचारों, मूल्यों और चरित्र के प्रति सजग और अडिग है — वह हिंदी साहित्य जगत के लिए अब भी एक खतरनाक उपस्थिति है। ऐसी स्त्री का अपने खुद के विवेक की स्वामिनी होना, उसका स्वतंत्र होना — उन्हें डराता है, चिढ़ाता है, असहज कर देता है। वे उसे 'अहंकारी', 'असंवेदनशील', 'कट्टर' और 'अति-बुद्धिजीवी' जैसे तमगों से नवाज़ने लगते हैं, ताकि उसे हाशिए पर धकेला जा सके। लेकिन उनका सारा उपहास, सारी आलोचना उस स्त्री के लिए एक तुच्छ शोर मात्र है, जो जानती है कि उसका युद्ध बाहर के नहीं, बल्कि भीतर के अंधकार के विरुद्ध है।

यह विरोधाभास देखिए — जिन्होंने स्त्रियों को यौनिकता के नाम पर 'आधुनिकता' का पाठ पढ़ाया, वही अपने घर की स्त्रियों के लिए अब भी वही 'पवित्रता', 'मर्यादा', और 'परंपरा' की कसौटी लगाते हैं। उनके लिए 'बोल्डनेस' केवल बाहर की दुनिया की स्त्रियों के लिए है। घर की औरतें अब भी पर्दे में रहनी चाहिए, चुप रहनी चाहिए, विनम्र रहनी चाहिए।

जो स्त्रियाँ अपनी स्वतंत्रता को अश्लीलता में, अपनी आधुनिकता को आत्मवंचना में, और अपनी साहसिकता को पितृसत्तात्मक छद्म समर्थन में बेच आती हैं — वह असल में किसी क्रांति का हिस्सा नहीं बनतीं, बल्कि उस पितृसत्तात्मक साहित्यिक व्यवस्था की नई चेरी बन जाती हैं।

कठोर सत्य यह है कि — ₹स्त्री की मुक्ति₹ भी आज एक ब्रांड बन चुकी है। जिसका सौदा होता है, मंचों पर प्रदर्शन होता है, पुरस्कारों में बाँटा जाता है।

वास्तव में स्वतंत्र चेतना वाली स्त्री का विद्रोह बहुत सधा हुआ और अदृश्य होता है। वह अश्लील भाषा में नहीं, नकारात्मकता में नहीं, अपमानजनक बोल्डनेस में नहीं — बल्कि विचार की गहराई में, मुद्दों के सटीक विश्लेषण में, और अपनी लेखनी की ईमानदारी में प्रकट होता है।

वह प्रेम पर लिखती है, तो उसमें करुणा की जटिलता को समझाती है। वह राजनीति पर लिखती है, तो सत्ता के मंथन में जनता की पीड़ा का चित्र खींचती है। वह धर्म पर लिखती है, तो अंधविश्वास और असहिष्णुता के जाल को तोड़ती है।

वह जानती है कि साहित्य का असली उद्देश्य सच्चाई का उद्घाटन है — न कि सत्ता, लालच और यौनिक बाज़ार के हाथों गिरवी बन जाना।

हिंदी साहित्य को अब यह स्वीकार करना होगा कि स्त्रियाँ केवल ₹सजावट₹ या ₹संवेदनशीलता₹ का प्रतीक नहीं हैं। वे अब सवाल भी पूछती हैं, विश्लेषण भी करती हैं, तोड़ती भी हैं और गढ़ती भी हैं। और सबसे महत्वपूर्ण — वे अब किसी के एजेंडे का मोहरा नहीं बनना चाहतीं।

वे अपनी सोच की, अपने कलम की, अपने भविष्य की स्वयं निर्माता बन चुकी हैं। यह बदलाव साहित्यिक समाज को जितनी जल्दी समझ आ जाए, उतना बेहतर होगा — वरना उनकी दुनिया में केवल कठपुतलियाँ नाचती रहेंगी, और स्वतंत्र चेतना वाली स्त्रियाँ इतिहास में अपने लिए नए रास्ते खुद बनाती रहेंगी।

"जब एक स्त्री अपनी आवाज़ उठाती है, तो वह केवल अपनी बात नहीं करती, वह पूरे समाज की चुप्पियों को चुनौती देती है।"

"पहलगाम में आतंकी हमला: राष्ट्र के साथ खड़े होने का समय"

प्रश्न पूछने के अवसर भी आएँगे, अभी राष्ट्र के साथ खड़े होने का समय है। राष्ट्र सर्वोपरि।

हाल की पहलगाम घटना में एक हिंदू पर्यटक को आतंकवादियों ने धार्मिक पहचान के आधार पर निशाना बनाया। यह घटना केवल एक हत्या नहीं, बल्कि भारत की आत्मा पर हमला है। आतंकवादियों का उद्देश्य कश्मीर को अस्थिर करना नहीं, बल्कि पूरे भारत में डर और नफरत का माहौल फैलाना है। ऐसे समय में हमें आलोचना से परे राष्ट्रहित में खड़ा होना चाहिए और एकजुटता दिखानी चाहिए। देश के मनोबल को गिरने से बचाना हमारी ज़िम्मेदारी है, और हमें सभी मतभेदों से ऊपर उठकर "राष्ट्र सर्वोपरि" की भावना के साथ खड़ा होना चाहिए।

-डॉ सत्यवान सौरभ

यह नारा उस समय और अधिक सार्थक हो उठता है जब एक निर्दोष पर्यटक, अपनी पत्नी के साथ छुट्टियां मनाने गया हो और आतंक की गोली का शिकार हो जाए। पहलगाम की ताज़ा घटना, जिसमें एक हिंदू युवक को टारगेट कर आतंकवादियों ने गोली मार दी, सिर्फ एक हत्या नहीं, बल्कि भारत की आत्मा पर हमला है। और ऐसे समय में यह कहना— "प्रश्न पूछने के अवसर भी आएँगे"—कोरी बचाव की भाषा नहीं, बल्कि राष्ट्रहित में संयम की पुकार है।

पहलगाम की घटना: घृणा का एकतरफा निशाना

जम्मू-कश्मीर का पहलगाम, जहां का प्राकृतिक सौंदर्य लोगों को आकर्षित करता है, अब आतंक का नया निशाना बन गया है। इस बार किसी सैनिक को नहीं, किसी पुलिसकर्मी को नहीं, बल्कि एक आम हिंदू नागरिक को निशाना बनाया गया—जो अपनी पत्नी के साथ पर्यटक बनकर वहां गया था। आतंकियों ने स्पष्ट धार्मिक पहचान देखकर हमला किया। यह हमला दो स्पष्ट संदेश देता है। पहला यह कि पाकिस्तान-समर्थित आतंकी अब भी भारत में धार्मिक विभाजन फैलाने पर आमादा हैं। दूसरा यह कि उनका उद्देश्य केवल कश्मीर को अस्थिर करना नहीं, बल्कि पूरे भारत में डर और नफ़रत का माहौल बनाना है।

पाकिस्तान: आतंक का पालक

इस हमले की जिम्मेदारी लेने वाले संगठनों की जड़ें पाकिस्तान की धरती में हैं। चाहे वो लश्कर-ए-तैयबा हो, या TRF जैसे नए नाम वाले पुराने चेहरे—इनकी फंडिंग, ट्रेनिंग और संरक्षण सब पाकिस्तान से आते हैं। ये आतंकवादी संगठन अब न सिर्फ कश्मीर को चोट पहुंचा रहे हैं, बल्कि पूरे भारत की धार्मिक एकता और पर्यटक स्थलों की शांति को भी लक्ष्य बना रहे हैं। जब भारत आक्रोशित होता है, तो यह आक्रोश केवल सैनिक कार्रवाई तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह आम भारतीय के भीतर भी जागता है—जो अपने देश के सम्मान और सुरक्षा को सर्वोपरि मानता है।

सवाल बनाम एकता: वक़्त का तकाज़ा

लेकिन इस समय कुछ लोग, खासकर बौद्धिक तबके के कुछ हिस्से और राजनीति के एक विशेष वर्ग से जुड़े लोग, इस घटना को "कश्मीर में असंतोष" कहकर आतंकियों को परोक्ष वैचारिक समर्थन देने लगते हैं। कुछ मीडिया संस्थान इसे एक सामान्य अपराध बताकर इसकी धार्मिक प्रकृति को छुपाने की कोशिश करते हैं। ये वही लोग हैं जो हर बार आतंक के हमलों को या तो साजिश बताकर नजरअंदाज करते हैं या फिर 'भूल जाओ, आगे बढ़ो' जैसे शब्दों में लपेट देते हैं। लेकिन इस बार मामला सिर्फ एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की चीख है, जिसे चुपचाप सह लेना नैतिक अपराध होगा।

प्रश्न पूछने का अधिकार, लेकिन पहले संयम जरूरी है

ऐसे में कुछ लोग कहेंगे, "प्रश्न पूछना तो लोकतंत्र का हक़ है!"—बिल्कुल है। लेकिन क्या यह हक़ इतना बेसब्र हो चुका है कि एक घायल पत्नी की आँखों में आँसू सूखने से पहले ही हम प्रेस कॉन्फ्रेंस की मांग करने लगें? क्या एक जवान की शहादत के शव को मिट्टी भी नसीब न हो और हम सड़कों पर 'क्यों हुआ?' के नारों में उलझ जाएं? सवाल पूछिए, ज़रूर पूछिए, लेकिन तब जब देश का मनोबल गिरा न हो, जब अपनों के आँसू थमे हों, जब धुआँ छँट जाए। अभी वक्त है एक स्वर में खड़े होने का, एकजुटता में जवाब देने का।

हमारी ज़िम्मेदारी: वीरता सिर्फ सीमा पर नहीं होती

यह समझना ज़रूरी है कि देशभक्ति केवल वर्दी में नहीं, विचार में भी होती है। जब कश्मीर में एक हिंदू नागरिक को सिर्फ इसलिए मारा जाए क्योंकि वह हिंदू है, और तब भी देश के भीतर कुछ लोग चुप रहें, या मुद्दे से ध्यान भटकाएं, तो यह नैतिक पराजय होती है। वह वीरता क्या काम की, जो बंदूक थामे बिना चुपचाप अत्याचार को सहन करे? क्या लेखकों, कलाकारों, विचारकों और नागरिकों की कोई ज़िम्मेदारी नहीं? क्या हम सिर्फ ट्रेंडिंग हैशटैग तक सीमित रह गए हैं?

सच्चाई को स्वीकार करना: धार्मिक टारगेटिंग का विरोध

इस घटना के बाद सबसे बड़ा कार्य है—सच्चाई को साफ-साफ स्वीकारना। धार्मिक टारगेटिंग हुई है और उसे इसी रूप में स्वीकार कर उसका विरोध करना चाहिए। सेकुलरिज्म का मतलब यह नहीं कि सच्चाई से आँखें फेर ली जाएं। सेकुलरिज्म की सच्ची परीक्षा तभी होती है जब आप पीड़ित की जाति या धर्म देखकर नहीं, उसके दर्द को देखकर खड़े होते हैं। भारत की आत्मा बहुलता में विश्वास करती है, लेकिन वह बहुलता तब तक ही जीवित है जब तक आप सच्चाई से भाग नहीं रहे।

समर्थन: हमारी ताकत है

सोशल मीडिया के इस दौर में झूठ फैलाना आसान है, लेकिन सच का साथ देना ज़्यादा ज़रूरी है। अफवाहों से ज़्यादा खतरनाक है—चुप्पी। हमें चाहिए कि हम तथ्य साझा करें, संवेदनशीलता के साथ। सरकार, सेना और सुरक्षाबलों का मनोबल सिर्फ हथियारों से नहीं, हमारे शब्दों और समर्थन से भी बढ़ता है। इस कठिन समय में यदि हम एक भी गलत संदेश दे बैठें, तो हम आतंकवादियों के हाथों में अप्रत्यक्ष रूप से हथियार सौंपते हैं।

एकजुटता का समय: पहलगाम की घटना और भारत का सवाल

इस घटना ने भारत के सामने एक बार फिर वही सवाल खड़ा कर दिया है—क्या हम एक हैं, या टुकड़ों में बंटे हुए हैं? जब पहलगाम में एक परिवार उजड़ता है, तो सिर्फ कश्मीर नहीं, पूरा देश घायल होता है। उस महिला की चीखें जो अपने पति की लाश के सामने बदहवास होकर रोती रही, वह केवल एक पत्नी का रोदन नहीं था, वह भारत माता की कराह थी। और इसका उत्तर हम केवल आँसू पोंछकर नहीं, एकजुट होकर दे सकते हैं।

संकल्प का समय: राष्ट्र सर्वोपरि

यह सही है कि हर घटना पर सरकार से जवाबदेही मांगी जानी चाहिए, लेकिन वह एक प्रक्रिया है, जो समय लेकर संस्थानों से पूरी होती है। लेकिन जनता का काम क्या है? सिर्फ सवाल करना? या फिर ज़रूरत पड़ने पर उस राष्ट्रध्वज के नीचे खड़े होना, जिसकी छाया में हम सांस लेते हैं? लोकतंत्र बहस का नाम है, लेकिन उस बहस की गरिमा तब ही रहती है जब वह उचित समय पर हो। संकट की घड़ी में बहस नहीं, भरोसा चाहिए। जब हम युद्ध में होते हैं, तब हम रणनीति पर चर्चा नहीं करते—हम योद्धाओं का साथ देते हैं।

एक आँसू, एक जवाब

इसलिए आज जरूरत है कि हम उस एक पर्यटक को एक प्रतीक मानें—उस भारत का प्रतीक, जो अपने परिवार के साथ छुट्टियाँ मनाने निकलता है, अपनी ज़िंदगी में विश्वास रखता है, और फिर अचानक एक आतंक की गोली से छिन जाता है। हमें यह याद रखना होगा कि अगर हम आज नहीं जागे, तो कल कोई और पहलगाम में मारा जाएगा, और तब भी हम यही कहेंगे— "बहुत अफ़सोस है।"

लेकिन अब समय अफ़सोस का नहीं, संकल्प का है। संकल्प इस बात का कि हम सच्चाई से डरेंगे नहीं। हम धर्म के नाम पर मारे गए किसी भी नागरिक के लिए एकजुट होंगे। हम आतंक के हर स्वरूप के खिलाफ एक स्वर में बोलेंगे। हम आलोचना करेंगे, लेकिन तब जब देश की आँखें नम न हों। हम सवाल उठाएंगे, लेकिन तब जब देश की आत्मा घायल न हो। पहलगाम में मारे गए युवक की पत्नी ने जो चीखें मारीं, वो सिर्फ एक परिवार का दर्द नहीं था—वो भारत की अस्मिता की पुकार थी। और उसका जवाब यह होना चाहिए कि देश एक है, सभी मतभेदों से ऊपर उठकर, एक स्वर में बोले: "राष्ट्र सर्वोपरि।"

प्रश्न पूछिए, पर तब जब धुआँ छँट जाए।

मजदूरों का भारत: शोषण के साए में खड़ा विकास

"जिन हाथों ने इस देश की इमारतें खड़ी कीं, उन्हीं हाथों को आज रोटी, छत और पहचान के लिए जूझना पड़ रहा है। दिहाड़ीदार मजदूर केवल श्रम नहीं देते, वे इस देश की नींव हैं — लेकिन सबसे उपेक्षित भी। विकास की रफ्तार में उनका पसीना झलकता है, पर उनकी आवाज़ नहीं सुनाई देती। क्या यही है 'नए भारत' का सपना — जहाँ श्रमिक अनदेखे, अनसुने और असुरक्षित रहें?"

डॉ. सत्यवान सौरभ

बदलते दौर में जब तकनीक, पूंजी और ग्लैमर की दुनिया भारत को चमकाता दिखता है, तब देश का एक बड़ा तबका ऐसा है जो उस चमक की नींव बनाता है लेकिन खुद अंधेरे में घुटता रहता है। यही तबका है — दिहाड़ीदार मजदूर। जिनकी बदौलत गगनचुंबी इमारतें खड़ी होती हैं, सड़कों पर रफ्तार दौड़ती है, और शहर सांस लेता है। परन्तु विडंबना यह है कि इन मजदूरों के जीवन में न तो स्थिरता है, न सुरक्षा, न पहचान और न ही संवेदनशीलता।

दिहाड़ीदार मजदूरों की दुर्दशा केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक उपेक्षा और संस्थागत असफलताओं की भी उपज है। कोविड-19 महामारी हो या हालिया शहरी आपदाएँ, सबसे पहला और सबसे गहरा आघात इसी वर्ग को झेलना पड़ा। रोज कमाने-खाने वाले इन श्रमिकों के लिए लॉकडाउन और आर्थिक मंदी जीवन-मरण का प्रश्न बन गई। सरकारी घोषणाओं में इनके नाम भले दर्ज हों, पर न आंकड़ों में इनका कोई भरोसेमंद रिकॉर्ड है, न योजनाओं के क्रियान्वयन में इनकी प्राथमिकता।

भारत का श्रमबल लगभग 500 मिलियन है, जिसमें से 90 प्रतिशत से अधिक श्रमिक अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत हैं। शहरी भारत की लगभग 72 प्रतिशत कार्यशक्ति दिहाड़ी श्रमिकों के रूप में काम कर रही है। यह ₹बैकएंड इंडिया₹, जिसे कोई नहीं देखता, ₹फ्रंटएंड इंडिया₹ की रफ्तार बनाए रखने के लिए दिन-रात खटता है। यह वर्ग न केवल भारत की, बल्कि सिंगापुर, दुबई और खाड़ी देशों की आधुनिकता की नींव भी है। लेकिन विडंबना है कि इन्हें कोई पहचान पत्र नहीं, कोई बीमा नहीं, कोई स्थायित्व नहीं — केवल मेहनत और उपेक्षा मिली है।

भारत में मजदूरों की लड़ाई कोई नई नहीं है। ब्रिटिश काल में बॉम्बे मिल मजदूर आंदोलन (गिरनी कामगार आंदोलन) से लेकर 1920 में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना तक, मेहनतकशों ने संगठित होकर अपने हक की आवाज़ बुलंद की। 1 मई को 'मजदूर दिवस' के रूप में मनाने की परंपरा भले शिकागो आंदोलन से शुरू हुई हो, लेकिन भारत के श्रमिकों ने भी समय-समय पर सत्ता को झकझोरने वाला संघर्ष किया है। परंतु दुखद यह है कि 21वीं सदी में भी उनके मुद्दे वैसे ही हैं — न्यूनतम वेतन, सुरक्षा, और गरिमा।

फैक्ट्रियाँ, होटल, रेस्टोरेंट, कंस्ट्रक्शन साइट्स, डिलीवरी सेवाएँ — सब इन पर निर्भर हैं। ओला-उबर ड्राइवर से लेकर राजमिस्त्री, बढ़ई, फूड डिलीवरी बॉय और प्लंबर तक — ये ही हैं जो शहरों को गतिशील बनाए रखते हैं। लेकिन जब सवाल उनके अधिकारों का आता है तो तंत्र मौन हो जाता है। इनके लिए न पर्याप्त जल-स्नान की व्यवस्था है, न सुरक्षित आवास, न शुद्ध पेयजल, न स्वास्थ्य सेवाएँ। हाथ धोने की सलाह दी जाती है, पर इनके लिए हैंडपंप भी अविश्वसनीय होते हैं। बीमार हों तो अस्पताल की कतार में कोई नाम नहीं, बैंक हो तो खाता नहीं, और श्रम हो तो मान्यता नहीं। संक्रमण, अस्वास्थ्यकर माहौल और मानसिक शोषण की तीनहरी मार इन पर हर रोज़ पड़ती है।

इन मेहनतकशों में बड़ी संख्या महिला श्रमिकों की है — निर्माण स्थलों पर ईंट ढोती, घरों में बर्तन माँजती, खेतों में पसीना बहाती, और फिर घर लौटकर चूल्हा-चौका भी संभालतीं। इनके पास न मातृत्व अवकाश है, न यौन उत्पीड़न से सुरक्षा, न ही समान वेतन की गारंटी। सबसे दुखद यह है कि महिला मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में अक्सर 'अदृश्य' मान लिया जाता है।

कोविड-19 महामारी के दौरान जब शहरों में लॉकडाउन लगा, तब सड़कों पर नंगे पांव, भूखे-प्यासे हजारों किलोमीटर पैदल लौटते प्रवासी मजदूरों की तस्वीरें पूरे देश को झकझोर गईं। जिन हाथों ने शहर बनाए, वे ही सबसे बेगाने हो गए। सरकारें एक-दूसरे पर जिम्मेदारी डालती रहीं, और ये मजदूर अपने गाँवों की ओर लौटते हुए ट्रेन की पटरी तक पर जान गंवाते रहे।

ऐसी स्थिति में सवाल उठता है — इनकी दुर्दशा का जिम्मेदार कौन? सरकारें जो केवल चुनावी मौसम में इन्हें याद करती हैं? समाज जो केवल इनके श्रम का उपयोग करता है पर इंसान नहीं समझता? या वह नीति-तंत्र जो अभी भी इन्हें "अस्थायी" मानता है, जबकि पूरा शहरी भारत इन्हीं के श्रम पर टिका है? हमारे शहर यदि किसी की हड्डियों पर खड़े हैं, तो क्या उनका हक़ सिर्फ पसीना बहाना है? क्या देश के विकास का मतलब सिर्फ ऊँची इमारतें हैं, या उन इमारतों को खड़ा करने वाले हाथों की खुशहाली भी?

हमें नीतिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर क्रांति की आवश्यकता है। सबसे पहले, इनके पंजीकरण की व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिए — ₹ई-श्रम पोर्टल₹ जैसी पहल को व्यापक और स्थानीय स्तर पर पहुँचाना होगा। साथ ही, "असंगठित कामगार सूचकांक नंबर कार्ड" को हर मजदूर तक पहुँचाना सरकार की प्राथमिकता बननी चाहिए। यह न केवल उन्हें एक पहचान देगा बल्कि सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ने का जरिया भी बनेगा।

सामाजिक सुरक्षा कोष में तेजी लाना अब विलंब नहीं सह सकता। हर मजदूर को स्वास्थ्य बीमा, न्यूनतम वेतन की गारंटी, और आकस्मिक परिस्थितियों में राहत मिलनी ही चाहिए। स्मार्ट शहर की परिभाषा तब तक अधूरी है जब तक वह अपने सबसे असुरक्षित श्रमिक को गरिमा नहीं दे पाता। स्थानीय निकायों, पंचायतों और नगरपालिकाओं को भी चाहिए कि वे इन दिहाड़ीदारों को उनके कौशल के अनुसार रोज़गार से जोड़ने का काम करें। एक ₹श्रम सहायता केंद्र₹ हर नगर में हो, जो जानकारी, परामर्श, और सहायता का केंद्र बने।

भारत से सिंगापुर, कतर और दुबई जैसे देशों में गए मजदूरों की मेहनत वहाँ की इमारतों की पहचान बनी। लेकिन वहाँ भी उनके लिए बुनियादी सुविधाओं की कमी, और यहाँ अपने देश में तो वे 'कमजोर तबका' कहलाते हुए पूरी तरह उपेक्षित हैं। विकासशील देश के नागरिकों को अपने ही देश में 'दूसरे दर्जे' का नागरिक बनाना कैसी विडंबना है?

गुरुग्राम के निर्माण स्थल पर काम करने वाले रामनाथ प्रतिदिन 12 घंटे ईंट-बजरी उठाते हैं। वे और उनकी पत्नी दोनों मजदूरी करते हैं, फिर भी बच्चों की स्कूल फीस देने में असमर्थ हैं। "हमने शहर को बनाया है, लेकिन शहर में रहने का हक़ हमारा नहीं," वे कहते हैं। रामनाथ कोई अपवाद नहीं, बल्कि भारत के करोड़ों मजदूरों की प्रतिनिधि आवाज़ हैं।

आज जब हम मजदूर दिवस मना रहे हैं, तब यह केवल प्रतीकात्मक नहीं होना चाहिए। यह दिन हमें यह सोचने पर विवश करे कि क्या हम वाकई अपने निर्माणकर्ताओं को वह सम्मान, वह सुरक्षा और वह जीवन दे पा रहे हैं, जिसके वे हक़दार हैं? यदि नहीं, तो इस देश के विकास की इमारत खंडहर में बदलने में समय नहीं लगेगा।

शहर की रफ्तार में जो साँसें लगी हैं,
वो थकती हैं पर रुकती नहीं हैं।
जिनके पसीने से सीमेंट सने हैं,
वही सबसे अनसुने हैं।
अब समय है कि हम केवल दीवारें न खड़ी करें,
बल्कि उन हाथों को पहचान दें जो उन्हें खड़ा करते हैं।

आयुष्मान भारत योजना दिवस 30 अप्रैल 2025-स्वस्थ शुरुआत आशापूर्ण भविष्य

भारत में निम्न आय वर्ग को सस्ती स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए सरकार द्वारा आयुष्मान भारत योजना बेहतरीन पहल- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर कोविड -19 महामारी के बाद स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्तता, अनिवार्यता व विशेषता का पता चला है,कि इसके बिना किस तरह लाखों लोगों की मौत हो सकती है, इस महामारी ने पूरी दुनियाँ को हिला डाला था,पूर्ण विकसित देशों में तो शायद सबसे अधिक मौतें हुई थी, इसलिए आज हर देश स्वास्थ्य सेवाओं व वैज्ञानिक तकनीक के महत्व पर बल देता है व मध्यम गरीब व निम्न आय वर्ग वालों की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए अनेक योजनाएं भी अक्सर अनेक देशों में लागू की जा रही है।इन दिनों हम लोग जिस तरह की जीवनशैली जी रहे हैं, उसे देखकर ऐसा कहा जाए कि बीमारियां पैसे देखकर नहीं आती है, तो गलत नहीं होगा।प्रदूषण, खानपान, खाने में एडल्ट्रेशन का इस्तेमाल और फिजिकल वर्क आउट की कमी के कारण बीमारियां लोगों को कम उम्र में ही घेर लेती हैं।बीमारी किसी भी कारण से शरीर में आए, लेकिन जब बात इलाज की आती है, तो जेब खंगालनी ही पड़ती है। भारत जैसे विकासशील देशों में आज भी हर साल हजारों लोगों की मौत सिर्फ पैसों के कारण इलाज न मिलने की वजह से हो रही है।देश के सभी वर्गों को इलाज मिल सके, इसके लिए भारत सरकार द्वारा 2018 में आयुष्मान भारत योजना का शुभारंभ किया गया था। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि दिनांक 30 अप्रैल 2025 को आयुष्मान भारत योजना दिवस के रूप में प्रतिवर्ष मनाया जाता है जिसमें वर्ष 2025 की थीम स्वास्थ्य शुरुआत आशापूर्ण भविष्य रखी गई है।चूँकि भारत में निम्न आय वर्ग को सस्ती स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए सरकार द्वारा आयुष्मान भारत योजना एक बेहतरीन पहल है व आयुष्मान योजना का उद्देश्य 50 करोड़ से अधिक नागरिकों कोगुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच प्रदान करके सुरक्षा प्रदान करना है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, आयुष्मान भारत योजना दिवस 30 अप्रैल 2025, स्वस्थ शुरुआत आशापूर्ण भविष्य।

साथियों बात अगर हम आयुष्मान भारत योजना को जानने की करें तो,आयुष्मान भारत दिवस आयुष्मान भारत योजना के आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए मनाया जाता है।यह योजना भारत सरकार के उन उद्देश्यों की पूर्ति को दर्शाती है जो संयुक्त राष्ट्र के तहत सतत विकास लक्ष्यों के साथ संरेखित हैं।भारत की मोदी सरकार ने लोगों को स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच बनाने के लिए इसी उद्देश्य से इस योजना को शुरू किया है ताकि भारत की बड़ी आबादी को बेहतर स्वास्थ्य और उपचार मिल सके। इसमें गरीबी रेखा से नीचे की आबादी शामिल है जो आवश्यक स्वास्थ्य सुविधाओं का खर्च उठाने में असमर्थ हैं और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ भी प्राप्त कर सकते हैं। आयुष्मान भारत दिवस आयुष्मान भारत योजना के इर्द-गिर्द घूमता है, इस दिन का मुख्य उद्देश्य भारत की एक बड़ी आबादी को स्वास्थ्य सेवा लाभ प्रदान करना है जो अपने लिए आवश्यक चिकित्सा सुविधाओं का खर्च नहीं उठा सकते हैं। आयुष्मान भारत से संबंधित अधिकारी हमारे देश के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए मैन्युअल रूप से विभिन्न योजनाओं और पहलों को लॉन्च करते हैं। यह दिन आयुष्मान भारत योजना के आदर्शों को बढ़ावा देता है।यह योजना भारत सरकार के उन उद्देश्यों की पूर्ति को दर्शाती है जो संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के तहत सतत विकास लक्ष्यों के साथ संरेखित हैं। सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के संबंध में संयुक्त राष्ट्र का मुख्य लक्ष्य किसी को भी पीछे नहीं छोड़ना है।

साथियों बात अगर हमआयुष्मान भारत योजना में 70 से अधिक बीमारियों का इलाज फ्री में करने की करें तो, केंद्र सरकार की इस योजना में आयुष्मान भारत योजना के तहत, लाभार्थी अस्पताल में भर्ती होने, डेकेयर प्रक्रियाओं और सर्जरी जैसी विभिन्न चिकित्सा सुविधाओं का लाभ बिना पैसे खर्च किए उठा सकते हैं। इस योजना में पहले से मौजूद बीमारियां और गंभीर बीमारियां भी शामिल हैं।सरकार द्वारा जारी किए डाटा के अनुसार आयुष्मान योजना में 1393 परिभाषित पैकेज, एक संभावित सर्जिकल पैकेज और 24 विशेषज्ञ क्षेत्र शामिल हैं।, इस योजना में कैंसर, हार्ट डिजीज, किडनी से जुड़ी बीमारियां, कोरोना, मोतियाबिंद, डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया, घुटना और नी रिप्लेसमेंट, जलने से चोट लगना, नवजात शिशु को हुए रोग, जन्मजात विकार, मोतियाबिंद, सर्जिकल डिलीवरी, और मलेरिया समेत बीमारियों का इलाज सरकार अस्पतालों में किया जा सकता है।इनबीमारियों के अलावा डबल वाल्वरिप्लेसमेंट पीडियाट्रिक सर्जरी, प्रोस्टेट कैंसर, कोरोनरी आर्टरी बाईपास, पल्मोनरी वाल्व रिप्लेसमेंट, नी और हिप रिप्लेसमेंट, स्कल बेस सर्जरी, टिश्यू एक्सपेंडर, रेडिएशन ओंकोलॉजी, न्यूरो सर्जरी, एंजियोप्लास्टी जैसे सर्जरी को भी आयुष्मान भारत योजना में शामिल किया गया है।

साथियों बात अगर हम दिल्ली में दिनांक 28 अप्रैल 2025 को उपरोक्त योजना की तर्ज पर आयुष्मान वय वंदन योजना की शुरुआत की करें तो, जिसके तहत राष्ट्रीय राजधानी के 70 वर्ष या उससे ज्यादा की आयु के नागरिकों को 10 लाख रुपये तक का फ्री इलाज की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। दिल्ली की सीएम और केंद्रीय मंत्री ने राष्ट्रीय राजधानी में एक कार्यक्रम में लाभार्थियों को पहला वय वंदना कार्ड वितरित किया। इस योजना के तहत सालाना पांच लाख रुपये की चिकित्सा सहायता निःशुल्क ऑफर की जाएगी। इस कार्ड में उनका पूरा हेल्थ रिकॉर्ड, नियमित स्वास्थ्य जांच की जानकारी और आपातकालीन सेवा का विवरण सुरक्षित रूप से स्टोरेज किया जाएगा। बता दें कि इस योजना से दिल्ली में करीब 36 लाख लोगों को लाभ मिलने की उम्मीद है।योजना दो कैटेगिरी (शहरी और ग्रामीण लाभार्थी) के लाभार्थियों को कवर करती है। राजधानी दिल्ली के 6.54 लाख गरीब परिवारों के करीब 30 लाख लोगों और 70 वर्ष से अधिक उम्र के करीब छह लाख बुजुर्गों, आशा वर्कर, आगंनबाड़ी कार्यकर्ताओं को इसका फायदा मिलेगा।इस योजना के तहत दिल्ली में 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के नागरिकों के लिए सभी स्वास्थ्य परीक्षण पूरी तरह से निःशुल्क किए जाएंगे।सीएम ने इससे पहले एक्सः पर पोस्ट किया था, बुजुर्गों की सेवा करना हमारी सर्वोच्चप्राथमिकता है। अब, केंद्र और दिल्ली सरकारें मिलकर 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को 10 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य कवरेज प्रदान कर रही हैं। अपने प्रियजनों के स्वास्थ्य को सुरक्षित करें। आज ही 'आयुष्मान वय वंदना' कार्ड प्राप्त करें।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि आयुष्मान भारत योजना दिवस 30 अप्रैल 2025-स्वस्थ शुरुआत आशापूर्ण भविष्य।आयुष्मान भारत योजना का उद्देश्य 50 करोड़ से अधिक नागरिकों को गुणवत्तता पूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच प्रदान करके सुरक्षा प्रदान करना है।भारत में निम्न आय वर्ग को सस्ती स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने के लिए सरकार द्वारा आयुष्मान भारत योजना बेहतरीन पहल।

शतकवीर हुए वैभव

बिहार के समस्तीपुर का युवा किशोर,
चौको व छक्कों से खूब मचाया शोर।
5 साल की ट्रेनिंग का था ये परिणाम,
राजस्थान रॉयल्स के खूब आया काम।
17 में पचास और 35 में बना दिए सौ,
पिता के ख़्वाबों को पंख लगाएँ देखों।

बिहार के समस्तीपुर का युवा किशोर,
चौको व छक्कों से खूब मचाया शोर।
14 साल की उम्र में जड़ दिया शतक,
धुरंधरों की गेंदें सीमा पार दिया पटक।
वे दुनिया के सबसे युवा बल्लेबाज बनें,
आईपीएल डेब्यू कर रहें खिलाड़ी बने।

बिहार के समस्तीपुर का युवा किशोर,
चौको व छक्कों से खूब मचाया शोर।
पहली गेंद पे शार्दुल ठाकुर का सामना,
छक्का लगाकर बता ही दिया दम हैं ना।
पिता ने क्रिकेट के लिए जमीन बेच दी,
बेटे वैभव ने करियर की ज़मीं सींच दी।

बिहार के समस्तीपुर का युवा किशोर,
चौको व छक्कों से खूब मचाया शोर।
परिवार काफी संघर्षों से गुजरना पड़ा,
उम्र पर भी सवाल उठे वो अडिग खड़ा।
उसने 7 चौके और 11 छक्के लगा दिए,
टीम, अभिभावकों के नाम रोशन किए।

संजय एम तराणेकर

डिजिटल मृत्यु और विरासत: एक अनदेखा लेकिन जरूरी सच

जब हमारी साँसें इस दुनिया से विदा लेंगी, तब हमारा भौतिक शरीर तो मिट्टी में मिल जाएगा, लेकिन हमारी डिजिटल आत्मा—हमारे सोशल मीडिया अकाउंट्स, ईमेल, तस्वीरें, और इंटरनेट पर बिखरे अनगिनत निशान—चुपचाप आभासी दुनिया में तैरते रहेंगे। ये निशान हमारी हँसी, हमारे आँसुओं, हमारे सपनों, और हमारी कहानियों के टुकड़े हैं। लेकिन क्या होगा जब हम खुद इन डिजिटल अवशेषों की रक्षा करने के लिए नहीं होंगे? क्या हमारी पहचान इंटरनेट के अंधेरे गलियारों में भटकने के लिए छोड़ दी जाएगी, या हम इसे एक ऐसी विरासत बनाएंगे जो समय को मात दे? यह सवाल सिर्फ तकनीक का नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारी, हमारे सम्मान, और हमारी अमर कहानी का है।

आज का इंसान एक अनोखी उलझन में फँसा है। एक तरफ वह अपने हर पल को डिजिटल कैनवास पर उकेर रहा है—इंस्टाग्राम की चमकती कहानियों में, ट्विटर के छोटे-छोटे विचारों में, व्हाट्सएप की अंतहीन चैट्स में, और यूट्यूब की जीवंत यादों में। हर लाइक, हर कमेंट, हर शेयर हमारे अस्तित्व का एक रंग है। लेकिन दूसरी तरफ, हम इस डिजिटल कैनवास के भविष्य को लेकर उदासीन हैं। हम अपनी संपत्ति, अपने घर, और अपने परिवार के लिए वसीयत बनाते हैं, लेकिन अपने डिजिटल जीवन को अनाथ छोड़ देते हैं। यह विडंबना हमें एक कठोर सत्य से रू-ब-रू कराती है—हम अपने पूरे अस्तित्व की जिम्मेदारी नहीं ले रहे। क्या हम चाहेंगे कि हमारे जाने के बाद हमारी डिजिटल कहानी बिखर जाए, या हम उसे एक सुंदर, सुव्यवस्थित धरोहर बनाएंगे?

डिजिटल विरासत कोई मामूली चीज़ नहीं। यह सिर्फ कुछ तस्वीरें, वीडियो, या पासवर्ड नहीं। यह आपकी पहचान का वह अनमोल हिस्सा है जिसमें आपके विचार, आपकी भावनाएँ, आपके रिश्ते, और आपके सपने बुने हुए हैं। अगर यह सब आपकी अनुपस्थिति में असंगठित और अनदेखा छोड़ दिया जाए, तो यह न केवल आपकी गोपनीयता के लिए खतरा है, बल्कि आपके प्रियजनों के लिए भी एक अनचाहा बोझ। कल्पना करें—आपके परिवार वाले आपके फेसबुक अकाउंट को बंद करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन पासवर्ड का पता नहीं। आपके अकाउंट पर हर साल जन्मदिन की शुभकामनाएँ आती हैं, अनजान लोग मैसेज भेजते हैं, और हर नोटिफिकेशन आपके जाने की टीस को फिर से जगा देता है। यह दृश्य सिर्फ दुखद नहीं, बल्कि पूरी तरह टाला जा सकता है।

यही वह क्षण है जब हमें अपनी डिजिटल विरासत को गंभीरता से लेना होगा। हमें यह तय करना होगा कि हम कौन-सी यादें संजोना चाहते हैं, कौन-सी मिटाना चाहते हैं, और कौन-सी अपने उत्तराधिकारियों को सौंपना चाहते हैं। यह केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक भावनात्मक और नैतिक कर्तव्य है। आज कई टेक दिग्गज इस दिशा में कदम उठा रहे हैं। फेसबुक आपको लिगेसी कॉन्टैक्ट (Legacy Contact) चुनने की सुविधा देता है, ताकि आप तय कर सकें कि आपके अकाउंट का भविष्य क्या होगा। गूगल का इनएक्टिव अकाउंट मैनेजर (Inactive Account Manager) आपको यह अधिकार देता है कि आपके डेटा को निष्क्रिय होने पर मिटा दिया जाए या किसी भरोसेमंद व्यक्ति को सौंप दिया जाए। लेकिन सच्चाई यह है कि इन सुविधाओं का उपयोग करने वालों की संख्या बेहद कम है। क्यों? क्योंकि हमारे समाज में मृत्यु पर बात करना अभी भी एक असहज विषय है, और डिजिटल मृत्यु की योजना बनाना तो और भी अनसुना।

लेकिन क्या मृत्यु से मुँह मोड़ने से वह रुक जाएगी? नहीं। मृत्यु एक अटल सत्य है, और उसका स्वागत तैयारी के साथ करना ही समझदारी है। हमें अपने डिजिटल जीवन के लिए वही सावधानी और स्नेह दिखाना होगा, जो हम अपनी भौतिक संपत्तियों के लिए दिखाते हैं। एक डिजिटल वसीयत बनाना अब विलासिता नहीं, बल्कि अनिवार्यता है। इसमें आपके सभी महत्वपूर्ण अकाउंट्स की सूची, उनके लॉगिन विवरण, और यह निर्देश होना चाहिए कि आपके डेटा का क्या किया जाए। यह जानकारी किसी ऐसे व्यक्ति को सौंपें जिस पर आप आँख मूँदकर भरोसा करते हों। और सबसे जरूरी—इसे समय-समय पर अपडेट करते रहें। यह छोटा-सा कदम आपके वर्षों की मेहनत, आपकी यादों, और आपकी पहचान को इंटरनेट के अराजक समुद्र में डूबने से बचा सकता है।

यह जिम्मेदारी सिर्फ आपके लिए नहीं, बल्कि आपके प्रियजनों के लिए भी है। जब आप इस दुनिया से विदा लेंगे, तो आपके पीछे एक सुव्यवस्थित, सम्मानजनक डिजिटल इतिहास छूटना चाहिए, न कि उलझनों का जाल। आपके डिजिटल निशान आपकी कहानी का हिस्सा हैं—वे आपके बच्चों, आपके परिवार, और आपकी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अनमोल धरोहर हो सकते हैं। लेकिन अगर इन्हें अनदेखा छोड़ दिया जाए, तो ये साइबर अपराधियों के लिए आसान शिकार बन सकते हैं। हाल के आँकड़े बताते हैं कि मृत व्यक्तियों के सोशल मीडिया अकाउंट्स को हैक करने या उनकी पहचान चुराने की घटनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं। यह एक ऐसी वास्तविकता है जिसे अब अनदेखा करना मूर्खता होगी।

डिजिटल विरासत को संजोना केवल पासवर्ड मैनेजर में जानकारी स्टोर करने या अकाउंट सेटिंग्स बदलने की बात नहीं। यह एक गहरी, भावनात्मक प्रक्रिया है। यह तय करना कि आपकी कौन-सी डिजिटल यादें आपके प्रियजनों के लिए कीमती होंगी, और कौन-सी नहीं, एक आत्ममंथन की माँग करता है। शायद आप चाहेंगे कि आपके बच्चे आपके पुराने ब्लॉग पढ़ें, जिनमें आपने अपने जीवन के सबक लिखे थे। शायद आप चाहेंगे कि आपके परिवार को आपके गूगल ड्राइव में स्टोर की गई पारिवारिक तस्वीरें मिलें। या शायद आप चाहेंगे कि आपके कुछ निजी मैसेज हमेशा के लिए मिटा दिए जाएँ। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो आपको अपने जीवन को नए सिरे से देखने का मौका देती है—यह तय करने का मौका कि आपकी कहानी का कौन-सा हिस्सा अमर रहना चाहिए।

आज का एक छोटा-सा निर्णय कल की अनगिनत मुश्किलों को हल कर सकता है। अपनी डिजिटल छवि को एक ऐसी विरासत में बदलें जो समय की धूल से बची रहे—न कि एक अधूरी, बिखरी हुई कहानी बन जाए। क्योंकि एक दिन, जब हमारी साँसें इस संसार से विदा लेंगी, तब केवल हमारी लिखी हुई कहानियाँ, हमारे छोड़े हुए निशान, और हमारे द्वारा गढ़ी गई यादें ही बाकी रहेंगी। यह हम पर निर्भर है कि वे यादें गरिमामयी, सुव्यवस्थित, और प्रेरणादायक हों—या फिर अव्यवस्था और अफसोस का सबब बनें। अपनी डिजिटल आत्मा को संजोएं, उसे सम्मान दें—आज से, अभी से। क्योंकि आपकी विरासत सिर्फ संपत्ति की नहीं, बल्कि आपकी अमर डिजिटल कहानी की भी है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत जैन", बड़वानी

सरायकेला में शदियों बाद अक्षय तृतीया पर नये रथ का निर्माण शुभारंभ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला, अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर जगन्नाथ मंदिर सरायकेला में आयोजित भव्य कार्यक्रम में एक नये रथ निर्माण का श्री गणेश हुआ। मंदिर गर्भ गृह में विधिवत पूजा अर्चना के साथ कर्ता के रूप में जगन्नाथ सेवा समिति अध्यक्ष सिद्धार्थ शंकर सिंहदेव ने चतुर्धा मूर्ति से आज्ञा ले कर उड़ीसा से आए बढाई कारिगरों द्वारा निर्माण कार्य शुरू कराया गया। इस अवसर पर सरायकेला के विधायक सह पूर्व मुख्यमंत्री झारखंड चंपाई सोरेन अपने पुत्र समेत मौजूद थे।

आज पवित्र अक्षय तृतीया तिथि के दिन जगन्नाथ धाम पुरी से लेकर देश के अनेकों स्थानों में नए रथ का निर्माण कार्य विधिवत आरंभ होता है।कारण इस तिथी को जगन्नाथ महात्म में लिखा गया - ₹वैशाखमासस्यमले पक्षे तृतिया पापनाशिनी,स्वयमाविष्कृता चैषा प्राजापत्यक्षसंयुक्ता₹ है।यानी वैसाख मास रोहिणी नक्षत्रयुक्त शुक्लपक्ष तृतीया तिथी सर्व पाप नाशिनी एवं स्वयं आविष्कृता मानी जाती है यानी दैविय तिथी है। इसी तिथी विशेष रथ आरंभ आयोजन सर्वत्र होता है।

इस बार आज ही के दिन सरायकेला में 8 पहिए वाली एक नये रथ का निर्माण शदियों बाद आरंभ हो गया है। जगन्नाथ मंदिर के गर्भ ग्रह में नियमानुसार पूजा पाठ सह उनका इजाजत लेकर इस कार्य की शुभारंभ की गयी।जहां पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन आकर यहां जगन्नाथ दर्शन की तथा नये रथ निर्माण हतु आये बढ़ाई कारीगरों को अंगवस्त्र देकर कुशल क्षेम पूछा।

उड़ीसा के सूर्य क्षेत्र कोणार्क के निकट से आये बढ़ाई कारियों द्वारा करीब बीस लाख रूपये में इस आठ पहिए वाली रथ का निर्माण अगले आषाढ़ माह शुक्ल द्वितीया तिथी यानी 13 जून के पहले तक कर लिया जायेगा।

इस रथ हेतु प्रस्तावित धनराशि को सरायकेला के विधायक रहे चंपाई सोरेन द्वारा दी जा रही है जो उपेक्षित ओडिशा समुदाय के लिए ही नहीं वल्कि हर कौम, बिरादरी में चर्चे का विषय बना हुआ है।

आजके इस धार्मिक उत्सव अवसर पर पूजक गणों श्री ब्रम्हानंद महापात्र, सानु आचार्य, ओडिशा के तीन पूजक (मां मंगल चंडी आराध्य कारीगर), राजा सिंहदेव ,सुदीप पट्टनायक,सानंद आचार्य, राजेश मिश्रा, लिपु मोहान्ती, पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई के पुत्र, शंकर सत्पथी, चित्रा पट्टनायक, रिता दुवे, चंद्रशेखर कर, काशी कर, कोल्हू महापात्र, गोलोक पति, प्रसु कवि भागिरथी व दासरथी परिच्छा, संकिर्तन मंडली, सुमित महापात्र आदि सैकड़ों की संख्या में पुरुष, महिला व बच्चे उपस्थित थे। जिन्हें खीर - खिचडी अन्न प्रसाद भी दिया गया।

कांग्रेस राज्य स्तरीय अक्षुण्णि के पक्ष पलित किया

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: पवित्र अक्षय वृहद के अवसर पर ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर जिला कांग्रेस कमेटी एवं जिला किसान कांग्रेस के संयुक्त सहयोग से आज राज्य के सभी जिलों में पारंपरिक तरीके से खेतों में अखुमुथी का रोपण किया गया। इसी तरह, ओडिशा प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री भक्त चरण दास ने खोरधा जिले के भुवनेश्वर ब्लॉक के अंतर्गत टिकरपाड़ा ग्राम पंचायत के कल्याणपुर में भुवनेश्वर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष विश्वजीत दाश के संरक्षण में आयोजित राज्य स्तरीय अक्षिमुथि अनुकूल उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और मैदान में पारंपरिक अनुष्ठान करके अक्षिमुथि अनुकूल का उद्घाटन किया।अपने संबोधन में कांग्रेस विधायक दल के नेता रामचंद्र कदम, पूर्व पीसीसी अध्यक्ष निरंजन पटनायक, भुवनेश्वर जिला कांग्रेस अध्यक्ष विश्वजीत दाश, ओडिशा प्रदेश किसान कांग्रेस के अध्यक्ष अमिय कुमार पटनायक, पूर्व मंत्री सुरेश कुमार राउतराय, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव ओडिशा और प्रभारी श्री सहनवाज चौधरी, एकराम विधायक दल के उम्मीदवार प्रशांत चंपति प्रमुख वक्ताओं में शामिल थे। उन्होंने अक्षय तृतीया के महत्व तथा कृषक समुदाय की उन्नति के लिए कांग्रेस पार्टी द्वारा पूर्व में उठाए गए कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला तथा मांग की कि राज्य सरकार किसानों की बुनियादी समस्याओं का तत्काल समाधान करे।

हम मुसीबत के समय किसानों तक पहुंचेंगे, खेती शुरू करने से लेकर फसल की बिक्री तक सभी सुविधाएं मुहैया कराएंगे: मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण माझी पवित्र अक्षय त्रुतिया के अवसर पर बरमूडा ओयूएटी फार्म, भुवनेश्वर में आयोजित राज्य स्तरीय किसान दिवस समारोह में बोल रहे थे।इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने राज्य के 50,16,938 लघु एवं सीमांत किसानों, 49,482 भूमिहीन कृषक परिवारों और 2,382 जनजातीय कृषक परिवारों को 2025 खरीफ फसल सीजन के लिए सीएम किसान योजना के तहत 1025 करोड़ रुपये की सहायता प्रदान की है। कुल 5.1 मिलियन किसानों को यह सहायता प्राप्त हुई। इसमें पहली बार 25,532 शहरी किसान भी शामिल हैं। मुख्यमंत्री ने आशा व्यक्त की कि अग्रिम सहायता उपलब्ध कराए जाने से इस राशि से राज्य के किसान भाइयों को उनके कृषि कार्य में सहायता मिलेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आजादी के समय हम अपने देश के लगभग 33 करोड़ लोगों को भोजन उपलब्ध नहीं करा पाए थे। हालाँकि, आज हमारा देश न केवल खाद्यान्न एवं अन्य खाद्य उत्पादों के उत्पादन में आत्मनिर्भर है, बल्कि कृषि उत्पादों का निर्यात भी कर रहा है। भारत वर्तमान में कृषि एवं संबद्ध कृषि उत्पादों के निर्यात में अग्रणी देश है। वर्ष 2014 में यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कार्यभार संभालने के बाद देश में कृषि एवं किसान कल्याण ने नया रूप धारण कर लिया है। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, कृषि बुनियादी ढांचे के विकास आदि क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई है।

आतंकी फार्मूले को धरातल पर उतारने मे मास्टरमाइंड निकली झारखंड की शबनम

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, पहलगांव घटना के बाद देश भर में आतंकी गतिविधियों पर जांच एजेंसियों का जैसा नजर अब पड़ा है ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था, फिर भी यह कम है झारखंड के लिए।चाहे अवैध रूप से रह रहे लोग हों या संदिग्ध गतिविधियों धारी पुरूष,महिला या अवैध कारोबारी।अब धन्यवाद से गिरफ्तार किए गए आतंकी संगठन हिज्ब उत तहरीर से जुड़े संदिग्धों के मामले में झारखंड जांच एजेंसी एटीएस ने जांच अब अधिक तेज कर दी है। जांच में एटीएस को पता चला है कि आयान जावेद को गिरफ्तारी से दो दिन पहले ही पिस्टल मिली थी,जिसे एटीएस ने जब्त किया था। इस पर यूएसए मेड लिखा है। इसके साथ ही खुलासा हुआ है कि झारखंड में शवनम हिज्ब उत तहरीर के झारखंड मॉड्यूल की मास्टरमाइंड है।एटीएस यह जांच कर रही है कि हथियार विदेश से मंगवाया गया है या फिर भारत में ही बना है। प्रारंभिक जांच में हथियार के विदेशी होने की बात सामने आयी है। इसके अलावा जांच में यह भी जानकारी मिली है कि हिज्ब उत तहरीर मॉड्यूल का संचालन शबनम करती थी। बता दें कि एटीएस ने बीते शनिवार को धनबाद के वासेपुर अलीनगर से २१ वर्षीय गुलफाम हसन, भूली के आजाद नगर से २१ वर्षीय आयान जावेद, शमशेर नगर से आयान की पत्नी शबनम परवीन और २० वर्षीय मोहम्मद शहजाद आलम को गिरफ्तार किया था।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023